

अंतरराष्ट्रीय
हिंदी पाठ्यक्रम

पाठ्य सामग्री
CONTENT BOOK

स्तर 04

हिंदी का पल्लवन

Level 04 - Hindi for the Advanced Learner

संपादक - संतोष चौधे

हिंदी सीखना और सिखाना है, विश्व में हिंदी की पहचान बनाना है।

Hindi Seekhna Aur Sikhana Hai, Vishwa Main Hindi ki Pehchan Banana Hai

विश्वरंग फाउंडेशन भारत एवं अंतरराष्ट्रीय हिंदी केंद्र, रबींद्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय भोपाल (म.प्र.) भारत

पाठ्य सामग्री

स्तर – 4 : हिंदी का पल्लवन

Hindi for the Advanced Learner



संपादक : संतोष चौबे



ISBN : 978-93-88846-18-9

स्तर – 4 : हिंदी का पल्लवन

संपादक : संतोष चौबे

लेखक : डॉ. गायत्री राजपूत एवं डॉ. मधुप्रिया

मार्गदर्शन : डॉ. अदिति चतुर्वेदी वत्स

समन्वय : डॉ. पुष्पा असिवाल, डॉ. जवाहर कर्नावट, संजय सिंह राठौर, दिनेश लोहानी एवं आशीष नेमा

अकादमिक सहयोग : डॉ. अरुण कुमार पाण्डेय

चित्र, तकनीकी सहयोग एवं कंपोसिंग : कार्तिक सराठे

आवरण : कमलेश ठाकुर एवं कार्तिक सराठे

संयोजन :

अंतर्राष्ट्रीय हिंदी केंद्र, विश्वरंग फाउंडेशन

रबींद्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय, भोपाल

मूल्य : ₹ 1565

प्रथम संस्करण 2025

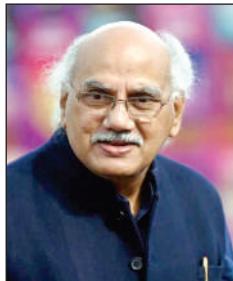
© आईसेक्ट पब्लिकेशन्स

प्रकाशक : आईसेक्ट पब्लिकेशन
ई-7/22, एस.बी.आई., अरेरा कॉलोनी,
भोपाल-462016
ईमेल : aisectpublications@aisect-org
दूरभाष : 0755-4851056
मोबाइल : 8818883165

मुद्रक : आईसेक्ट पब्लिकेशन
प्लॉट नंबर-10, सेक्टर-सी, औद्योगिक क्षेत्र,
बगरोदा, भोपाल, मध्यप्रदेश - 462026

इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। प्रकाशक/लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को, फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रॉनिक अथवा मशीनी, किसी भी माध्यम से, अथवा ज्ञान के संग्रहण एवं पुनरुत्प्रयोग की प्रणाली द्वारा, किसी भी रूप में, पुनरुत्पादित अथवा संचारित-प्रसारित नहीं किया जा सकता।

भूमिका



भाषा का विकास में साहित्य, व्याकरण और अभिव्यक्ति तीनों का महत्वपूर्ण योगदान है। ‘स्तर-4: हिंदी का पल्लवन’ इसी समग्र अध्ययन का उच्च स्तर है, जहाँ विद्यार्थी हिंदी भाषा की उन्नत संरचना, विशिष्ट साहित्यिक रूपों और रचनात्मक अभिव्यक्ति से परिचित होते हैं। यह पुस्तक ‘पुस्तक-शृंखला’ की पाँचवीं पुस्तक है।

इससे पहले विद्यार्थी भाषा की नींव, साहित्य की प्रारंभिक समझ और सांस्कृतिक पक्षों का अध्ययन कर चुके हैं। यह स्तर उन्हें हिंदी के व्यापक और गहन संसार में प्रवेश कराता है, जहाँ भाषा केवल सीखी नहीं जाती, बल्कि रची जाती है। इसमें हिंदी साहित्य की महत्वपूर्ण गद्य विधाओं, काव्य, व्याकरणिक पक्ष एवं रचनात्मक लेखन को शामिल किया गया है। यह स्तर उन विद्यार्थियों के लिए है जो हिंदी को उन्नत रूप में सीखना चाहते हैं तथा साहित्यिक और भाषिक चेतना विकसित करना चाहते हैं। हमें विश्वास है कि ‘स्तर-4: हिंदी का पल्लवन’ हिंदी भाषा की गहरी समझ विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा।

संतोष चौबे

कुलाधिपति, रबींद्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय (भोपाल, मध्य प्रदेश)

निदेशक, ‘विश्व रंग फाउंडेशन’ (भारत)

अंतरराष्ट्रीय हिंदी पाठ्यक्रम पुस्तक शृंखला



प्रारंभिक – बुनियादी हिंदी

स्तर – 1 हिंदी में अभिव्यक्ति

स्तर – 2 हिंदी से संवाद

स्तर – 3 हिंदी साहित्य एवं संस्कृति

स्तर – 4 हिंदी का पल्लवन



अनुक्रम

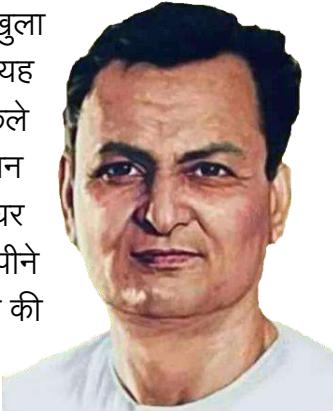
गद्य खंड			
क्र.	शीर्षक	लेखक	पृष्ठ क्र.
1.	लहासा की ओर	राहुल सांकृत्यायन	01-05
2.	बड़े भाई साहब	प्रेमचंद	06-14
3.	संविदिया	फणीश्वरनाथ रेणु	15-24
4.	कारतूस (एकांकी)	हबीब तनवीर	24-30
5.	मेरे बचपन के दिन	महादेवी वर्मा	31-35
6.	एवरेस्ट: मेरी शिखर यात्रा (यात्रा-वृत्तांत)	बछेंद्री पाल	35-44
7.	मेरे संग की औरतें	मृदुला गर्ग	45-54
8.	भारतीय कलाएँ		55-65
9.	भारतीय गायिकाओं में बेजोड़ लता मंगेशकर	कुमार गंधर्व	66-73
10.	बाजार दर्शन	जैनेंद्र कुमार	74-80
11.	संस्कृति	भद्रत आनंद कौसल्यायन	81-84
12.	डायरी का एक पन्ना	सीताराम सेक्सरिया	85-89
काव्य खंड			
क्र.	शीर्षक	लेखक	पृष्ठ क्र.
13.		संत रैदास	90-93
14.	मेरे तो गिरधर गोपाल	मीरा	94-97
15.	राम-लक्ष्मण संवाद, पद	तुलसीदास	98-105
16.	बादल को घिरते देखा है	नागर्जुन	106-109
17.	आत्मपरिचय	हरिवंश राय बच्चन	110-114
18.	कर चले हम फिदा	कैफी आजमी	115-119
19.	अलंकार – रूपक, उपमा, यमक, अनुप्रास आदि		120-122
20.	छंद – मात्रिक और वर्णिक छंद		123-125
21.	रस – स्थायी भाव, विभाव, अनुभाव, संचारी भाव		126-129
व्याकरण खंड			
क्र.	शीर्षक		पृष्ठ क्र.
22.	अन्विति		130-136
23.	पक्ष		135
24.	वृत्ति		136-139
25.	वाच्य		138-141
रचनात्मक लेखन खंड			
क्र.	शीर्षक		पृष्ठ क्र.
26.	अनुच्छेद लेखन		140-144
27.	निबंध लेखन		143-151
28.	संवाद लेखन		152-154
29.	विज्ञापन लेखन		155-168
30.	चित्र आधारित लेखन		159-162
31.	सूचना लेखन		163-167
32.	पत्र लेखन (औपचारिक और अनौपचारिक)		168-170

1

ल्हासा की ओर

– राहुल सांकृत्यायन

वह नेपाल से तिब्बत जाने का मुख्य रास्ता है। फरी कलिङ्गोड़ का रास्ता जब नहीं खुला था, तो नेपाल ही नहीं हिंदुस्तान की भी चीजें इसी रास्ते तिब्बत जाया करती थीं। यह व्यापारिक ही नहीं सैनिक रास्ता भी था। इसीलिए जगह-जगह फौजी चौकियाँ और किले बने हुए हैं, जिनमें कभी चीनी पलटन रहा करती थी। आजकल बहुत से फौजी मकान गिर चुके हैं। दुर्ग के किसी भाग में, जहाँ किसानों ने अपना बसेरा बना लिया है, वहाँ घर कुछ आबाद दिखाई पड़ते हैं। ऐसा ही परित्यक्त एक चीनी किला था। हम वहाँ चाय पीने के लिए ठहरे। तिब्बत में यात्रियों के लिए बहुत-सी तकलीफ़ भी हैं और कुछ आराम की बातें भी। वहाँ जाति-पाति, छुआछूत का सवाल ही नहीं है और न औरतें परदा ही करती हैं। बहुत निम्न श्रेणी के भिखरियाँ को लोग चोरी के डर से घर के भीतर नहीं आने देते; नहीं तो आप बिलकुल घर के भीतर चले जा सकते हैं। चाहे आप बिलकुल अपरिचित हों, तब भी घर की बहू या सासु को अपनी झोली में से चाय दे सकते हैं। वह आपके लिए उसे पका देगी। मक्खन और सोडा-नमक दे दीजिए, वह चाय चोड़ी में कूटकर उसे दूधवाली चाय के रंग की बना के मिट्टी के टोटीदार बरतन (खोटी) में रखके आपको दे देगी। यदि बैठक की जगह चूल्हे से दूर है और आपको डर है कि सारा मक्खन आपकी चाय में नहीं पड़ेगा, तो आप खुद जाकर चोड़ी में चाय मथकर ला सकते हैं। चाय का रंग तैयार हो जाने पर फिर नमक मक्खन डालने की जरूरत होती है।



परित्यक्त चीनी किले से जब हम चलने लगे, तो एक आदमी राहदारी माँगने आया। हमने वह दोनों चिट्ठे उसे दे दीं। शायद उसी दिन हम थोड़ा के पहले के आखिरी गाँव में पहुँच गए। यहाँ भी सुमति के जान-पहचान के आदमी थे और भिखरियाँ रहते भी ठहरने के लिए अच्छी जगह मिली। पाँच साल बाद हम इसी रास्ते लौटे थे और भिखरियाँ नहीं, एक भद्र यात्री के वेश में घोड़ों पर सवार होकर आए थे; किंतु उस वक्त किसी ने हमें रहने के लिए जगह नहीं दी, और हम गाँव के एक सबसे गरीब झोपड़े में ठहरे थे। बहुत कुछ लोगों की उस वक्त की मनोवृत्ति पर ही निर्भर है, खासकर शाम के वक्त छह बजे कम होश-हवास को दुरुस्त रखते हैं।

अब हमें सबसे विकट डाँड़ा थोड़ा कारण था। डाँड़े तिब्बत में सबसे खतरे की जगहें हैं। सोलह-सत्रह हजार फीट की ऊँचाई होने के कारण उनके दोनों तरफ़ मीलों तक कोई गाँव-गिराँव नहीं होते। नदियों के मोड़ और पहाड़ों के कोनों के कारण बहुत दूर तक आदमी को देखा नहीं जा सकता। डाकुओं के लिए यही सबसे अच्छी जगह है। तिब्बत में गाँव में आकर खून हो जाए, तब तो खूनी को सजा भी मिल सकती है, लेकिन इन निर्जन स्थानों में मरे हुए आदमियों के लिए कोई परवाह नहीं करता। सरकार खुफिया विभाग और पुलिस पर उतना खर्च नहीं करती और वहाँ

गवाह भी तो कोई नहीं मिल सकता। उकैत पहिले आदमी को मार डालते हैं, उसके बाद देखते हैं कि कुछ पैसा है कि नहीं। हथियार का कानून न रहने के कारण यहाँ लाठी की तरह लोग पिस्तौल, बंदूक लिए फिरते हैं। डाकू यदि जान से न मारे तो खुद उसे अपने प्राणों का खतरा है। गाँव में हमें मालूम हुआ कि पिछले ही साल थोड़ाला के पास खून हो गया। शायद खून की हम उतनी परवाह नहीं करते, क्योंकि हम भिखर्मगे थे और जहाँ-कहीं वैसी सूरत देखते, टोपी उतार जीभ निकाल, "कुची-कुची (दया-दया) एक पैसा" कहते भीख माँगने लगते। लेकिन पहाड़ की ऊँची चढ़ाई थी, पीठ पर सामान लादकर कैसे चलते? और अगला पड़ाव 16-17 मील से कम नहीं था। मैंने सुमति से कहा कि यहाँ से लड़कों तक के लिए दो घोड़े कर लो, सामान भी रख लेंगे और चढ़े चलेंगे।

दूसरे दिन हम घोड़ों पर सवार होकर ऊपर की ओर चले। डाँड़े से पहिले एक जगह चाय पी और दोपहर के बक्त डाँड़े के ऊपर जा पहुँचे। हम समुद्रतल से 17-18 हजार फीट ऊँचे खड़े थे। हमारी दक्खिन तरफ पूरब से पच्छम की ओर हिमालय के हजारों श्वेत शिखर चले गए थे। भीटे की ओर दौखने वाले पहाड़ बिलकुल नंगे थे, न वहाँ बरफ की सफेदी थी, न किसी तरह की हरियाली। उत्तर की तरफ बहुत कम बरफ वाली चोटियाँ दिखाई पड़ती थीं। सर्वोच्च स्थान पर डाँड़े के देवता का स्थान था, जो पत्थरों के ढेर, जानवरों की सींगों और रंग-बिरंगे कपड़े की झंडियों से सजाया गया था। अब हमें बराबर उतराई पर चलना था। चढ़ाई तो कुछ दूर थोड़ी मुश्किल थी, लेकिन उतराई बिलकुल नहीं। शायद दो-एक और सवार साथी हमारे साथ चल रहे थे। मेरा घोड़ा कुछ धीमे चलने लगा। मैंने समझा कि चढ़ाई की थकावट के कारण ऐसा कर रहा है, और उसे मारना नहीं चाहता था। धीरे-धीरे वह बहुत पिछड़ गया और मैं दोन्विंवक्स्तों की तरह अपने घोड़े पर झूमता हुआ चला जा रहा था। जान नहीं पड़ता था कि घोड़ा आगे जा रहा है या पीछे। जब मैं जोर देने लगता, तो वह और सुस्त पड़ जाता। एक जगह दो रास्ते फूट रहे थे, मैं बाएँ का रास्ता ले मील-डेढ़ मील चला गया। आगे एक घर में पूछने से पता लगा कि लड़कों का रास्ता दाहिने वाला था। फिर लौटकर उसी को पकड़ा। चार-पाँच बजे के करीब मैं गाँव से मील-भर पर था, तो सुमति इंतजार करते हुए मिले। मंगोलों का मुँह वैसे ही लाल होता है और अब तो वह पूरे गुस्से में थे। उन्होंने कहा- "मैंने दो टोकरी कंडे फूँक डालें, तीन-तीन बार चाय को गरम किया।" मैंने बहुत नरमी से जवाब दिया- "लेकिन मेरा कसूर नहीं है मित्र। देख नहीं रहे हो, कैसा घोड़ा मुझे मिला है। मैं तो रात तक पहुँचने की उम्मीद रखता था।" खैर, सुमति को जितनी जल्दी गुस्सा आता था, उतनी ही जल्दी वह ठंडा भी हो जाता था। लड़कों में वह एक अच्छी जगह पर ठहरे थे। यहाँ भी उनके अच्छे यजमान थे। पहिले चाय-सत्तू खाया गया, रात को गरमागरम थुकपा मिला।

अब हम तिड़री के विशाल मैदान में थे, जो पहाड़ों से घिरा टापू-सा मालूम होता था, जिसमें दूर एक छोटी-सी पहाड़ी मैदान के भीतर दिखाई पड़ती है। उसी पहाड़ी का नाम है तिड़री-समाधि-गिरि। आसपास के गाँव में भी सुमति के कितने ही यजमान थे, कपड़े की पतली-पतली चिरी बन्तियों के गंडे खतम नहीं हो सकते थे, क्योंकि बोधगया से लाए कपड़े के खतम हो जाने पर किसी कपड़े से बोधगया का गंडा बना लेते थे। वह अपने यजमानों के पास जाना चाहते थे। मैंने सोचा, यह तो हफ्ता-भर उधर ही लगा देंगे। मैंने उनसे कहा कि जिस गाँव में ठहरना हो, उसमें भले ही गंडे बाँट दो, मगर आसपास के गाँवों में मत जाओ इसके लिए मैं तुम्हें ल्हासा पहुँचकर रूपये दे दूँगा। सुमति ने स्वीकार किया। दूसरे दिन हमने भरिया ढूँढ़ने की कोशिश की, लेकिन कोई न मिला। सवेरे ही चल दिए होते तो अच्छा था, लेकिन अब 10-11 बजे की तेज धूप में चलना पड़ रहा था। तिब्बत की धूप भी बहुत कड़ी मालूम होती है, यद्यपि थोड़े से भी मोटे कपड़े से सिर को ढाँक लें, तो गरमी खतम हो जाती है। आप 2 बजे सूरज की ओर मुँह करके चल रहे हैं, ललाट धूप से जल रहा है और पीछे का कंधा बरफ हो रहा है। फिर हमने पीठ पर अपनी-अपनी चीजें लादी, ठंडा हाथ में लिया और चल पड़े। यद्यपि सुमति के परिचित तिड़री में भी थे, लेकिन वह एक और यजमान से मिलना

चाहते थे, इसलिए आदमी मिलने का बहाना कर शंकर विहार की ओर चलने के लिए कहा। तिब्बत की जमीन बहुत अधिक छोटे-बड़े जागीरदारों में बँटी है। इन जागीरों का बहुत ज्यादा हिस्सा मठीं (विहारों) के हाथ में है। अपनी-अपनी जागीर में हरेक जागीरदार कुछ खेती खुद भी कराता है, जिसके लिए मजदूर बेगार में मिल जाते हैं। खेती का इतज़ाम देखने के लिए वहाँ कोई भिक्षु भेजा जाता है, जो जागीर के आदमियों के लिए राजा से कम नहीं होता। शेकर की खेती के मुखिया भिक्षु (नम्से) बड़े भद्र पुरुष थे। वह बहुत प्रेम से मिले, हालाँकि उस वक्त मेरा भेष ऐसा नहीं था कि उन्हें कुछ भी खयाल करना चाहिए था। यहाँ एक अच्छा मंदिर था; जिसमें कन्जुर (बुद्धवचन-अनुवाद) की हस्तलिखित 103 पोथियाँ रखी हुई थीं, मेरा आसन भी वहीं लगा। वह बड़े मोटे कागज पर अच्छे अक्षरों में लिखी हुई थीं, एक-एक पोथी 15-15 सेर से कम नहीं रही होगी। सुमति ने फिर आसपास अपने यजमानों के पास जाने के बारे में पूछा, मैं अब पुस्तकों के भीतर था, इसलिए मैंने उन्हें जाने के लिए कह दिया। दूसरे दिन वह गए। मैंने समझा था 2-3 दिन लगेंगे, लेकिन वह उसी दिन दोपहर बाद चले आए। तिड़री गाँव वहाँ से बहुत दूर नहीं था। हमने अपना-अपना सामान पीठ पर उठाया और भिक्षु नम्से से विदाई लेकर चल पड़े।

अभ्यास प्रश्न

निम्नलिखित वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के उत्तर दें-

1. नेपाल से तिब्बत जाने वाला मुख्य रास्ता क्या था?
 - अ) फरी कलिङ्ग्योड
 - ब) थोड़ला डाँड़ा
 - स) लङ्कार
 - द) व्यापारिक रास्ता

2. तिब्बत में चाय बनाने के लिए किस बर्तन का उपयोग होता था?
 - अ) खोटी
 - ब) कड़ाही
 - स) हाँड़ी
 - द) चोड़ी

3. थोड़ला डाँड़े की ऊँचाई कितनी थी?
 - अ) 10-11 हजार फीट
 - ब) 12-13 हजार फीट
 - स) 16-17 हजार फीट
 - द) 20-21 हजार फीट

4. तिब्बत में डाकुओं के लिए सबसे उपयुक्त स्थान कौन सा था?
 - अ) गाँव
 - ब) डाँड़े
 - स) बाजार
 - द) शहर

5. लेखक और सुमति ने थोड़ला डाँड़ा पार करने के लिए क्या लिया?
 - अ) बैलगाड़ी
 - ब) घोड़े
 - स) पैदल चले
 - द) गधे

6. तिब्बत में यात्रियों के लिए क्या सुविधा थी?
 - अ) जाति-पाति का बंधन नहीं था
 - ब) मुफ्त भोजन मिलता था
 - स) मुफ्त घोड़े मिलते थे
 - द) सभी घर बंद रहते थे

II. निम्नलिखित प्रश्न सही हैं या गलत ?

1. तिब्बत में औरतें परदा नहीं करती थीं।
 - अ) सही

- ब) गलत
2. चीनी किले में अब कोई सैनिक नहीं रहता
था।
अ) सही
ब) गलत
3. थोड़ा डॉड़े पर गाँव बसे हुए थे।
अ) सही
ब) गलत
4. लेखक ने भिखमंगे के रूप में यात्रा नहीं की
थी।
- अ) सही
ब) गलत
5. तिब्बत में चाय में मक्खन और नमक डाला
जाता था।
अ) सही
ब) गलत
6. सुमति और लेखक ने लड़कों में एक अमीर
घर में ठहरने की जगह पाई।
अ) सही
ब) गलत

III. मिलान करें:-

A	B
1. थोड़ा डॉड़ा	● चाय बनाने का बर्तन
2. खोटी	● 16-17 हजार फीट ऊँचाई
3. डॉड़े का देवता	● हिमालय के श्वेत शिखर
4. दक्खिन तरफ	● लेखक का साथी
5. सुमति	● पत्थरों और झांडियों से सजा

शब्दावली :

शब्द		अर्थ
1.	परित्यक्त	छोड़ा हुआ, उपयोग में न लाया गया
2.	व्यापारिक	व्यापार से संबंधित
3.	फौजी चौकियाँ	सैनिक ठिकाने
4.	तकलीफ़	कठिनाई, परेशानी
5.	छुआछूत	जातिगत भेदभाव, अछूत मानने की प्रथा

6.	चोड़ी	चाय कूटने का बर्तन
7.	खोटी	मिट्टी का टोटीदार बर्तन
8.	राहदारी	रास्ते का शुल्क या अनुमति पत्र
9.	डँड़ा	ऊँचा पहाड़ी दर्दा
10.	निर्जन	सुनसान, जहाँ कोई न हो
11.	खुफिया	गुप्तचर, जासूसी
12.	श्वेत शिखर	सफेद पहाड़ी चोटियाँ
13.	उत्तराई	ढलान, नीचे की ओर रास्ता
14.	यजमान	संरक्षक, जो मेहमाननवाज़ी करता हो
15.	थुक्पा	तिब्बती व्यंजन, सूप जैसा भोजन
16.	जागीरदार	ज़मीन का मालिक, सामंती स्वामी
17.	बेगार	मुफ्त में किया गया काम
18.	भिक्षु	बौद्ध साधु
19.	कन्जुर	बौद्ध धर्मग्रंथ, बुद्धवचन का अनुवाद
20.	गंडा	कपड़े की पतली बत्तियों का समूह

IV. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 2-3 वाक्यों में दीजिए:

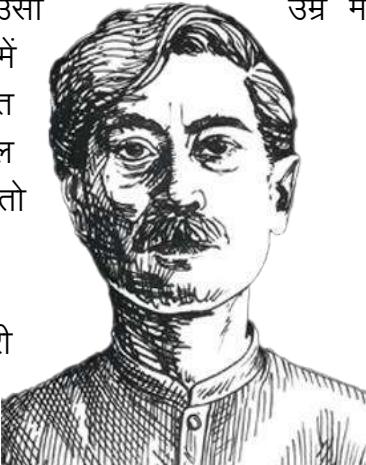
1. तिब्बत में यात्रियों को घरों में प्रवेश की अनुमति क्यों थी?
2. लेखक ने थोड़ा डँड़ा पार करने के लिए क्या उपाय किया?
3. तिब्बत में चाय बनाने के लिए किन सामग्रियों का उपयोग होता था?
4. लड़कोर में सुमति ने लेखक की प्रतीक्षा में क्या किया?
5. डँड़े के सर्वोच्च स्थान पर क्या था?
6. तिब्बत में डाकुओं के लिए सबसे अच्छी जगह कौन-सी थी और क्यों?

2

बड़े भाई साहब

- मुंशी प्रेमचंद

उम्र में



मेरे भाई साहब मुझसे पाँच साल बड़े, लेकिन केवल तीन दर्जे आगे। उन्होंने भी उसी पढ़ना शुरू किया था, जब मैंने शुरू किया, लेकिन तालीम जैसे महत्व के मामले में वह जल्दबाजी से काम लेना पसंद न करते थे। इस भवन की बुनियाद खूब मजबूत डालना चाहते थे, जिस पर आलीशान महल बन सके। एक साल का काम दो साल में करते थे। कभी-कभी तीन साल भी लग जाते थे। बुनियाद ही पुरुषता न हो, तो मकान कैसे पायेदार बने?

मैं छोटा था, वह बड़े थे। मेरी उम्र नौ साल की थी, वह चौदह साल के थे। उन्हें मेरी तंबीह और निगरानी का पूरा और जन्मसिद्ध अधिकार था और मेरी शालीनता इसी में थी कि उनके हुक्म को कानून समझूँ। वह स्वभाव से बड़े अध्ययनशील थे। हरदम किताब खोले बैठे रहते और शायद दिमाग को आराम देने के लिए कभी कॉपी पर, किताब के हाशियों पर चिड़ियों, बत्तखों, बिल्लियों की तस्वीरें बनाया करते थे। कभी-कभी एक ही नाम या शब्द या वाक्य दस-बीस बार लिख डालते। कभी एक शेर को बार-बार सुंदर अक्षरों में नकल करते। कभी ऐसी शब्द-रचना करते, जिसमें न कोई अर्थ होता, न कोई सामंजस्य। मसलन एक बार उनकी कॉपी पर मैंने यह इबारत देखी- स्पेशल, अमीना, भाइयों-भाइयों, दरअसल, भाई-भाई। राधेश्याम, श्रीयुत राधेश्याम, एक घंटे तक। इस के बाद एक आदमी का चेहरा बना हुआ था। मैंने बहुत चेष्टा की कि इस पहेली का कोई अर्थ निकालूँ, लेकिन असफल रहा। और उनसे पूछने का साहस न हुआ। वह नौवीं जमात में थे, मैं पाँचवीं में। उनकी रचनाओं को समझना मेरे लिए छोटा मुँह बड़ी बात थी।

मेरा जी पढ़ने में बिल्कुल न लगता था। एक घंटा भी किताब लेकर बैठना पहाड़ था। मौका पाते ही होस्टल से निकलकर मैदान में आ जाता और कभी कंचियाँ उछालता, कभी कागज की तितलियाँ उड़ाता और कहीं कोई साथी मिल गया, तो पूछना ही क्या। कभी चारदीवारी पर चढ़कर नीचे कूद रहे हैं, कभी फाटक पर सवार, उसे आगे-पीछे चलाते हुए मोटरकार का आनंद उठा रहे हैं, लेकिन कमरे में आते ही भाई साहब का वह रुद्र रूप देखकर प्राण सूख जाते। उनका पहला सवाल यह होता — “कहाँ थे?” हमेशा यही सवाल, इसी ध्वनि में हमेशा पूछा जाता था और इसका जवाब मेरे पास केवल मौन था। न जाने मेरे मुँह से यह बात क्यों न निकलती कि ज़रा बाहर खेल रहा था। मेरा मौन कह देता था कि मुझे अपना अपराध स्वीकार है और भाई साहब के लिए उस के सिवा और कोई इलाज न था कि स्नेह और रोष से मिले हुए शब्दों में मेरा सत्कार करें।

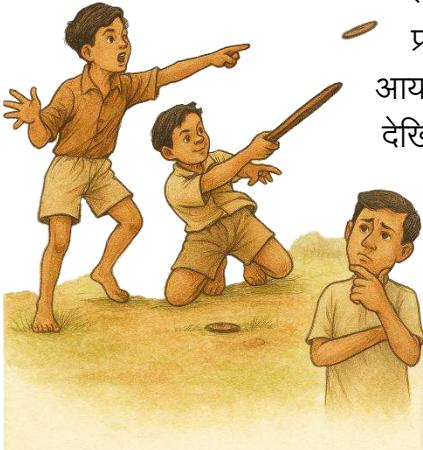
“इस तरह अंग्रेजी पढ़ोगे, तो जिंदगी भर पढ़ते रहोगे और एक हर्फ़ न आएगा। अंग्रेजी पढ़ना कोई हँसी-खेल नहीं है कि जो चाहे पढ़ ले। नहीं, ऐरा-गैरा नत्थू-खैरा सभी अंग्रेजी के विद्वान हो जाते! यहाँ रात-दिन आँखें फोड़नी पड़ती हैं और खून जलाना पड़ता है, तब कहीं यह विद्या आती है। और आती क्या है, हाँ कहने को आ जाती है। बड़े-बड़े

विद्वान भी शुद्ध अंग्रेजी नहीं लिख सकते, बोलना तो दूर रहा। और मैं कहता हूँ, तुम कितने घोंघा हो कि मुझे देखकर भी सबक नहीं लेते। मैं कितनी मेहनत करता हूँ, यह तुम अपनी आँखों से देखते हो। अगर नहीं देखते, तो यह तुम्हारी आँखों का कसूर है, तुम्हारी बुद्धि का कसूर है। इतने मेले-तमाशे होते हैं, मुझे तुमने कभी देखने जाते देखा है? रोज ही क्रिकेट और हॉकी मैच होते हैं। मैं पास नहीं फटकता। हमेशा पढ़ता रहता हूँ। उस पर भी एक-एक दर्जे में दो-दो, तीन-तीन साल पड़ा रहता हूँ, फिर भी तुम यह आशा करते हो कि तुम यूँ खेल-कूद में वक्त गँवाकर पास हो जाओगे? मुझे तो दो ही तीन साल लगते हैं, तुम उम्र भर इसी दरजे में पड़े सड़ते रहोगे। अगर तुम्हें इस तरह उम्र गँवानी है, तो बेहतर है, घर चले जाओ और मजे से गुल्ली-डंडा खेलो। दादा की गाढ़ी कमाई के रुपये क्यों बरबाद करते हो?"
मैं यह लताड़ सुनकर आँसू बहाने लगता। जवाब ही क्या था। अपराध तो मैंने किया, लताड़ कौन सहे? भाई साहब उपदेश की कला में निपुण थे। ऐसी-ऐसी लगती बातें कहते, ऐसे-ऐसे सूक्ष्म-बाण चलाते कि मेरे जिगर के टुकड़े-टुकड़े हो जाते और हिम्मत टूट जाती। इस तरह जान तोड़कर मेहनत करने की शक्ति मैं अपने में न पाता था और उस निराशा में जरा देर के लिए मैं सोचने लगता — "क्यों न घर चला जाऊँ? जो काम मेरे बूते के बाहर है, उसमें हाथ डालकर क्यों अपनी ज़िंदगी खराब करूँ।" मुझे अपना मूर्ख रहना मंज़ूर था, लेकिन उतनी मेहनत से मुझे तो चक्कर आ जाता था।

घंटे-दो घंटे के बाद निराशा के बादल फट जाते और मैं इरादा करता कि आगे से खूब जी लगाकर पढ़ूँगा। चटपट एक टाइम-टेबल बना डालता। बिना पहले से नक्शा बनाए कोई योजना तैयार किए काम कैसे शुरू करूँ। टाइम-टेबल में खेलकूद की मद बिल्कुल उड़ जाती। प्रातःकाल छह बजे उठना, मुँह-हाथ धो, नाश्ता कर, पढ़ने बैठ जाना। छह से आठ तक अंग्रेजी, आठ से नौ तक हिसाब, नौ से साढ़े नौ तक इतिहास, फिर भोजन और स्कूल। साढ़े तीन बजे स्कूल से वापिस होकर आधा घंटा आराम, चार से पाँच तक भूगोल, पाँच से छह तक ग्रामर, आधा घंटा होस्टल के सामने ही टहलना, साढ़े छह से सात तक अंग्रेजी कंपोजीशन, फिर भोजन करके आठ से नौ तक अनुवाद, नौ से दस तक हिंदी, दस से ग्यारह तक विविध विषय, फिर विश्राम।

मगर टाइम-टेबल बना लेना एक बात है, उस पर अमल करना दूसरी बात। पहले ही दिन उसकी अवहेलना शुरू हो जाती। मैदान की वह सुखद हरियाली, हवा के हल्के-हल्के झोंके, फुटबॉल की वह उछल-कूद, कबड्डी के वह दाँव-घात, वॉलीबॉल की वह तेजी और फुर्ती, मुझे अज्ञात और अनिवार्य रूप से खींच ले जाती और वहाँ जाते ही मैं सब कुछ भूल जाता। वह जानलेवा टाइम-टेबल, वह आँखफोड़ पुस्तकें, किसी की याद न रहती और भाई साहब को नसीहत और फजीहत का अवसर मिल जाता। मैं उनके साए से भागता, उनकी आँखों से दूर रहने की चेष्टा करता, कमरे में इस तरह दबे पाँव आता कि उन्हें खबर न हो। उनकी नज़र मेरी ओर उठी और मेरे प्राण निकले। हमेशा सिर पर एक नंगी तलवार-सी लटकती मालूम होती। फिर भी जैसे मौत और विपत्ति के बीच भी आदमी मोह और माया के बंधन में जकड़ा रहता है, मैं फटकार और घुड़कियाँ खाकर भी खेल-कूद का तिरस्कार न कर सकता था।

(2)



सालाना इम्तिहान हुआ भाई साहब फेल हो गए, मैं पास हो गया और दरजे में प्रथम आया। मेरे और उनके बीच में केवल दो साल का अंतर रह गया। जी मैं आया, भाई साहब को आड़े हाथों लूँ- 'आपकी वह घोर तपस्या कहाँ गई? मुझे देखिए, मज़े से खेलता भी रहा और दरजे में अव्वल भी हूँ' लेकिन वह इतने दुखी और उदास थे कि मुझे उनसे दिली हमदर्दी हुई और उनके घाव पर नमक छिड़कने का विचार ही लज्जास्पद जान पड़ा। हाँ, अब मुझे अपने ऊपर कुछ अभिमान हुआ और आत्मसम्मान भी बढ़ा। भाई साहब का वह रौब मुझ पर न रहा। आजादी से खेलकूद में शरीक होने लगा। दिल मज़बूत था। अगर उन्होंने फिर मेरी फ़जीहत की, तो साफ़ कह दूँगा- 'आपने अपना खून जलाकर कौन-सा तीर मार लिया। मैं तो खेलते-कूदते दरजे में अव्वल आ गया।' ज़बान से यह हेकड़ी जताने का साहस न होने पर भी मेरे रंग-दंग से साफ़ ज़ाहिर होता था कि भाई साहब का वह आतंक मुझ पर नहीं था। भाई साहब ने इसे भाँप लिया-उनकी सहज बुद्धि बड़ी तीव्र थी और एक दिन जब मैं भोर का सारा समय गुल्ली-डंडे की भेंट करके ठीक भोजन के समय लौटा, तो भाई साहब ने मानो तलवार खींच ली और मुझ पर टूट पड़े-देखता हूँ, इस साल पास हो गए और दरजे में अव्वल आ गए, तो तुम्हें दिमाग हो गया है, मगर भाईजान, घमंड तो बड़े-बड़े का नहीं रहा, तुम्हारी क्या हस्ती है? इतिहास में रावण का हाल तो पढ़ा ही होगा। उसके चरित्र से तुमने कौन-सा उपदेश लिया? या यों ही पढ़ गए? महज इम्तिहान पास कर लेना कोई चीज़ नहीं, असल चीज़ है बुद्धि का विकास। जो कुछ पढ़ो, उसका अभिप्राय समझो। रावण भूमंडल का स्वामी था। ऐसे राजाओं को चक्रवर्ती कहते हैं। आजकल अंग्रेजों के राज्य का विस्तार बहुत बढ़ा हुआ है, पर इन्हें चक्रवर्ती नहीं कह सकतो। संसार में अनेक राष्ट्र अंग्रेजों का आधिपत्य स्वीकार नहीं करते, बिलकुल स्वाधीन हैं। रावण चक्रवर्ती राजा था, संसार के सभी महीप उसे कर देते थे। बड़े-बड़े देवता उसकी गुलामी करते थे। आग और पानी के देवता भी उसके दास थे, मगर उसका अंत क्या हुआ? घमंड ने उसका नाम-निशान तक मिटा दिया, कोई उसे एक चुल्लू पानी देने वाला भी न बचा। आदमी और जो कुकर्म चाहे करे, पर अभिमान न करे, इतराये नहीं। अभिमान किया और दीन-दुनिया दोनों से गया।

शैतान का हाल भी पढ़ा ही होगा। उसे यह अभिमान हुआ था कि ईश्वर का उससे बढ़कर सच्चा भक्त कोई है ही नहीं। अंत में यह हुआ कि स्वर्ग से नरक में ढकेल दिया गया। शाहेरूम ने भी एक बार अहंकार किया था। भीख माँग-माँगकर मर गया। तुमने तो अभी केवल एक दरजा पास किया है और अभी से तुम्हारा सिर फिर गया, तब तो तुम आगे पढ़ चुके। यह समझ लो कि तुम अपनी मेहनत से नहीं पास हुए, अंधे के हाथ बटेर लग गई। मगर बटेर केवल एक बार हाथ लग सकती है, बार-बार नहीं लग सकती। कभी-कभी गुल्ली-डंडे में भी अंधा-चोट निशाना पड़ जाता है। इससे कोई सफल खिलाड़ी नहीं हो जाता। सफल खिलाड़ी वह है, जिसका कोई निशाना खाली न जाए।

मेरे फेल होने पर मत जाओ। मेरे दरजे में आओगे, तो दाँतों पसीना आ जाएगा, जब अलजबरा और जामेट्री के लोहे के चने चबाने पड़ेंगे और इंगलिस्तान का इतिहास पढ़ना पड़ेगा। बादशाहों के नाम याद रखना आसान नहीं। आठ-आठ हेनरी हो गुज़रे हैं। कौन-सा कांड किस हेनरी के समय में हुआ, क्या यह याद कर लेना आसान समझते हो? हेनरी सातवें की जगह हेनरी आठवाँ लिखा और सब नंबर गायबा सफाचट। सिफर भी न मिलेगा, सिफर भी। हो किस खयाल में दरजनों तो जेम्स हुए हैं, दरजनों विलियम, कोडियों चाल्स। दिमाग चक्कर खाने लगता है। आंधी रोग हो

जाता है। इन अभागों को नाम भी न जुड़ते थे। एक ही नाम के पीछे दोयम, सोयम, चहारूम, पंचुम लगाते चले गए। मुझसे पूछते, तो दस लाख नाम बता देता।

और जामेट्री तो बस, खुदा ही पनाह। अब ज की जगह अजब लिख दिया और सारे नंबर कट गए। कोई इन निर्दयी मुमतहिनों से नहीं पूछता कि आखिर अब ज और अजब में क्या फर्क है, और व्यर्थ की बात के लिए क्यों छात्रों का खून करते हो। दाल-भात-रोटी खाई या भात-दाल-रोटी खाई, इसमें क्या रखा है, मगर इन परीक्षकों को क्या परवाह। वह तो वही देखते हैं जो पुस्तक में लिखा है। चाहते हैं कि लड़के अक्षर-अक्षर रट डालें। और इसी रटत का नाम शिक्षा रख छोड़ा है। और आखिर इन बे-सिर-पैर की बातों के पढ़ने से क्या यदा?

इस रेखा पर वह लंब गिरा दो, तो आधार लंब से दुगुना होगा। पूछिए, इससे प्रयोजन? दुगुना नहीं, चौगुना हो जाए, या आधा ही रहे, मेरी बला से, लेकिन परीक्षा में पास होना है, तो यह सब खुराफ़ात याद करनी पड़ेगी।

कह दिया- 'समय की पाबंदी' पर एक निबंध लिखो, जो चार पन्नों से कम न हो। अब आप कॉपी सामने खोलें, कलम हाथ में लिए उसके नाम को रोइए। कौन नहीं जानता कि समय की पाबंदी बहुत अच्छी बात है। इससे आदमी के जीवन में संयम आ जाता है, दूसरों का उस पर स्नेह होने लगता है और उसके कारोबार में उन्नति होती है, उसे चार किफ़ायत चाहते हैं, लेकिन इस ज़रा सी बात पर चार पन्ने कैसे लिखें? जो बात एक वाक्य में कही जा सके, पन्नों में लिखने की ज़रूरत ? मैं तो इसे हिमाकत कहता हूँ। यह तो समय की नहीं, बल्कि उसका दुरुपयोग है कि व्यर्थ में किसी बात को दृँस दिया जाए। हम आदमी को जो कुछ कहना हो, चटपट कह दे और अपनी राह लो। मगर नहीं, आपको चार पन्ने रँगने पड़ेंगे, चाहे जैसे लिखिए और पन्ने भी पूरे फुलस्केप आकार के। यह छात्रों पर अत्याचार नहीं, तो और क्या है? अनर्थ तो यह है कि कहा जाता है, संक्षेप में लिखो। समय की पाबंदी पर संक्षेप में एक निबंध लिखो, जो चार पन्नों से कम न हो। ठीक। संक्षेप में तो चार पन्ने हुए, नहीं शायद सौ-दो सौ पन्ने लिखवाते। तेज़ भी दौड़िए और धीरे-धीरे भी। है उलटी बात, है या नहीं? बालक भी इतनी सी बात समझ सकता है, लेकिन इन अध्यापकों को इतनी तमीज़ भी नहीं। उस पर दावा है कि हम अध्यापक हैं। मेरे दरजे में आओगे लाला, तो ये सारे पापड़ बेलने पड़ेंगे और तब आटे-दाल का भाव मालूम होगा। इस दरजे में अवल आ गए हो, तो ज़मीन पर पाँव नहीं रखते। इसलिए मेरा कहना मानिए। लाख फेल हो गया हूँ, लेकिन तुमसे बड़ा हूँ, संसार का मुझे तुमसे कहीं ज्यादा अनुभव है। जो कुछ कहता हूँ उसे गिरह बाँधिए, नहीं पछताइएगा।



स्कूल का समय निकट था, नहीं ईश्वर जाने यह उपदेश-माला कब समाप्त होती। भोजन आज मुझे निःस्वाद-सा लग रहा था। जब पास होने पर यह तिरस्कार हो रहा है, तो फेल हो जाने पर तो शायद प्राण ही ले लिए जाएँ। भाई साहब ने अपने दरजे की पढ़ाई का जो भयंकर चित्र खींचा था, उसने मुझे भयभीत कर दिया। स्कूल छोड़कर घर नहीं भागा, यही ताज्जुब है, लेकिन इतने तिरस्कार पर भी पुस्तकों में मेरी अरुचि ज्यों-की-त्यों बनी रही। खेल-कूद का कोई अवसर हाथ से न जाने देता। पढ़ता भी, मगर बहुत कम। बस, इतना कि रोज़ टास्क पूरा हो जाए और दरजे में जलील न होना पड़े। अपने ऊपर जो विश्वास पैदा हुआ था, वह फिर लुप हो गया और फिर चोरों का-सा जीवन कटने लगा।

(3)

फिर सालाना इम्तिहान हुआ और कुछ ऐसा संयोग हुआ कि मैं फिर पास हुआ और भाई साहब फिर फेल हो गए मैंने बहुत मेहनत नहीं की, पर न जाने कैसे दरजे में अव्वल आ गया। मुझे खुद अचरज हुआ। भाई साहब ने प्राणांतक परिश्रम किया। कोर्स का एक-एक शब्द चाट गए थे, दस बजे रात तक इधर, चार बजे भोर से उधर, छः से साढ़े नौ तक स्कूल जाने के पहले। मुद्रा कांतिहीन हो गई थी, मगर बेचारे फेल हो गए। मुझे उन पर दया आती थी। नतीजा सुनाया गया, तो वह रो पड़े और मैं भी रोने लगा। अपने पास होने की खुशी आधी हो गई। मैं भी फेल हो गया होता, तो भाई साहब को इतना दुःख न होता, लेकिन विधि की बात कौन टाले !

मेरे और भाई साहब के बीच में अब केवल एक दरजे का अंतर और रह गया। मेरे मन में एक कुटिल भावना उदय हुई कि कहीं भाई साहब एक साल और फेल हो जाएँ, तो मैं उनके बराबर हो जाऊँ, फिर वह किस आधार पर मेरी फ़जीहत कर सकेंगे, लेकिन मैंने इस विचार को दिल से बल्पूर्वक निकाल डाला। आखिर वह मुझे मेरे हित के विचार से ही तो डॉट्टे हैं। मुझे इस वक्त अप्रिय लगता है अवश्य, मगर यह शायद उनके उपदेशों का ही असर है कि मैं दनादन पास हो जाता हूँ और इतने अच्छे नंबरों से।

अब भाई साहब बहुत कुछ नरम पड़ गए थे। कई बार मुझे डॉट्टे का अवसर पाकर भी उन्होंने धीरज से काम लिया। शायद अब वह खुद समझने लगे थे कि मुझे डॉट्टे का अधिकार उन्हें नहीं रहा, या रहा भी, तो बहुत कम। मेरी स्वच्छंदता भी बढ़ी। मैं उनकी सहिष्णुता का अनुचित लाभ उठाने लगा। मुझे कुछ ऐसी धारणा हुई कि मैं पास ही हो जाऊँगा, पढ़ूँ या न पढ़ूँ, मेरी तकदीर बलवान है, इसलिए भाई साहब के डर से जो थोड़ा-बहुत पढ़ लिया करता था, वह भी बंद हुआ। मुझे कनकौए उड़ाने का नया शौक पैदा हो गया था और अब सारा समय पतंगबाजी की ही भेंट होता था, फिर भी मैं भाई साहब का अदब करता था और उनकी नज़र बचाकर कनकौए उड़ाता था। मांझा देना, कन्ने बाँधना, पतंग टूर्नामेंट की तैयारियाँ आदि समस्याएँ सब गुप्त रूप से हल की जाती थीं। मैं भाई साहब को यह संदेह न करने देना चाहता था कि उनका सम्मान और लिहाज़ मेरी नज़रों में कम हो गया है।

एक दिन संध्या समय, होस्टल से दूर में एक कनकौआ लूटने बेतहाशा दौड़ा जा रहा था। आँखें आसमान की ओर थीं और मन उस आकाशगामी पथिक की ओर, जो मंद गति से झूमता पतन की ओर चला आ रहा था, मानो कोई आत्मा स्वर्ग से निकलकर विरक्त मन से नए संस्कार ग्रहण करने जा रही हो। बालकों की पूरी सेना लगे और झाड़दार बाँस लिए इनका स्वागत करने को दौड़ी आ रही थी। किसी को अपने आगे-पीछे की खबर न थी। सभी मानो उस पतंग के साथ ही आकाश में उड़ रहे थे, जहाँ सब कुछ समतल है, न मोटरकारें हैं, न ट्राम, न गाड़ियाँ।

सहसा भाई साहब से मेरी मुठभेड़ हो गई, जो शायद बाज़ार से लौट रहे थे। उन्होंने वहीं हाथ पकड़ लिया और उग्र भाव से बोले-इन बाज़ारी लौंडों के साथ धेले के कनकौए के लिए दौड़ते तुम्हें शर्म नहीं आती? तुम्हें इसका भी कुछ लिहाज़ नहीं कि अब नीची जमात में नहीं हो, बल्कि आठवीं जमात में आ गए हो और मुझसे केवल एक दरजा नीचे हो। आखिर आदमी को कुछ तो अपनी पोजीशन का ख्याल रखना चाहिए।

एक जमाना था कि लोग आठवाँ दरजा पास करके नायब तहसीलदार हो जाते थे। मैं कितने ही मिडिलचियों को जानता हूँ, जो आज अव्वल दरजे के डिप्टी मैजिस्ट्रेट या सुपरिंटेंडेंट हैं। कितने ही आठवीं जमात वाले हमारे लीडर और समाचारपत्रों के संपादक हैं। बड़े-बड़े विद्वान उनकी मातहती में काम करते हैं और तुम उसी आठवें दरजे में आकर बाज़ारी लौंडों के साथ कनकौए के लिए दौड़ रहे हो। मुझे तुम्हारी इस कम अकली पर दुःख होता है। तुम जहीन हो,

इसमें शक नहीं, लेकिन वह ज़ेहन किस काम का जो हमारे आत्मगौरव की हत्या कर डालो। तुम अपने दिल में समझते होगे, मैं भाई साहब से महज एक दरजा नीचे हूँ और अब उन्हें मुझको कुछ कहने का हक नहीं है, लेकिन यह तुम्हारी गलती है। मैं तुमसे पाँच साल बड़ा हूँ और चाहे आज तुम मेरी ही जमात में आ जाओ और परीक्षकों का यही हाल है, तो निस्संदेह अगले साल तुम मेरे समकक्ष हो जाओगे और शायद एक साल बाद मुझसे आगे भी निकल जाओ, लेकिन मुझमें और तुममें जो पाँच साल का अंतर है, उसे तुम क्या, खुदा भी नहीं मिटा सकता। मैं तुमसे पाँच साल बड़ा हूँ और हमेशा रहूँगा। मुझे दुनिया का और जिंदगी का जो तजुरबा है, तुम उसकी बराबरी नहीं कर सकते, चाहे तुम एम.ए. और डी. फिल् और डी.लिट् ही क्यों न हो जाओ। समझ किताबें पढ़ने से नहीं आती, दुनिया देखने से आती है। हमारी अम्माँ ने कोई दरजा नहीं पास किया और दादा भी शायद पाँचवीं छठी जमात के आगे नहीं गए, लेकिन हम दोनों चाहे सारी दुनिया की विद्या पढ़ लें, अम्माँ और दादा को हमें समझाने और सुधारने का अधिकार हमेशा रहेगा। केवल इसलिए नहीं कि वे हमारे जन्मदाता हैं, बल्कि इसलिए कि उन्हें दुनिया का हमसे ज्यादा तजुरबा है और रहेगा। अमेरिका में किस तरह की राज-व्यवस्था है, और आठवें हेनरी ने कितने ब्याह किए और आकाश में कितने नक्षत्र हैं, यह बातें चाहे उन्हें न मालूम हों, लेकिन हज़ारों ऐसी बातें हैं, जिनका ज्ञान उन्हें हमसे और तुमसे ज्यादा है। दैव न करे, आज मैं बीमार हो जाऊँ, तो तुम्हारे हाथ-पाँव फूल जाएँगे। दादा को तार देने के सिवा तुम्हें और कुछ न सूझेगा, लेकिन तुम्हारी जगह दादा हों, तो किसी को तार न दें, न घबराएँ, न बदहवास हों। पहले खुद मरज़ पहचानकर इलाज करेंगे, उसमें सफल न हुए, तो किसी डॉक्टर को बुलाएँगे। बीमारी तो खैर बड़ी चीज़ है। हम-तुम तो इतना भी नहीं जानते कि महीने-भर का खर्च महीना-भर कैसे चले। जो कुछ दादा भेजते हैं, उसे हम बीस-बाईस तक खर्च कर डालते हैं और फिर पैसे-पैसे को मुहताज हो जाते हैं। नाश्ता बंद हो जाता है, धोबी और नाई से मुँह चुराने लगते हैं, लेकिन जितना आज हम और तुम खर्च कर रहे हैं, उसके आधे में दादा ने अपनी उम्र का बड़ा भाग इज्जत और नेकनामी के साथ निभाया है और कुटुम्ब का पालन किया है जिसमें सब मिलकर नौ आदमी थे। अपने हेडमास्टर साहब ही को देखो। एम.ए. हैं कि नहीं और यहाँ के एम.ए. नहीं, आक्सफोर्ड के। एक हजार रुपये पाते हैं; लेकिन उनके घर का इंतज़ाम कौन करता है? उनकी बूढ़ी माँ हेडमास्टर साहब की डिग्री यहाँ बेकार हो गई। पहले खुद घर का इंतज़ाम करते थे। खर्च पूरा न पड़ता था। कर्जदार रहते थे। जब से उनकी माता जी ने प्रबंध अपने हाथ में ले लिया है, जैसे घर में लक्ष्मी आ गई है। तो भाईजान, यह गर्ऊर दिल से निकाल डालो कि तुम मेरे समीप आ गए हो और अब स्वतंत्र हो। मेरे देखते तुम बेराह न चलने पाओगे। अगर तुम यों न मानोगे तो मैं (थप्पड़ दिखाकर) इसका प्रयोग भी कर सकता हूँ मैं जानता हूँ, तुम्हें मेरी बातें जहर लग रही हैं...

मैं उनकी इस नई युक्ति से नत-मस्तक हो गया। मुझे आज सचमुच अपनी लघुता का अनुभव हुआ और भाई साहब के प्रति मेरे मन में श्रद्धा उत्पन्न हुई। मैंने सजल आँखों से कहा-हरगिज नहीं। आप जो कुछ फरमा रहे हैं, वह बिलकुल सच है और आपको उसके कहने का अधिकार है। भाई साहब ने मुझे गले से लगा लिया और बोले- मैं कनकौए उड़ाने को मना नहीं करता। मेरा भी जी ललचाता है; लेकिन करूँ क्या, खुद बेराह चलूँ तो तुम्हारी रक्षा कैसे करूँ? यह कर्तव्य भी तो मेरे सिर है। संयोग से उसी वक्त एक कटा हुआ कनकौआ हमारे ऊपर से गुजरा। उसकी डोर लटक रही थी। लड़कों का एक गोल पीछे-पीछे दौड़ा चला आता था। भाई साहब लंबे हैं ही, उछलकर उसकी डोर पकड़ ली और बेतहाशा होस्टल की तरफ़ दौड़े। मैं पीछे-पीछे दौड़ रहा था।

अभ्यास प्रश्न

सही विकल्प चुनें:-

1. भाई साहब लेखक से कितने साल बड़े थे?

- अ) तीन साल
- ब) चार साल
- स) पाँच साल
- द) छह साल

2. लेखक और भाई साहब के बीच कितने दर्जे का अंतर था?

- अ) दो दर्जे
- ब) तीन दर्जे
- स) चार दर्जे
- द) पाँच दर्जे

3. भाई साहब किस जमात में थे?

- अ) सातवीं
- ब) आठवीं

6. सालाना इम्तिहान में लेखक का क्या परिणाम रहा?

- अ) फेल हो गया
- ब) पास हो गया और अच्वल आया
- स) दूसरा स्थान प्राप्त किया
- द) तीसरा स्थान प्राप्त किया

- स) नौवीं
- द) दसवीं

4. लेखक को पढ़ाई की तुलना में क्या अधिक पसंद था?

- अ) चित्र बनाना
- ब) खेल-कूद
- स) किताबें लिखना
- द) शेर नकल करना

5. भाई साहब ने अपनी पढ़ाई के लिए क्या रणनीति अपनाई थी?

- अ) जल्दबाजी से पढ़ना
- ब) बुनियाद मजबूत करना
- स) कम समय में पढ़ना
- द) खेल-कूद के साथ पढ़ना

निम्नलिखित वाक्यों में सही या गलत लिखें:-

1. भाई साहब स्वभाव से अध्ययनशील थे।
अ) सही
ब) गलत
2. लेखक को पढ़ाई में बहुत रुचि थी।
अ) सही
ब) गलत
3. भाई साहब ने कभी खेल-कूद में हिस्सा लिया।
अ) सही
ब) गलत
4. लेखक ने टाइम-टेबल बनाया, लेकिन उसका पालन नहीं किया।
अ) सही
ब) गलत
5. भाई साहब सालाना इन्तिहान में पास हो गए।
अ) सही
ब) गलत
6. लेखक ने भाई साहब के सामने कभी कनकौआ उड़ाया।
अ) सही
ब) गलत

मिलान करें :-

अ		ब
1. भाई साहब की कॉपी	●	लेखक का डर
2. रुद्र रूप	●	चिल्लियों, बट्टखों की तस्वीरें
3. अंग्रेजी पढ़ना	●	आँखें फोड़नी पड़ती हैं
4. रावण	●	पास हो गया और अव्वल आया
5. लेखक का परिणाम	●	घमंड के कारण नष्ट हुआ

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक वाक्य में दीजिए :-

1. भाई साहब ने अपनी पढ़ाई में बुनियाद को कैसे मजबूत करना चाहा ?
2. लेखक को पढ़ाई की तुलना में क्या अधिक पसंद था ?
3. लेखक ने कनकौआ उड़ाने का शौक कैसे पूरा किया ?

शब्दावली

शब्द	अर्थ
तालीम	शिक्षा, पढ़ाई
पुख्ता	मजबूत, पक्का
तंबीह	नसीहत, चेतावनी
अध्ययनशील	पढ़ने में रुचि रखने वाला

रुद्र रूप	गुस्सैल और डरावना रूप
सत्कार	सम्मान, आदर
लताड़	डॉट, फटकार
सूक्षि-बाण	गहरी और प्रभावी बातें
निराशा	हताशा, निराशावाद
अवहेलना	अनादर, उल्लंघन
स्वच्छंदता	स्वतंत्रता, आजादी
कुटिल भावना	कपटपूर्ण विचार
सहिष्णुता	धैर्य, सहनशीलता
तकदीर	भाय, किस्मत
आत्मगौरव	आत्मसम्मान
तजुरबा	अनुभव
नत-मस्तक	झुका हुआ, सम्मान में सिर झुकाना

3

संविदिया

फणीक्षरनाथ 'रेणु'

हरगोबिन को अचरज हुआ तो आज भी किसी को संविदिया की ज़रूरत पड़ सकती है? इस ज़माने में जबकि गाँव-गाँव में डाकघर खुल गए हैं, संविदिया के मार्फत संवाद क्यों भेजेगा कोई? आज तो आदमी घर बैठे ही लंका तक खबर भेज सकता है और वहाँ का यथार्थ संवाद मंगा सकता है। फिर उसकी बुलाहट क्यों हुई? हरगोबिन बड़ी हवेली की टूटी ड्योढ़ी पारकर अंदर गया। सदा की भाँति उसने वातावरण को सूँधकर संवाद का अंदाज़ लगाया... निश्चय ही कोई गुप्त समाचार ले जाना है। चाँद-सूरज को भी नहीं मालूम हो। परेवा-पंछी तक न जाने।
“पाँव लागी, बड़ी बहुरिया।”

बड़ी हवेली की बड़ी बहुरिया ने हरगोबिन को पीढ़ी दी और आँख के इशारे से कुछ देर चुपचाप बैठने को कहा। बड़ी हवेली अब नाममात्र को ही बड़ी हवेली है। जहाँ दिन-रात नौकर-नौकरानियों और जन-मजदूरों की भीड़ लगी रहती थी, वहाँ आज हवेली की बड़ी बहुरिया अपने हाथ से सूप में अनाज लेकर फटक रही है। इन हाथों में सिर्फ मेहँदी लगाकर ही गाँव की नाइन परिवार पालती थी। कहाँ गए वे दिन? हरगोबिन ने लंबी साँस ली। बड़े भैया के मरने के बाद ही जैसे सब खेल खत्म हो गया। तीनों भाइयों ने आपस में लड़ाई-झगड़ा शुरू किया। रैयतों ने ज़मीन पर दावे कर के दखल किया, फिर तीनों भाई गाँव छोड़कर शहर में जा बसे। रह गई बड़ी बहुरिया कहाँ जाती बेचारी! भगवान भले आदमी को ही कष्ट देते हैं। नहीं तो एक घंटे की बीमारी में बड़े भैया क्यों मरते?... बड़ी बहुरिया की देह से जेवर खींच-छीनकर बँटवारे की लीला हुई थी। हरगोबिन ने देखी है अपनी आँखों से द्रौपदी चीर-हरण लीला! बनारसी साड़ी को तीन टुकड़े करके बँटवारा किया था, निर्दयी भाइयों ने। बेचारी बड़ी बहुरिया!

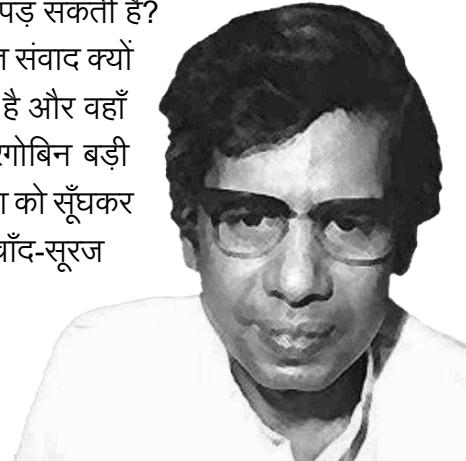
गाँव की मोदिआइन बुढ़िया न जाने कब से आँगन में बैठकर बड़बड़ा रही थी, “उधार का सौदा खाने में बड़ा मीठा लगता है और दाम देते समय मोदिआइन की बात कड़वी लगती है। मैं आज दाम लेकर ही उठूँगी।” बड़ी बहुरिया ने कोई जवाब नहीं दिया।

हरगोबिन ने फिर लंबी साँस ली। जब तक यह मोदिआइन आँगन से नहीं टलती, बड़ी बहुरिया हरगोबिन से कुछ नहीं बोलेगी। वह अब चुप नहीं रह सका, “मोदिआइन काकी, बाकी-बकाया वसूलने का यह काबुली-कायदा तो तुमने खूब सीखा है।”

“काबुली-कायदा”, सुनते ही मोदिआइन तमककर खड़ी हो गई, “चुप रह मुँहझाँसे! निमोछिये...”

“क्या करूँ काकी, भगवान ने मूँछ-दाढ़ी दी नहीं, न काबुली आगा साहब की तरह गुलजार दाढ़ी...”

“फिर काबुली का नाम लिया तो जीभ पकड़कर खींच लूँगी।”



हरगोबिन ने जीभ बाहर निकालकर दिखलाई। अर्थात् खींच ले।

...पाँच साल पहले गुल मुहम्मद आगा उधार कपड़ा लगाने के लिए गाँव में आता था और मोदिआइन के ओसारे पर दुकान लगाकर बैठता था। आगा कपड़ा देते समय बहुत मीठा बोलता और वसूली के समय शोर-शराबे से एक का दो वसूलता। एक बार कई उधार लेनेवालों ने मिलकर काबुली की ऐसी मरम्मत कर दी कि फिर लौटकर गाँव में नहीं आया। लेकिन इसके बाद ही दुखनी मोदिआइन लाल मोदिआइन हो गई।... काबुली क्या, काबुली बादाम के नाम से भी चिढ़ने लगी मोदिआइन। गाँव के नाचनेवालों ने नाच में काबुली का स्वांग किया था- “तुम अमारा मुलुक जाएगा मोदिआइन? हम काबुली बादाम-पिस्ता-अखरोट खिलाएगा...!” मोदिआइन बड़बड़ती, गाली देती हुई चली गई तो बड़ी बहुरिया ने हरगोबिन से कहा, “हरगोबिन भाई, तुमको एक संवाद ले जाना है। आज ही। बोलो, जाओगे न?” “कहाँ?”

“मेरी माँ के पास।”

हरगोबिन बड़ी बहुरिया की छलछलाई आँखों में डूब गया, “कहिए, क्या संवाद है?”

संवाद सुनाते समय बड़ी बहुरिया सिसकने लगी। हरगोबिन की आँखें भी भर आईं... बड़ी हवेली की लक्ष्मी को पहली बार इस तरह सिसकते देखा है हरगोबिन ने। वह बोला, “बड़ी बहुरिया, दिल को कड़ा कीजिए।”

“और कितना कड़ा करूँ दिल?... माँ से कहना, मैं भाई-भाभियों की नौकरी कर के पेट पालूँगी। बच्चों की जूठन खाकर एक कोने में पड़ी रहूँगी, लेकिन यहाँ अब नहीं... अब नहीं रह सकूँगी।... कहना, यदि माँ मुझे यहाँ से नहीं ले जाएगी तो मैं किसी दिन गले में घड़ा बाँधकर पोखरे में डूब मरूँगी।... बथुआ-साग खाकर कब तक जियूँ? किसलिए... किसके लिए?”

हरगोबिन का रोम-रोम कलपने लगा। देवर-देवरानियाँ भी कितने बेदर्द हैं। ठीक अगहनी धान के समय बाल-बच्चों को लेकर शहर से आएँगे। दस-पंद्रह दिनों में कर्ज-उधार की ढेरी लगाकर, वापस जाते समय दो-दो मन के हिसाब से चावल-चूड़ा ले जाएँगे। फिर आम के मौसम में आकर हाजिर। कच्चा-पक्का आम तोड़कर बोरियों में बंद करके चले जाएँगे। फिर उलटकर कभी नहीं देखते... राक्षस हैं सब! बड़ी बहुरिया आँचल के खूँट से पाँच रुपए का एक गंदा नोट निकालकर बोली, “पूरा राह-खर्च भी नहीं जुटा सकी। आने का खर्च माँ से माँग लेना। उम्मीद है, भैया तुम्हारे साथ ही आवेंगे।”

हरगोबिन बोला, “बड़ी बहुरिया, राह-खर्च देने की ज़रूरत नहीं। मैं इंतज़ाम कर लूँगा।”

“तुम कहाँ से इंतज़ाम करोगे?”

“मैं आज दस बजे की गाड़ी से ही जा रहा हूँ।”

बड़ी बहुरिया हाथ में नोट लेकर चुपचाप, भावशून्य दृष्टि से हरगोबिन को देखती रही। हरगोबिन हवेली से बाहर आ गया। उसने सुना, बड़ी बहुरिया कह रही थी, “मैं तुम्हारी राह देख रही हूँ।”

संवदिया!... अर्थात् संदेशवाहक! हरगोबिन संवदिया!... संवाद पहुँचाने का काम सभी नहीं कर सकते। आदमी भगवान के घर से संवदिया बनकर आता है। संवाद के प्रत्येक शब्द को याद रखना, जिस सुर और स्वर में संवाद सुनाया गया है, ठीक उसी ढंग से जाकर सुनाना सहज काम नहीं। गाँव के लोगों की ग़लत धारण है कि निठल्ला, कामचोर और पेटू आदमी ही संवदिया का काम करता है। न आगे नाथ, न पीछे पगहा। बिना मजूरी लिए ही जो गाँव-गाँव संवाद पहुँचावे, उसको और क्या कहेंगे?... औरतों का गुलाम। शराब-सी मीठी बोली सुनकर ही नशे में आ जाए, ऐसे मर्द को भी भला मर्द कहेंगे? किंतु, गाँव में कौन ऐसा है, जिसके घर की माँ-बहू-बेटी का संवाद हरगोबिन ने नहीं पहुँचाया

है?... लेकिन ऐसा संवाद पहली बार ले जा रहा है वह। हरगोबिन को पुराने दिनों और संवादों की याद आने लगी। एक करुण गीत की भूली हुई कड़ी फिर उसके कानों के पास गूँजने लगी-

“पैर्याँ पड़ूँ दाढ़ी धर्सँ...

हमारो संवाद ले ले जाहु रे संवदिया-या-या!...”

बड़ी बहुरिया के संवाद का प्रत्येक शब्द उसके मन में काँटे की तरह चुभ रहा है, किसके भरोसे यहाँ रहूँगी? एक नौकर था, वह भी कल भाग गया। गाय खूँटे से बँधी भूखी-प्यासी हिकर रही है। मैं किसके लिए इतना दुख झेलूँ? हरगोबिन ने अपने पास बैठे हुए एक यात्री से पूछा, “क्यों भाईसाहब, थाना सहरपुर में डाकगाड़ी रुकती है या नहीं?”

यात्री ने मानो झुँझलाकर कहा, “थाना सहरपुर में सभी गाड़ियाँ रुकती हैं।”

हरगोबिन ने भाँप लिया, यह आदमी चिड़िचिड़े स्वभाव का है, इससे कोई बातचीत नहीं जमेगी। वह फिर बड़ी बहुरिया के संवाद को मन-ही-मन दुहराने लगा... लेकिन, संवाद सुनाते समय वह अपने कलेजे को कैसे संभाल सकेगा! बड़ी बहुरिया संवाद कहते समय जहाँ-जहाँ रोई है, वहाँ वह भी रोएगा!

कटिहार जंक्शन पहुँचकर उसने देखा, पंद्रह-बीस साल में बहुत कुछ बदल गया है। अब स्टेशन पर उतरकर किसी से कुछ पूछने की कोई जरूरत नहीं। गाड़ी पहुँची और तुरंत भाँपे से आवाज़ अपने-आप निकलने लगी “थाना सहरपुर, खगड़िया और बरौनी जानेवाले यात्री तीन नंबर प्लेटफार्म पर चले जाएँ। गाड़ी लगी हुई है।” हरगोबिन प्रसन्न हुआ कटिहार पहुँचने के बाद ही मालूम होता है कि सचमुच सुराज हुआ है। इससे पहले कटिहार पहुँचकर किस गाड़ी में चढ़े और किधर जाएँ, इस पूछताछ में ही कितनी बार उसकी गाड़ी छूट गई है।

गाड़ी बदलने के बाद फिर बड़ी बहुरिया का करुण मुखड़ा उसकी आँखों के सामने उभर गया... “हरगोबिन भाई, माँ से कहना, भगवान ने आँखें फेर लीं, लेकिन मेरी माँ तो है... किसलिए... किसके लिए... मैं बथुआ-साग खाकर कब तक जीऊँ?”

थाना सहरपुर स्टेशन पर गाड़ी पहुँची तो हरगोबिन का जी भारी हो गया। इससे पहले भी कई भला-बुरा संवाद लेकर वह इस गाँव में आया है, कभी ऐसा नहीं हुआ। उसके पैर गाँव की ओर बढ़ ही नहीं रहे थे। इसी पगड़ंडी से बड़ी बहुरिया अपने मैके लौट आएगी। गाँव छोड़कर चली जाएगी। फिर कभी नहीं आएगी!

हरगोबिन का मन कलपने लगा तब गाँव में क्या रह जाएगा? गाँव की लक्ष्मी ही गाँव छोड़कर जाएगी!... किस मुँह से वह ऐसा संवाद सुनाएगा? कैसे कहेगा कि बड़ी बहुरिया बथुआ-साग खाकर गुजारा कर रही है?... सुननेवाले हरगोबिन के गाँव का नाम लेकर थूकेंगे वैसा गाँव है, जहाँ लक्ष्मी जैसी बहुरिया दुख भोग रही है!

अनिच्छापूर्वक हरगोबिन ने गाँव में प्रवेश किया।

हरगोबिन को देखते ही गाँव के लोगों ने पहचान लिया जलालगढ़ गाँव का संवदिया आया है!... न जाने क्या संवाद लेकर आया है!

“राम-राम भाई! कहो, यथार्थ समाचार ठीक है न?”

“राम-राम, भैयाजी! भगवान की दया से आनंदी है।”

“उधर पानी-बूँदी पड़ा है?”

बड़ी बहुरिया के बड़े भाई ने हरगोबिन को नहीं पहचाना। हरगोबिन ने अपना परिचय दिया, तो उन्होंने सबसे पहले अपनी बहन का समाचार पूछा, “दीदी कैसी है?”

“भगवान की दया से सब राजी-खुशी है।”

मुँह-हाथ धोने के बाद हरगोबिन की बुलाहट आँगन में हुई। अब हरगोबिन काँपने लगा। उसका कलेजा धड़कने लगा... ऐसा तो कभी नहीं हुआ?... बड़ी बहुरिया की छलछलाई हुई आँखें! सिसकियों से भरा हुआ संवाद! उसने बड़ी बहुरिया की बूढ़ी माता को पाँवलागी की। बूढ़ी माता ने पूछा, “कहो बेटा, क्या समाचार है?” मायजी, आपके आशीर्वाद से सब ठीक हैं। कोई संवाद?

ए?... संवाद... जी, संवाद तो कोई नहीं मैं कल सिरसिया गाँव आया था, तो सोचा कि एक बार चलकर आप लोगों का दर्शन कर लूँ।

बूढ़ी माता हरगोबिन की बात सुनकर कुछ उदास-सी हो गई, “तो तुम कोई संवाद लेकर नहीं आए हो?

जी नहीं, कोई संवाद नहीं... ऐसे बड़ी बहुरिया ने कहा है कि यदि छुट्टी हुई तो दशहरा के समय गंगाजी के मेले में आकर माँ से भेंट मुलाकात कर जाऊँगी। बूढ़ी माता चुप रही। हरगोबिन बोला, “छुट्टी कैसे मिले? सारी गृहस्थी बड़ी बहुरिया के ऊपर ही हैं।

बूढ़ी माता बोली, “मैं तो बबुआ से कह रही थी कि जाकर दीदी को लिवा लाओ, यहीं रहेगी। वहाँ अब क्या रह गया है? जमीन-जायदाद तो सब चली ही गई। तीनों देवर अब शहर में जाकर बस गए हैं। कोई खोज-खबर भी नहीं लेते। मेरी बेटी अकेली...।

“नहीं मायजी! जमीन-जायदाद अभी भी कुछ कम नहीं। जो है, वही बहुत है। टूट भी गई है, है तो आखिर बड़ी हवेली ही। ‘सवाँग’ नहीं है, यह बात ठीक है! मगर, बड़ी बहुरिया का तो सारा गाँव ही परिवार है। हमारे गाँव की लक्ष्मी है बड़ी बहुरिया... गाँव की लक्ष्मी गाँव को छोड़कर शहर कैसे जाएगी? यों, देवर लोग हर बार आकर ले जाने की ज़िद करते हैं।”

बूढ़ी माता ने अपने हाथ से हरगोबिन को जलपान लाकर दिया, “पहले थोड़ा जलपान कर लो, बबुआ!”

जलपान करते समय हरगोबिन को लगा, बड़ी बहुरिया दालान पर बैठी उसकी राह देख रही है। भूखी-प्यासी... रात में भोजन करते समय भी बड़ी बहुरिया मानो सामने आकर बैठ गई “कर्ज़-उधार अब कोई देते नहीं... एक पेट तो कुत्ता भी पालता है, लेकिन मैं?... माँ से कहना...!”

हरगोबिन ने थाली की ओर देखा दाल-भात, तीन किस्म की भाजी, धी, पापड़, अचार... बड़ी बहुरिया बथुआ-साग उबालकर खा रही होगी। बूढ़ी माता ने कहा, “क्यों बबुआ, खाते क्यों नहीं?” “मायजी, पेट भर जलपान जो कर लिया है।”

“अरे, जवान आदमी तो पाँच बार जलपान कर के भी एक थाल भात खाता है।”

हरगोबिन ने कुछ नहीं खाया। खाया नहीं गया। संवादिया डटकर खाता है और ‘अफर’ कर सोता है, किंतु हरगोबिन को नींद नहीं आ रही है... यह उसने क्या किया? क्या कर दिया? वह किसलिए आया था? वह झूठ क्यों बोला?... नहीं, नहीं, सुबह उठते ही वह बूढ़ी माता को बड़ी बहुरिया का सही संवाद सुना देगा। अक्षर-अक्षर “मायजी, आपकी इकलौती बेटी बहुत कष्ट में है। आज ही किसी को भेजकर बुलवा लीजिए। नहीं तो वह सचमुच कुछ कर बैठेगी। आखिर, किसके लिए वह इतना सहेगी!... बड़ी बहुरिया ने कहा है, भाभी के बच्चों की जूठन खाकर वह एक कोने में पड़ी रहेगी...!”

रातभर हरगोबिन को नींद नहीं आई। आँखों के सामने बड़ी बहुरिया बैठी रही- सिसकती, आँसू पोंछती हुई। सुबह उठकर उसने दिल को कड़ा किया। वह संविदिया है। उसका काम है सही-सही संवाद पहुँचाना। वह बड़ी बहुरिया का संवाद सुनाने के लिए बूढ़ी माता के पास जा बैठा। बूढ़ी माता ने पूछा, “क्या है, बबुआ? कुछ कहोगे?”

“मायजी, मुझे इसी गाड़ी से वापस जाना होगा। कई दिन हो गए।”

“अरे, इतनी जल्दी क्या है! एकाध दिन रहकर मेहमानी कर लो।”

“नहीं, मायजी! इस बार आज्ञा दीजिए। दशहरा में मैं भी बड़ी बहुरिया के साथ आऊँगा। तब डटकर पंद्रह दिनों तक मेहमानी करूँगा।”

बूढ़ी माता बोली, “ऐसी जल्दी थी तो आए ही क्यों? सोचा था, बिटिया के लिए दही-चूड़ा भेजूँगी। सो दही तो नहीं हो सकेगा आज। थोड़ा चूड़ा है बासमती धान का, लेते जाओ।”

चूड़ा की पोटली बगल में लेकर हरगोबिन आँगन से निकला तो बड़ी बहुरिया के बड़े भाई ने पूछा, “क्यों भाई, राह-खर्च तो है?”

हरगोबिन बोला, “भैयाजी, आपकी दुआ से किसी बात की कमी नहीं।”

स्टेशन पर पहुँचकर हरगोबिन ने हिसाब किया। उसके पास जितने पैसे हैं, उससे कठिहार तक का टिकट ही वह खरीद सकेगा। और यदि चौअन्नी नकली साबित हुई तो सैमापुर तक ही... बिना टिकट के वह एक स्टेशन भी नहीं जा सकेगा। डर के मारे उसकी देह का आधा खून सूख जाएगा।

गाड़ी में बैठते ही उसकी हालत अजीब हो गई। वह कहाँ आया था? क्या करके जा रहा है? बड़ी बहुरिया को क्या जवाब देगा? यदि गाड़ी में निरगुन गानेवाला सूरदास नहीं आता, तो न जाने उसकी क्या हालत होती! सूरदास के गीतों को सुनकर उसका जी स्थिर हुआ, थोड़ा-

...कि आहो रामा!

नैहरा को सुख सपन भयो अब,

देश पिया को डोलिया चली-ई-ई-ई,

भाई रोओ मति, यही करम की गति... !!

सूरदास चला गया तो उसके मन में बैठी हुई बड़ी बहुरिया फिर रोने लगी किसके लिए इतना दुख सहूँ? पाँच बजे भोर में वह कठिहार स्टेशन पहुँचा। भोंपे से आवाज आ रही थी “बैरगाड़ी, बक्सर और जलालगढ़ जानेवाले यात्री एक नंबर प्लेटफार्म पर चले जाएँ।” हरगोबिन को जलालगढ़ जाना है, किंतु वह एक नंबर प्लेटफार्म पर कैसे जाएगा? उसके

पास तो कटिहार तक का ही टिकट है... जलालगढ़! बीस कोस!... बड़ी बहुरिया राह देख रही होगी... बीस कोस की मंजिल भी कोई दूर की मंजिल है? वह पैदल ही जाएगा। हरगोबिन महावीर बीज मंत्र बजरंगी का नाम लेकर पैदल ही चल पड़ा।

दस कोस तक वह मानो 'बाई' के झोंके पर रहा। कस्बा-शहर पहुँचकर उसने पेटभर पानी पी लिया। पोटली में नाक लगाकर उसने सूँघा अहा! बासमती धान का चूड़ा है। माँ की सौगात बेटी के लिए। नहीं, वह इससे एक मुट्ठी भी नहीं खा सकेगा... कितु, वह क्या जवाब देगा बड़ी बहुरिया को? उसके पैर लड़खड़ाए... उँहूँ, अभी वह कुछ नहीं सोचेगा। अभी सिर्फ चलना है। जल्दी पहुँचना है, गाँव... बड़ी बहुरिया की डबडबायी हुई आँखें उसको गाँव की ओर खींच रही थीं मैं बैठी राह ताकती रहूँगी!... पंद्रह कोस!... माँ से कहना, अब नहीं रह सकूँगी। सोलह... सत्रह... अठारह... जलालगढ़ स्टेशन का सिगनल दिखलाई पड़ता है... गाँव का ताड़ सिर ऊँचा करके उसकी चाल को देख रहा है। उसी ताड़ के नीचे बड़ी हवेली के दालान पर चुपचाप टकटकी लगाकर राह देख रही है बड़ी बहुरिया भूखी-प्यासी "हमरो संवाद ले जाहु रे संवदिया-या-या!!"

लेकिन, यह कहाँ चला आया हरगोबिन? यह कौन गाँव है? पहली साँझ में ही अमावस्या का अंधकार! किस राह से वह किधर जा रहा है?... नदी है! कहाँ से आ गई नदी? नदी नहीं, खेत हैं... ये झोंपड़े हैं या हाथियों का झुंड? ताड़ का पेड़ किधर गया? वह राह भूलकर न जाने कहाँ भटक गया... इस गाँव में आदमी नहीं रहते क्या?... कहीं कोई रोशनी नहीं, किससे पूछे?... कहाँ, वह रोशनी है या आँखें? वह खड़ा है या चल रहा है? वह गाड़ी में है या धरती पर? "हरगोबिन भाई, आ गए?" बड़ी बहुरिया की बोली या कटिहार स्टेशन का भोंपा बोल रहा है?

"बड़ी बहुरिया?"

हरगोबिन ने हाथ से टटोलकर देखा, वह बिछावन पर लेटा हुआ है। सामने बैठी छाया को छूकर बोला, "बड़ी बहुरिया?"

"हरगोबिन भाई, अब जी वैसा है?... लो, एक घूँट दूध और पी लो... मुँह खोलो... हाँ... पी जाओ। पीओ!"

हरगोबिन होश में आया... बड़ी बहुरिया का पैर पकड़ लिया, "बड़ी बहुरिया!... मुझे माफ करो। मैं तुम्हारा संवाद नहीं कह सका... तुम गाँव छोड़कर मत जाओ। तुमको कोई कष्ट नहीं होने दूँगा। मैं तुम्हारा बेटा! बड़ी बहुरिया, तुम मेरी माँ, सारे गाँव की माँ हो! मैं अब निठल्ला बैठा नहीं रहूँगा। तुम्हारा सब काम करूँगा... बोलो, बड़ी माँ, तुम गाँव छोड़कर चली तो नहीं जाओगी? बोलो...!"

बड़ी बहुरिया गरम दूध में एक मुट्ठी बासमती चूड़ा डालकर मसलने लगी... संवाद भेजने के बाद से ही वह अपनी गलती पर पछता रही थी।

अभ्यास प्रश्न

मिलान करें :-

क	ख
1. गाँव की लक्ष्मी	● मोदिआइन
2. काबुली-कायदा	● बड़ी बहुरिया
3. संदेशवाहक	● हरगोबिन
4. टूटी ड्योढ़ी	● बड़ी हवेली
5. बथुआ-साग	● बड़ी बहुरिया का भोजन

निम्नलिखित कथनों को पढ़ें और बताएँ कि वे सही हैं या गलत :-

1. हरगोबिन को आश्र्य हुआ क्योंकि इस आधुनिक युग में भी किसी को संविदिया की आवश्यकता थी।
2. बड़ी हवेली में अब पहले की तरह नौकर-चाकर और मजदूरों की भीड़ रहती है।
3. मोदिआइन और हरगोबिन के बीच संवाद में हास्य का पुट है।
4. हरगोबिन ने बड़ी बहुरिया का संदेश उनकी माँ तक ठीक-ठीक पहुँचाया।
5. बड़ी बहुरिया ने हरगोबिन को संदेश ले जाने के लिए पाँच रूपये का नोट दिया था।
6. हरगोबिन ने अपनी यात्रा के दौरान बासमती चूड़ा खाकर पेट भरा।
7. कहानी में कटिहार जंक्शन को आधुनिकता के प्रतीक के रूप में दर्शाया गया है।
8. बड़ी बहुरिया ने अपनी माँ से कहा कि वह भाई-भाभियों की नौकरी करके पेट पालेगी।
9. हरगोबिन ने अंत में बड़ी बहुरिया से कहा कि वह उनका बेटा है और गाँव छोड़कर नहीं जाने देगा।
10. कहानी में गुल मुहम्मद आगा एक दयालु कपड़ा व्यापारी था।

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 2-3 वाक्यों में दें:-

1. हरगोबिन को संविदिया के रूप में क्यों बुलाया गया था? वह इस बुलाहट पर क्यों आश्र्यचकित हुआ?
2. बड़ी बहुरिया की दयनीय स्थिति का वर्णन कहानी में कैसे किया गया है?
3. मोदिआइन और हरगोबिन के बीच हुए संवाद से क्या हास्य उत्पन्न होता है?

4. हरगोबिन ने बड़ी बहुरिया के संदेश को उनकी माँ तक क्यों नहीं पहुँचाया?

5. कहानी में बड़ी हवेली के पतन का चित्रण कैसे किया गया है?

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 5-10 वाक्यों में दे :-

1. हरगोबिन के चरित्र का विश्लेषण करें। वह एक संवदिया के रूप में अपनी जिम्मेदारी को कैसे निभाता है?

2. कहानी में बड़ी बहुरिया के दुख और सामाजिक उपेक्षा को लेखक ने कैसे दर्शाया है?

3. ‘संवदिया’ कहानी में ग्रामीण समाज की बदलती परिस्थितियों का चित्रण कैसे हुआ है? उदाहरण सहित स्पष्ट करें।

4. हरगोबिन का अंतिम निर्णय गाँव की लक्ष्मी (बड़ी बहुरिया) को गाँव में ही रोकने का क्यों था? इसके पीछे उसके भावनात्मक और सामाजिक कारणों पर प्रकाश डालें।

5. कहानी में परंपरा और आधुनिकता के टकराव को लेखक ने कैसे चित्रित किया है?

शब्दावली	
संविधिया	संदेशग्राहक; वह व्यक्ति जो गाँव-गाँव जाकर संदेश पहुँचाता है।
हवेली	बड़ा और भव्य मकान, जो सामान्यतः धनी परिवारों का होता है।
झोढ़ी	घर का प्रवेश द्वार या बरामदा।
बड़ी बहुरिया	परिवार की सबसे बड़ी बहू, जो सम्मानित और जिम्मेदार मानी जाती है।
सूप	अनाज साफ करने का बाँस या लकड़ी का बना हुआ औज़ार।
मोदिआइन	गाँव की किराने की दुकान चलाने वाली महिला; यहाँ एक पात्र का नाम।
काबुली-कायदा	कर्ज वसूली का कठोर और चालाकी भरा तरीका।
चीर-हरण	जबरदस्ती कपड़े खींचना; यहाँ सांकेतिक रूप में अपमान और लूट का प्रतीक।
सिसकना	धीमे स्वर में रोना या सुबकना।
बथुआ-साग	एक पत्तेदार सब्जी, जो गरीबों का भोजन माना जाता है।
राह-खर्च	यात्रा के लिए दिया जाने वाला खर्च या भत्ता।
निठल्ला	आलसी या बेकार बैठने वाला व्यक्ति।
जलपान	हल्का नाश्ता या खाने की छोटी-मोटी चीजें।
पगड़ंडी	गाँव में चलने का संकरा रास्ता।
बजरंगी	हनुमान जी का एक नाम, जो शक्ति और भक्ति का प्रतीक है।

4

कारतूस

पात्र: कर्नल, लेफिटनेंट, सिपाही, सवार

अवधि: 5 मिनट

समय: रात्रि का

स्थान: गोरखपुर के जंगल में कर्नल कॉलेज के खेमे का अंदरूनी हिस्सा।

(दो अंग्रेज बैठे बातें कर रहे हैं। कर्नल कॉलेज और एक लेफिटनेंट खेमे के बाहर हैं। चाँदनी छिटकी हुई है, अंदर लैप जल रहा है।)

कर्नल: जंगल की जिंदगी बड़ी खतरनाक होती है।

लेफिटनेंट: हफ्तों हो गए यहाँ खेमा डाले हुए। सिपाही भी तंग आ गए हैं। ये वज़ीर अली आदमी है या भूत, हाथ ही नहीं लगता।

कर्नल : उसके अफसाने सुनकर रॉबिनहुड के कारनामे याद आ जाते हैं। अंग्रेजों के खिलाफ उसके दिल में किस कदर नफरत है! कोई पाँच महीने हुकूमत की होगी। मगर इस पाँच महीने में वह अवधि के दरबार को अंग्रेजी असर से बिल्कुल पाक कर देने में तकरीबन कामयाब हो गया था।

लेफिटनेंट : कर्नल कॉलेज, ये सआदत अली कौन है?

कर्नल : आसिफउद्दौला का भाई है। वज़ीर अली का और उसका दुश्मन। असल में नवाब आसिफउद्दौला के यहाँ लड़के की कोई उम्मीद नहीं थी। वज़ीर अली की पैदाइश को सआदत अली ने अपनी मौत समझा।

लेफिटनेंट : मगर सआदत अली को अवधि के तख्त पर बिठाने में क्या मसलहत थी?

कर्नल : सआदत अली हमारा दोस्त है और बहुत ऐशपसंद आदमी है, इसलिए उसने हमें अपनी आधी मुमिलिकता, जायदाद, दौलत दे दी और दस लाख रुपये नगद। अब वो भी मज़े करता है और हम भी।

लेफिटनेंट : सुना है ये वज़ीर अली अफ़गानिस्तान के बादशाह शाहे-शमा को हिंदुस्तान पर हमला करने की दावत दे रहा है।

कर्नल : अफ़गानिस्तान को हमले की दावत सबसे पहले असल में टीपू सुल्तान ने दी। फिर वज़ीर अली ने भी उसे दिल्ली बुलाया और फिर शमसुद्दौला ने भी।

लेफिटनेंट : कौन शमसुद्दौला?

कर्नल : नवाब बंगाल का रिश्तेदार भाई। बहुत ही खतरनाक आदमी है।

लेफिटनेंट : इसका तो मतलब ये हुआ कि कंपनी के खिलाफ सारे हिंदुस्तान में एक लहर दौड़ गई है।

कर्नल: जी हाँ, और अगर ये कामयाब हो गई तो बक्सर और प्लासी के कारनामे धरे रह जाएँगे और कंपनी जो कुछ लॉर्ड क्लाइव के हाथों हासिल कर चुकी है, लॉर्ड वेल्जली के हाथों सब खो बैठेगी।

लेफिटनेंट : वज़ीर अली की आजादी बहुत खतरनाक है। हमें किसी न किसी तरह इस शख्स को गिरफ्तार कर ही लेना चाहिए।

कर्नल : पूरी एक फौज उसके पीछे है और बरसों से वह हमारी आँखों में धूल झोंक रहा है। इन्हीं जंगलों में फिर रहा है और हाथ नहीं आता। उसके साथ चंद जाँबाज हैं, मुझीभर आदमी मगर ये दमखम हैं।

लेफिटनेंट : सुना है वज़ीर अली जाती तौर पर भी बहुत बहादुर आदमी है।

कर्नल : बहादुर न होता तो यूँ कंपनी के वकील का कत्ल कर देता?

लेफिटनेंट : ये कत्ल का क्या किस्सा हुआ था, कर्नल?

कर्नल : उसको उसके पद से हटाने के बाद हमने वज़ीर अली को बनारस पहुँचा दिया और तीन लाख रुपया सालाना वज़ीफ़ा मुकर्रर कर दिया। कुछ महीने बाद गवर्नर जनरल ने उसे कलकत्ता तलब किया। वज़ीर अली कंपनी के वकील के पास गया जो बनारस में रहता था और शिकायत की कि गवर्नर जनरल उसे क्यों तलब करता है। वकील ने परवाह नहीं की और उल्टा बुरा-भला कह दिया। वज़ीर अली के दिल में वैसे ही अंग्रेज़ों के खिलाफ नफरत भरी थी, उसने खंजर से वकील का काम तमाम कर दिया।

लेफिटनेंट : और भाग गया?

कर्नल: अपने जानिसारों समेत आजमगढ़ की तरफ भाग गया। वहाँ के हुक्मरान ने उन लोगों को धाघरा तक पहुँचा दिया। अब ये कारवाँ इन जंगलों में कई साल से भटक रहा है।

लेफिटनेंट: मगर वज़ीर अली की स्कीम क्या है?

कर्नल: स्कीम ये है कि किसी तरह नेपाल पहुँच जाए, अफगानी हमले का इंतजार करे, अपनी ताकत बढ़ाए, सआदत अली को पद से हटाकर खुद अवध पर कब्जा करे और अंग्रेज़ों को हिंदुस्तान से निकाल दे।

लेफिटनेंट: नेपाल पहुँचना तो कोई ऐसा मुश्किल नहीं। मुमकिन है कि पहुँच गया हो।

कर्नल: हमारी फौजें और नवाब सआदत अली खाँ के सिपाही बहुत सख्ती से उसका पीछा कर रहे हैं। हमें अच्छी तरह मालूम है कि वो इन्हीं जंगलों में हैं।
(एक सिपाही तेजी से दाखिल होता है)

कर्नल: क्या बात है?

सिपाही: दूर से गर्द उठती दिखाई दे रही है।

कर्नल: सिपाहियों से कह दो कि तैयार रहें।
(सिपाही सलाम कर के चला जाता है)

लेफिटनेंट: गर्द तो ऐसी उड़ रही है जैसे कि पूरा एक काफिला चला आ रहा हो मगर मुझे तो एक ही सवार नज़र आता है।

कर्नल: हाँ, एक ही सवार है। सरपट घोड़ा दौड़ाए चला आ रहा है।

लेफिटनेंट: और सीधा हमारी तरफ आता मालूम होता है।
(कर्नल ताली बजाकर सिपाही को बुलाता है)

कर्नल: सिपाहियों से कहो, इस सवार पर नज़र रखें कि ये किस तरफ जा रहा है।
(सिपाही चला जाता है)

लेफिटनेंट: शक की कोई गुंजाइश नहीं। तेजी से इसी तरफ आ रहा है।
(टापों की आवाज करीब आकर रुक जाती है)

सवार (बाहर से) : मुझे कर्नल से मिलना है।

गोरा (चिल्लाकर) : बहुत खूब।

सवार : (बाहर से) सी।

गोरा (अंदर आकर): हुजूर, सवार आपसे मिलना चाहता है।

कर्नल: भेज दो।

लेफ्टिनेंट: वज़ीर अली का कोई आदमी होगा। हमसे मिलकर उसे गिरफ्तार करवाना चाहता होगा।

कर्नल: खामोश रहो।

(सवार सिपाही के साथ अंदर आता है)

सवार (आते ही पुकारता है): तन्हाई! तन्हाई!

कर्नल: साहब, यहाँ कोई गैर आदमी नहीं है। आप राज़-ए-दिल कह दें।

सवार: दीवार हमगोश दारद, तन्हाई!

(कर्नल, लेफ्टिनेंट और सिपाही को इशारा करता है। दोनों बाहर चले जाते हैं। जब कर्नल और सवार खेमे में तन्हा रह जाते हैं तो सवार चारों तरफ देखकर कहता है)

सवार: आपने इस मुकाम पर क्यों खेमा डाला है?

कर्नल: कंपनी का हुक्म है कि वज़ीर अली को गिरफ्तार किया जाए।

सवार: लेकिन इतना लाव-लश्कर?

कर्नल: गिरफ्तारी में मदद देने के लिए।

सवार: वज़ीर अली की गिरफ्तारी बहुत मुश्किल है, साहब।

कर्नल: क्यों?

सवार: वो एक जाँबाज़ सिपाही है।

कर्नल: मैंने भी ये सुन रखा है। आप क्या चाहते हैं?

सवार: चंद कारतूस।

कर्नल: किसलिए?

सवार: वज़ीर अली को गिरफ्तार करने के लिए।

कर्नल: ये लो दस कारतूस।

सवार (मुस्कुराते हुए): शुक्रिया।

कर्नल: आपका नाम?

सवार: वजीर अली। आपने मुझे कारतूस दिए इसलिए आपकी जान बरखता हूँ।
(यह कहकर बाहर चला जाता है। टापों का शेर सुनाई देता है। कर्नल सन्नाटे में है। हक्का-बक्का खड़ा है कि लेफ्टिनेंट अंदर आता है)

लेफ्टिनेंट: कौन था?

कर्नल (धीरे से अपने आप से): एक जाँबाज़ सिपाही।

अभ्यास प्रश्न

निम्नलिखित कथनों को पढ़ें और बताएँ कि वे सही हैं या गलत :-

- वज़ीर अली ने अफ़गानिस्तान के बादशाह को हिंदुस्तान पर हमला करने की दावत दी थी।
- सआदत अली वज़ीर अली का भाई था।
- वज़ीर अली ने बनारस में कंपनी के वकील को खंजर से मार डाला था।
- कर्नल कॉलेज ने सवार को कारतूस देने से मना कर दिया था।
- वज़ीर अली का लक्ष्य नेपाल पहुँचकर अंग्रेजों को हिंदुस्तान से निकालना था।

निम्नलिखित का मिलान करें:-

क	ख
1. वज़ीर अली का दुश्मन	● गोरखपुर का जंगल
2. कंपनी का वकील	● सआदत अली
3. खेमा डालने का स्थान	● बनारस
4. अफ़गानिस्तान का बादशाह	● शाहे-शमा
5. शमसुद्दौला	● नवाब बंगाल का रिश्तेदार

रिक्त स्थान भरें :-

- वज़ीर अली ने _____ को हिंदुस्तान पर हमला करने की दावत दी थी।
- सआदत अली ने अंग्रेजों को अपनी आधी _____ और दस लाख रुपये नगद दिए।
- कर्नल कॉलेज ने सवार को _____ कारतूस दिए।
- वज़ीर अली ने कंपनी के वकील को _____ में खंजर से मार डाला।
- सवार ने कर्नल से मिलने के लिए _____ शब्द का उपयोग किया।

एक-वाक्य में उत्तर दें :-

- वज़ीर अली ने कर्नल को अपनी जान क्यों बर्छी?
- सआदत अली को अंग्रेजों का दोस्त क्यों माना जाता था?

3. वज़ीर अली की स्कीम का अंतिम लक्ष्य क्या था?

4. कर्नल ने सवार को देखकर क्या प्रतिक्रिया दी?

5. शमसुद्धौला कौन था?

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 3-5 वाक्यों में दें :-

1. कर्नल और लेफिटनेंट किसके पीछे गोरखपुर के जंगल में खेमा डाले हुए थे?

2. वज़ीर अली के दिल में अंग्रेजों के प्रति नफ़रत का क्या कारण था?

3. सआदत अली को अवध के तख्त पर बिठाने में अंग्रेजों की क्या मसलहत थी?

4. वज़ीर अली ने कंपनी के वकील का कत्ल क्यों किया था?

5. सवार के खेमे में प्रवेश करने पर कर्नल ने क्या इशारा किया और क्यों?

5

मेरे बचपन के दिन

महादेवी वर्मा

बचपन की स्मृतियों में एक विचित्र-सा आकर्षण होता है। कभी-कभी लगता है, जैसे सपने में सब देखा होगा। परिस्थितियाँ बहुत बदल जाती हैं। अपने परिवार में मैं कई पीढ़ियों के बाद उत्पन्न हुई परिवार में प्रायः दो सौ वर्ष तक कोई लड़की थी ही नहीं। सुना है, उसके पहले लड़कियों को पैदा होते ही परमधाम भेज देते थे। फिर मेरे बाबा ने बहुत दुर्गा पूजा की। हमारी कुल-देवी दुर्गा थीं। मैं उत्पन्न हुई तो मेरी बड़ी खातिर हुई और मुझे वह सब नहीं सहना पड़ा जो अन्य लड़कियों को सहना पड़ता है। परिवार में बाबा फारसी और उर्दू जानते थे। पिता ने अंग्रेजी पढ़ी थी। हिंदी का कोई वातावरण नहीं था।



मेरी माता जबलपुर से आई तब वे अपने साथ हिंदी लाई। वे पूजा-पाठ भी बहुत करती थीं। पहले-पहल उन्होंने मुझको 'पंचतंत्र' पढ़ना सिखाया। बाबा कहते थे, इसको हम विदुषी बनाएँ। मेरे संबंध में उनका विचार बहुत ऊँचा रहा। इसलिए 'पंचतंत्र' भी पढ़ा मैंने, संस्कृत भी पढ़ी। ये अवश्य चाहते थे कि मैं उर्दू-फारसी सीख लूँ लेकिन वह मेरे वश की नहीं थी। मैंने जब एक दिन मौलवी साहब को देखा तो बस, दूसरे दिन मैं चारपाई के नीचे जा छिपी। तब पंडित जी आए संस्कृत पढ़ाने। माँ थोड़ी संस्कृत जानती थीं। गीता में उन्हें विशेष रुचि थी। पूजा-पाठ के समय मैं भी बैठ जाती थी और संस्कृत सुनती थी। उसके उपरांत उन्होंने मिशन स्कूल में रख दिया मुझको। मिशन स्कूल में वातावरण दूसरा था, प्रार्थना दूसरी थी। मेरा मन नहीं लगा। वहाँ जाना बंद कर दिया। जाने में रोने-धोने लगी। तब उन्होंने मुझको क्रास्थवेट गर्ल्स कॉलेज में भेजा, जहाँ मैं पाँचवें दर्जे में भर्ती हुई। यहाँ का वातावरण बहुत अच्छा था। उस समय हिंदू लड़कियाँ भी थीं, ईसाई लड़कियाँ भी थीं। हम लोगों का एक ही मेस था। उस मेस में प्याज तक नहीं बनता था। वहाँ छात्रावास के हर एक कमरे में चार छात्राएँ रहती थीं। उनमें पहली ही साथिन सुभद्रा कुमारी मिलीं। सातवें दर्जे में वे मुझसे दो साल सीनियर थीं। वे कविता लिखती थीं और मैं भी बचपन से तुक मिलाती आई थी। बचपन में माँ लिखती थीं, पद भी गाती थीं। मीरा के पद विशेष रूप से गाती थीं। सवेरे 'जागिए कृपानिधान पंछी बन बोले' यही सुना जाता था। प्रभाती गाती थीं। शाम को मीरा का कोई पद गाती थीं। सुन-सुनकर मैंने भी ब्रजभाषा में लिखना आरंभ किया। यहाँ आकर देखा कि सुभद्रा कुमारी जी खड़ी बोली में लिखती थीं। मैं भी वैसा ही लिखने लगी। लेकिन सुभद्रा जी बड़ी थीं, प्रतिष्ठित हो चुकी थीं। उनसे छिपा छिपाकर लिखती थी मैं।

एक दिन उन्होंने कहा, 'महादेवी, तुम कविता लिखती हो?' तो मैंने डर के मारे कहा, 'नहीं।' अंत में उन्होंने मेरी डेस्क की किताबों की तलाशी ली और बहुत-सा निकल पड़ा उसमें से। तब जैसे किसी अपराधी को पकड़ते हैं, ऐसे उन्होंने एक हाथ में कागज लिए और एक हाथ से मुझको पकड़ा और पूरे होस्टल में दिखा आई कि ये कविता लिखती है।

फिर हम दोनों की मित्रता हो गई। क्रास्थवेट में एक पेड़ की डाल नीची थी। उस डाल पर हम लोग बैठ जाते थे। जब और लड़कियाँ खेलती थीं तब हम लोग तुक मिलाते थे। उस समय एक पत्रिका निकलती थी 'स्त्री दर्पण' उसी में भेज देते थे। अपनी तुकबंदी छप भी जाती थी। फिर यहाँ कवि सम्मेलन होने लगे तो हम लोग भी उनमें जाने लगे। हिंदी का उस समय प्रचार-प्रसार था। मैं सन् 1917 में यहाँ आई थी। उसके उपरांत गांधी जी का सत्याग्रह आरंभ हो गया और आनंद भवन स्वतंत्रता के संघर्ष का केंद्र हो गया। जहाँ-तहाँ हिंदी का भी प्रचार चलता था। कवि सम्मेलन होते थे तो क्रास्थवेट से मैडम हमको साथ लेकर जाती थीं। हम कविता सुनाते थे। कभी हरिओंध जी अध्यक्ष होते थे, कभी श्रीधर पाठक होते थे, कभी रत्नाकर जी होते थे, कभी कोई होता था। कब हमारा नाम पुकारा जाए, बेचैनी से सुनते रहते थे। मुझको प्रायः प्रथम पुरस्कार मिलता था। सौ से कम पदक नहीं मिले होंगे उसमें। एक बार की घटना याद आती है कि एक कविता पर मुझे चाँदी का एक कटोरा मिला। बड़ा नक्काशीदार, सुंदर। उस दिन सुभद्रा नहीं गई थीं। सुभद्रा प्रायः नहीं जाती थीं कवि सम्मेलन में। मैंने उनसे आकर कहा, 'देखो, यह मिला।'

सुभद्रा ने कहा, 'ठीक है, अब तुम एक दिन खीर बनाओ और मुझको इस कटोरे में खिलाओ।' उसी बीच आनंद भवन में बापू आए। हम लोग तब अपने जेब खर्च में से हमेशा एक-एक, दो-दो आने देश के लिए बचाते थे और जब बापू आते थे तो वह पैसा उन्हें दे देते थे। उस दिन जब बापू के पास मैं गई तो अपना कटोरा भी लेती गई। मैंने निकालकर बापू को दिखाया। मैंने कहा, 'कविता सुनाने पर मुझको यह कटोरा मिला है।' कहने लगे, 'अच्छा, दिखा तो मुझको।' मैंने कटोरा उनकी ओर बढ़ा दिया तो उसे हाथ में लेकर बोले, 'तू देती है इसे?' अब मैं क्या कहती? मैंने दे दिया और लौट आई। दुख यह हुआ कि कटोरा लेकर कहते, कविता क्या है? पर कविता सुनाने को उन्होंने नहीं कहा। लौटकर अब मैंने सुभद्रा जी से कहा कि कटोरा तो चला गया। सुभद्रा जी ने कहा, 'और जाओ दिखाने!' फिर बोलीं, 'देखो भाई, खीर तो तुमको बनानी होगी। अब तुम चाहे पीतल की कटोरी में खिलाओ, चाहे फूल के कटोरे में फिर भी मुझे मन ही मन प्रसन्नता हो रही थी कि पुरस्कार में मिला अपना कटोरा मैंने बापू को दे दिया। सुभद्रा जी छात्रावास छोड़कर चली गईं। तब उनकी जगह एक मराठी लड़की जेबुन्निसा हमारे कमरे में आकर रही। वह कोल्हापुर से आई थी। जेबुन मेरा बहुत-सा काम कर देती थी। वह मेरी डेस्क साफ़ कर देती थी, किताबें ठीक से रख देती थी और इस तरह मुझे कविता के लिए कुछ और अवकाश मिल जाता था। जेबुन मराठी शब्दों से मिली-जुली हिंदी बोलती थी। मैं भी उससे कुछ-कुछ मराठी सीखने लगी थी। वहाँ एक उस्तानी जी थीं जीनत बेगम। जेबुन जब 'इकड़े-तिकड़े' या 'लोकर लोकर' जैसे मराठी शब्दों को मिलाकर कुछ कहती तो उस्तानी जी से टोके बिना न रहा जाता था 'वाह। देसी कौवा, मराठी बोली! जेबुन कहती थी, 'नहीं उस्तानी जी, यह मराठी कौवा मराठी बोलता है।' जेबुन मराठी महिलाओं की तरह किनारीदार साड़ी और वैसा ही ब्लाउज पहनती थी। कहती थी, 'हम मराठी हूँ तो मराठी बोलेंगे।'

उस समय यह देखा मैंने कि सांप्रदायिकता नहीं थी। जो अवधि की लड़कियाँ थीं, वे आपस में अवधी बोलती थीं: बुदेलखंड की आती थी, वे बुंदेली में बोलती थीं। कोई अंतर नहीं आता था और हम पढ़ते हिंदी थे। उर्दू भी हमको पढ़ाई जाती थी, परंतु आपस में हम अपनी भाषा में ही बोलती थीं। यह बहुत बड़ी बात थी। हम एक मेस में खाते थे, एक प्रार्थना में खड़े होते थे; कोई विवाद नहीं होता था।

मैं जब विद्यापीठ आई, तब तक मेरे बचपन का वही क्रम चला जो आज तक चलता आ रहा है। कभी-कभी बचपन के संस्कार ऐसे होते हैं कि हम बड़े हो जाते हैं, तब तक चलते हैं। बचपन का एक और भी संस्कार था कि हम जहाँ रहते थे वहाँ जवारा के नवाब रहते थे। उनकी नवाबी छिन गई थी। वे बेचारे एक बंगले में रहते थे। उसी कंपाउंड में हम लोग रहते थे। बेगम साहिबा कहती थीं 'हमको ताई कहो!' हम लोग उनको 'ताई साहिबा' कहते थे। उनके बच्चे हमारी

माँ को चाची जान कहते थे। हमारे जन्मदिन वहाँ मनाए जाते थे। उनके जन्मदिन हमारे यहाँ मनाए जाते थे। उनका एक लड़का था। उसको राखी बाँधने के लिए वे कहती थीं। बहनों को राखी बाँधनी चाहिए। राखी के दिन सवेरे से उसको पानी भी नहीं देती थीं। कहती थीं, राखी के दिन बहनें राखी बाँध जाएँ तब तक भाई को निराहार रहना चाहिए। बार-बार कहलाती थीं कि 'भाई भूखा बैठा है, राखी बाँधवाने के लिए।' फिर हम लोग जाते थे। हमको लहरिए या कुछ मिलते थे। इसी तरह मुहर्रम में हरे कपड़े उनके बनते थे तो हमारे भी बनते थे। फिर एक हमारा छोटा भाई हुआ वहाँ, तो ताई साहिबा ने पिताजी से कहा, 'देवर साहब से कहो, वो मेरा नेग ठीक करके रखें। मैं शाम को आऊँगी।' वे कपड़े-वपड़े लेकर आईं। हमारी माँ को वे दुलहन कहती थीं। कहने लगीं 'दुलहन, जिनके ताई-चाची नहीं होती हैं वो अपनी माँ के कपड़े पहनते हैं, नहीं तो छह महीने तक चाची ताई पहनाती हैं। मैं इस बच्चे के लिए कपड़े लाई हूँ। यह बड़ा सुंदर है।

मैं अपनी तरफ से इसका नाम 'मनमोहन रखती हूँ।' वही प्रोफेसर मनमोहन वर्मा आगे चलकर जम्मू यूनिवर्सिटी के वाइस चांसलर रहे, गोरखपुर यूनिवर्सिटी के भी रहे। कहने का तात्पर्य यह कि मेरे छोटे भाई का नाम वही चला जो ताई साहिबा ने दिया। उनके यहाँ भी हिंदी चलती थी, उर्दू भी चलती थी। यों, अपने घर में वे अवधी बोलते थे। वातावरण ऐसा था उस समय कि हम लोग बहुत निकट थे। आज की स्थिति देखकर लगता है, जैसे वह सपना ही था। आज वह सपना खो गया। शायद वह सपना सत्य हो जाता तो भारत की कथा कुछ और होती।

निम्नलिखित कथनों को पढ़ें और बताएँ कि वे सही हैं या गलत :-

- महादेवी के परिवार में दो सौ वर्षों तक कोई लड़की पैदा नहीं हुई थी।
- महादेवी की माँ उर्दू और फारसी में निपुण थीं।
- सुभद्रा कुमारी ने महादेवी की कविताएँ उनकी डेस्क से निकालकर सबको दिखाईं।
- महादेवी को कवि सम्मेलनों में प्रथम पुरस्कार कभी नहीं मिला।
- ताई साहिबा ने महादेवी के छोटे भाई का नाम मनमोहन रखा था।

निम्नलिखित कॉलम 'क' और कॉलम 'ख' का मिलान करें:-

'क'		'ख'
1. कुल-देवी	●	सुभद्रा कुमारी
2. क्रास्थवेट गर्ल्स कॉलेज	●	दुर्गा
3. कविता लेखन की सहेली	●	मिशन स्कूल
4. प्रथम स्कूल	●	मनमोहन
5. ताई साहिबा का नामकरण	●	छात्रावास

रिक्त स्थान भरें :-

1. महादेवी के बाबा चाहते थे कि वह _____ बनें।
2. महादेवी की माँ को _____ में विशेष रुचि थी।
3. सुभद्रा कुमारी और महादेवी अपनी कविताएँ _____ पत्रिका में भेजते थे।
4. महादेवी ने बापू को _____ में मिला चाँदी का कटोरा दे दिया।
5. ताई साहिबा ने महादेवी के छोटे भाई को _____ नाम दिया।

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-वाक्य में दें :-

1. महादेवी को मिशन स्कूल क्यों छोड़ना पड़ा?
2. सुभद्रा कुमारी ने महादेवी की कविताएँ कैसे खोजीं?
3. महादेवी और सुभद्रा कवि सम्मेलनों में क्या करती थीं?
4. ताई साहिबा ने महादेवी के छोटे भाई के लिए क्या किया?
5. महादेवी ने बापू को चाँदी का कटोरा क्यों दे दिया?

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 3-5 वाक्यों में दें :-

1. महादेवी वर्मा के परिवार में लड़कियों की स्थिति के बारे में क्या बताया गया है?
2. महादेवी की माँ ने उन्हें सबसे पहले कौन-सी पुस्तक पढ़ना सिखाया और क्यों?
3. महादेवी ने उर्दू-फ़ारसी सीखने से क्यों इनकार कर दिया?
4. क्रास्थवेट गर्ल्स कॉलेज का वातावरण कैसा था और वहाँ महादेवी को क्या पसंद आया?
5. सुभद्रा कुमारी और महादेवी की मित्रता कैसे शुरू हुई?

6

एवरेस्ट मेरी शिखर यात्रा (यात्रा-वृत्तांत)

-बछेद्री पाल

बछेद्री ने एवरेस्ट विजय की अपनी रोमांचक पर्वतारोहण-यात्रा का संपूर्ण विवरण स्वयं ही कलमबंद किया है। प्रस्तुत अंश उसी विवरण में से लिया गया है। यह अंश बछेद्री के उस अंतिम पड़ाव से शिखर तक पहुँचकर तिरंगा लहराने के पल-पल का ब्योरा बयान करता है। इसे पढ़ते हुए ऐसा लगता है, मानो पाठक भी उनके कदम-से-कदम मिलाता हुआ, सभी खतरों को खुद झेलता है।



एवरेस्ट अभियान दल 7 मार्च को दिल्ली से काठमांडू के लिए हवाई जहाज से चल दिया। एक मजबूत अग्रिम दल बहुत पहले ही चला गया था जिससे कि वह हमारे 'बेस कैंप' पहुँचने से पहले दुर्गम हिमपात के रास्ते को साफ कर सके।

नमचे बाजार, शेरपालैंड का एक सर्वाधिक महत्वपूर्ण नगरीय क्षेत्र है। अधिकांश शेरपा इसी स्थान तथा यहाँ के आसपास के गाँवों के होते हैं। यह नमचे बाजार ही था, जहाँ से मैंने सर्वप्रथम एवरेस्ट को निहारा, जो नेपालियों में 'सागरमाथा' के नाम से प्रसिद्ध है। मुझे यह नाम अच्छा लगा।

एवरेस्ट की तरफ गौर से देखते हुए, मैंने एक भारी बर्फ का बड़ा पुंज (प्लूम) देखा, जो पर्वत-शिखर पर लहराता एक ध्वज-सा लग रहा था। मुझे बताया गया कि यह दृश्य शिखर की ऊपरी सतह के आसपास 150 किलोमीटर अथवा इससे भी अधिक की गति से हवा चलने के कारण बनता था, क्योंकि तेज हवा से सूखी बर्फ पर्वत पर उड़ती रहती थी। बर्फ का यह ध्वज 10 किलोमीटर या इससे भी लंबा हो सकता था। शिखर पर जानेवाले प्रत्येक व्यक्ति को दक्षिण-पूर्वी पहाड़ी पर इन तूफानों को झेलना पड़ता था, विशेषकर खराब मौसम में। यह मुझे डराने के लिए काफ़ी था, फिर भी मैं एवरेस्ट के प्रति विचित्र रूप से आकर्षित थी और इसकी कठिनतम चुनौतियों का सामना करना चाहती थी।

जब हम 26 मार्च को पैरिच पहुँचे, हमें हिमस्खलन के कारण हुई एक शेरपा कुली की मृत्यु का दुःखद समाचार मिला। खुंभु हिमपात पर जानेवाले अभियान-दल के रास्ते के बाईं तरफ सीधी पहाड़ी के धसकने से, ल्होत्से की ओर से एक बहुत बड़ी बर्फ की चट्टान नीचे खिसक आई थी। सोलह शेरपा कुलियों के दल में से एक की मृत्यु हो गई और चार घायल हो गए थे।

इस समाचार के कारण अभियान दल के सदस्यों के चेहरों पर छाए अवसाद को देखकर हमारे नेता कर्नल खुल्लर ने स्पष्ट किया कि एवरेस्ट जैसे महान अभियान में खतरों को और कभी-कभी तो मृत्यु भी आदमी को सहज भाव से स्वीकार करनी चाहिए।

उपनेता प्रेमचंद, जो अग्रिम दल का नेतृत्व कर रहे थे, 26 मार्च को पैरिच लौट आए। उन्होंने हमारी पहली बड़ी बाधा खुंभु हिमपात की स्थिति से हमें अवगत कराया। उन्होंने कहा कि उनके दल ने कैंप-एक (6000 मी.) जो हिमपात के ठीक ऊपर है, वहाँ तक का रास्ता साफ कर दिया है। उन्होंने यह भी बताया कि पुल बनाकर, रस्सियाँ बाँधकर तथा झांडियों से रास्ता चिह्नित कर, सभी बड़ी कठिनाइयों का जायज़ा ले लिया गया है। उन्होंने इस पर भी ध्यान दिलाया कि ग्लेशियर बर्फ की नदी है और बर्फ का गिरना अभी जारी है। हिमपात में अनियमित और अनिश्चित बदलाव के कारण अभी तक किए गए सभी काम व्यर्थ हो सकते हैं और हमें रास्ता खोलने का काम दोबारा करना पड़ सकता है।

‘बेस कैंप’ में पहुँचने से पहले हमें एक और मृत्यु की खबर मिली। जलवायु अनुकूल न होने के कारण एक रसोई सहायक की मृत्यु हो गई थी। निश्चित रूप से हम आशाजनक स्थिति में नहीं चल रहे थे।

एवरेस्ट शिखर को मैंने पहले दो बार देखा था, लेकिन एक दूरी से। बेस कैंप पहुँचने पर दूसरे दिन मैंने एवरेस्ट पर्वत तथा इसकी अन्य श्रेणियों को देखा। मैं भौंचकी होकर खड़ी रह गई और एवरेस्ट, ल्होत्से और नुत्से की ऊँचाइयों से घिरी, बर्फीली टेढ़ी-मेढ़ी नदी को निहारती रही।

हिमपात अपने आप में एक तरह से बर्फ के खंडों का अव्यवस्थित ढंग से गिरना ही था। हमें बताया गया कि ग्लेशियर के बहाव से अकसर बर्फ में हलचल हो जाती थी, जिससे बड़ी-बड़ी बर्फ की चट्टानें तत्काल गिर जाया करती थीं और अन्य कारणों से भी अचानक प्रायः खतरनाक स्थिति धारण कर लेती थीं। सीधे धरातल पर दरार पड़ने का विचार और इस दरार का गहरे-चौड़े हिम-विदर में बदल जाने का मात्र ख्याल ही बहुत डरावना था। इससे भी ज्यादा भयानक इस बात की जानकारी थी कि हमारे संपूर्ण प्रवास के दौरान हिमपात लगभग एक दर्जन आरोहियों और वुल्फों को प्रतिदिन छूता रहेगा।

दूसरे दिन नए आने वाले अपने अधिकांश सामान को हम हिमपात के आधे रास्ते तक ले गए। डॉ. मीनू मेहता ने हमें एल्यूमिनियम की सीढ़ियों से अस्थायी पुलों का बनाना, लट्टूं और रस्सियों का उपयोग, बर्फ की आड़ी-तिरछी दीवारों पर रस्सियों को बाँधना और हमारे अग्रिम दल के अभियंत्रण कार्यों के बारे में विस्तृत जानकारी दी। तीसरा दिन हिमपात से कैंप-एक तक सामान ढोकर चढ़ाई का अभ्यास करने के लिए निश्चित था। रीता गोबू तथा मैं साथ-साथ चढ़ रहे थे। हमारे पास एक वॉकी-टॉकी था, जिससे हम अपने हर कदम की जानकारी बेस कैंप पर दे रहे थे। कर्नल खुल्लर उस समय खुश हुए, जब हमने उन्हें अपने पहुँचने की सूचना दी क्योंकि कैंप-एक पर पहुँचने वाली केवल हम दो ही महिलाएँ थीं।

अंगदोरजी, लोपसांग और गगन बिरसा अंततः साउथ कोल पहुँच गए और 29 अप्रैल को 7900 मीटर पर उन्होंने कैंप-चार लगाया। यह संतोषजनक प्रगति थी। जब अप्रैल में मैं बेस कैंप में थी, तेनजिंग अपनी सबसे छोटी सुपुत्री डेकी के साथ हमारे पास आए थे। उन्होंने इस बात पर विशेष महत्व दिया कि दल के प्रत्येक सदस्य और प्रत्येक शेरपा वुल्फ से बातचीत की जाए। जब मेरी बारी आई, मैंने अपना परिचय यह कहकर दिया कि मैं बिल्कुल ही नौसिखिया हूँ और एवरेस्ट मेरा पहला अभियान है। तेनजिंग हँसे और मुझसे कहा कि एवरेस्ट उनके लिए भी पहला अभियान है, लेकिन यह भी स्पष्ट किया कि शिखर पर पहुँचने से पहले उन्हें सात बार एवरेस्ट पर जाना पड़ा था। फिर अपना हाथ मेरे कंधे पर रखते हुए उन्होंने कहा, "तुम एक पक्की पर्वतीय लड़की लगती हो। तुम्हें तो शिखर पर पहले ही प्रयास में पहुँच जाना चाहिए।"

15-16 मई 1984 को बुद्ध पूर्णिमा के दिन मैं ल्होत्से की बर्फीली सीधी ढलान पर लगाए गए सुंदर रंगीन नायलॉन के बने तंबू के कैंप-तीन में थी। कैंप में 10 और व्यक्ति थे। लोपसांग, तशारिंग मेरे तंबू में थे, एन.डी. शेरपा तथा आठ अन्य मजबूत शरीर और ऊँचाइयों में रहने वाले शेरपा दूसरे तंबुओं में थे। मैं गहरी नींद में सोई हुई थी कि रात में 12.30 बजे के लगभग मेरे सिर के पिछले हिस्से में किसी एक सर्वत चीज़ के टकराने से मेरी नींद अचानक खुल गई और साथ ही एक जोरदार धमाका भी हुआ। तभी मुझे महसूस हुआ कि एक ठंडी, बहुत भारी कोई चीज़ मेरे शरीर पर से मुझे धकेलती हुई चल रही है। मुझे साँस लेने में भी कठिनाई हो रही थी।



यह क्या हो गया था? एक लंबा बर्फ का पिंड हमारे कैंप के ठीक ऊपर ल्होत्से ग्लेशियर से टूटकर नीचे आ गिरा था और उसका विशाल हिमपुंज बन गया था। हिमखंडों, बर्फ के टुकड़ों तथा जमी हुई बर्फ के इस विशालकाय पुंज ने, एक एक्सप्रेस रेलगाड़ी की तेज गति और भीषण गर्जना के साथ, सीधी ढलान से नीचे आते हुए हमारे कैंप को तहस-नहस कर दिया। वास्तव में हर व्यक्ति को चोट लगी थी। यह एक आश्र्य था कि किसी की मृत्यु नहीं हुई थी। लोपसांग अपनी स्विस छुरी की मदद से हमारे तंबू का रास्ता साफ करने में सफल हो गए थे और तुरंत ही अत्यंत तेजी से मुझे बचाने की कोशिश में लग गए। थोड़ी-सी भी देर का सीधा अर्ध था मृत्यु। बड़े-बड़े हिमपिंडों को मुश्किल से हटाते हुए उन्होंने मेरे चारों तरफ की कड़ी जमी बर्फ की खुदाई की और मुझे उस बर्फ की कब्र से निकाल बाहर खींच लाने में सफल हो गए।

सुबह तक सारे सुरक्षा दल आ गए थे और 16 मई को प्रातः 8 बजे तक हम प्रायः सभी कैंप-दो पर पहुँच गए थे। जिस शेरपा की टाँग की हड्डी टूट गई थी, उसे एक खुद के बनाए स्ट्रेचर पर लिटाकर नीचे लाए। हमारे नेता कर्नल खुल्लर के शब्दों में, "यह इतनी ऊँचाई पर सुरक्षा-कार्य का एक जबरदस्त साहसिक कार्य था।"

सभी नौ पर्वत सदस्य चोटों अथवा टूटी हड्डियों आदि के कारण बेस कैंप में भेजना पड़ा। तभी कर्नल खुल्लर मेरी तरफ मुड़कर कहने लगे, "क्या तुम भयभीत थीं?" "जी हाँ।" "क्या तुम वापिस जाना चाहोगी?" "नहीं," मैंने बिना किसी हिचकिचाहट के उत्तर दिया।

जैसे ही मैं साउथ कोल कैंप पहुँची, मैंने अगले दिन की अपनी महत्वपूर्ण चढ़ाई की तैयारी शुरू कर दी। मैंने खाना, पिघलाने की गैस तथा कुछ ऑक्सीजन सिलिंडर इकट्ठे किए। जब दोपहर डेढ़ बजे बिस्सा आया, उसने मुझे चाय के लिए पानी गरम करते देखा। की, जय और मीनू अभी बहुत पीछे थे। मैं चिंतित थी क्योंकि मुझे अगले दिन उनके साथ ही चढ़ाई करनी थी। वे धीरे-धीरे आ रहे थे क्योंकि वे भारी बोझ लेकर और बिना ऑक्सीजन के चल रहे थे।

दोपहर बाद मैंने अपने दल के दूसरे सदस्यों की मदद करने और अपने एक थरमस को जूस से और दूसरे को गरम चाय से भरने के लिए नीचे जाने का निश्चय किया। जैसे ही मैं बर्फली हवा में तंबू से बाहर निकली, मेरी मुलाकात मीनू से हुई। की और जय अभी कुछ पीछे थे। मुझे जय जेनेवा स्पर की छोटी के ठीक नीचे मिला। उसने कृतज्ञतापूर्वक चाय वैरह पी लेकिन मुझे और आगे जाने से रोकने की कोशिश की। मगर मुझे की से भी मिलना था। थोड़ा-सा और आगे नीचे उतरने पर मैंने की को देखा। वह मुझे देखकर हक्का-बक्का रह गया।

"तुमने इतनी बड़ी जोखिम क्यों ली बचेंद्री?" मैंने उसे दृढ़तापूर्वक कहा, "मैं भी औरों की तरह एक पर्वतारोही हूँ, इसीलिए इस दल में आई हूँ। शारीरिक रूप से मैं ठीक हूँ। इसलिए मुझे अपने दल के सदस्यों की मदद क्यों नहीं करनी चाहिए।" की हँसा और उसने पेय पदार्थ से प्यास बुझाई, लेकिन उसने मुझे अपना किट ले जाने नहीं दिया।

थोड़ी देर बाद साउथ कोल कैंप से ल्हाटू और बिस्सा हमसे मिलने नीचे उतर आए और हम सब साउथ कोल पर जैसी भी सुरक्षा और आराम की जगह उपलब्ध थी, वहाँ लौट आए। साउथ कोल 'पृथ्वी पर बहुत अधिक कठोर' जगह के नाम से प्रसिद्ध है।

आगले दिन मैं सुबह चार बजे उठ गई। बर्फ पिघलाया और चाय बनाई, कुछ बिस्कुट और आधी चॉकलेट का हलका नाश्ता करने के बाद मैं लगभग साढ़े पाँच बजे अपने तंबू से निकल पड़ी। अंगदोरजी बाहर खड़ा था और कोई आसपास नहीं था।

अंगदोरजी बिना ऑक्सीजन के ही चढ़ाई करने वाला था। लेकिन इस कारण उसके पैर ठंडे पड़ जाते थे। इसलिए वह ऊँचाई पर लंबे समय तक खुले में और रात्रि में शिखर कैंप पर नहीं जाना चाहता था। इसलिए उसे या तो उसी दिन चोटी तक चढ़कर साउथ कोल पर वापस आ जाना था अथवा अपने प्रयास को छोड़ देना था। वह तुरंत ही चढ़ाई शुरू करना चाहता था... और उसने मुझसे पूछा, क्या मैं उसके साथ जाना चाहूँगी? एक ही दिन मैं साउथ कोल से चोटी तक जाना और वापस आना बहुत कठिन और श्रमसाध्य होगा! इसके अलावा यदि अंगदोरजी के पैर ठंडे पड़ गए तो उसके लौटकर आने का भी जोखिम था। मुझे फिर भी अंगदोरजी पर विश्वास था और साथ-साथ मैं आरोहण की क्षमता और कर्मठता के बारे में भी आश्वस्त थी। अन्य कोई भी व्यक्ति इस समय साथ चलने के लिए तैयार नहीं था।

सुबह 6.20 पर जब अंगदोरजी और मैं साउथ कोल से बाहर निकले तो दिन ऊपर चढ़ आया था। हलकी-हलकी हवा चल रही थी, लेकिन ठंड भी बहुत अधिक थी। मैं अपने आरोही उपकरण में काफी सुरक्षित और गरम थी। हमने बिना रस्सी के ही चढ़ाई की। अंगदोरजी एक निश्चित गति से ऊपर चढ़ते गए और मुझे भी उनके साथ चलने में कोई कठिनाई नहीं हुई।

जमे हुए बर्फ की सीधी व ढलाऊं चट्टानें इतनी सख्त और भुरभुरी थीं, मानो शीशे की चादरें बिछी हों। हमें बर्फ काटने के फावड़े का इस्तेमाल करना ही पड़ा और मुझे इतनी सख्ती से फावड़ा चलाना पड़ा जिससे कि उस जमे हुए बर्फ की धरती को फावड़े के दाँते काट सकें। मैंने उन खतरनाक स्थलों पर हर कदम अच्छी तरह सोच-समझकर उठाया।

दो घंटे से कम समय में ही हम शिखर कैंप पर पहुँच गए। अंगदोरजी ने पीछे मुड़कर देखा और मुझसे कहा कि क्या मैं थक गई हूँ। मैंने जवाब दिया, "नहीं।" जिसे सुनकर वे बहुत अधिक आश्वर्यचकित और आनंदित हुए। उन्होंने कहा कि पहले वाले दल ने शिखर कैंप पर पहुँचने में चार घंटे लगाए थे और यदि हम इसी गति से चलते रहे तो हम शिखर पर दोपहर एक बजे तक पहुँच जाएँगे।

एवरेस्ट शिखर की चोटी पर इतनी जगह नहीं थी कि दो व्यक्ति साथ-साथ खड़े हो सकें। चारों तरफ हजारों मीटर लंबी सीधी ढलान को देखते हुए हमारे सामने सुरक्षा का प्रश्न था। हमने पहले बर्फ के फावड़े से बर्फ की खुदाई कर अपने आपको सुरक्षित रूप से स्थिर किया। इसके बाद, मैं अपने घुटनों के बल बैठी, बर्फ पर अपने माथे को लगाकर मैंने 'सागरमाथा' के ताज का चुंबन लिया। बिना उठे ही मैंने अपने थैले से दुर्गा माँ का चित्र और हनुमान चालीसा निकाला।

मैंने इनको अपने साथ लाए लाल कपड़े में लपेटा, छोटी-सी पूजा-अर्चना की और इनको बर्फ में दबा दिया। आनंद के इस क्षण में मुझे अपने माता-पिता का ध्यान आया। जैसे ही मैं उठी, मैंने अपने हाथ जोड़े और मैं अपने रज्जु-नेता अंगदोरजी के प्रति आदर भाव से झुकी। अंगदोरजी जिन्होंने मुझे प्रोत्साहित किया और मुझे लक्ष्य तक पहुँचाया।

मैंने उन्हें बिना ऑक्सीजन के एवरेस्ट की दूसरी चढ़ाई चढ़ने पर बधाई भी दी। उन्होंने मुझे गले से लगाया और मेरे कानों में फुसफुसाया, "दीदी, तुमने अच्छी चढ़ाई की। मैं बहुत प्रसन्न हूँ!"

कुछ देर बाद सोनम पुलजर पहुँचे और उन्होंने फोटो लेने शुरू कर दिए। इस समय तक ल्हाटू ने हमारे नेता को एवरेस्ट पर हम चारों के होने की सूचना दे दी थी। तब मेरे हाथ में वॉकी-टॉकी दिया गया। कर्नल खुल्लर हमारी सफलता से बहुत प्रसन्न थे। मुझे बधाई देते हुए उन्होंने कहा, "मैं तुम्हारी इस अनूठी उपलब्धि के लिए तुम्हारे माता-पिता को बधाई देना चाहूँगा!" वे बोले कि देश को तुम पर गर्व है और अब तुम ऐसे संसार में वापस जाओगी, जो तुम्हारे अपने पीछे छोड़े हुए संसार से एकदम भिन्न होगा!

अभ्यास प्रश्न

मिलान करें :-

क्र	ख
1. नमचे बाजार	● एवरेस्ट का स्थानीय नाम
2. सागरमाथा	● शेरपालैंड का महत्वपूर्ण नगरीय क्षेत्र
3. खुंभु हिमपात	● शिखर पर तेज हवाओं के कारण बनने वाला दृश्य
4. बर्फ का पुंज (प्लूम)	● बेस कैंप से पहले का खतरनाक क्षेत्र
5. साउथ कोल	● पृथ्वी पर सबसे कठोर जगह

रिक्त स्थान की पूर्ति करें :-

1. एवरेस्ट अभियान दल दिल्ली से _____ के लिए 7 मार्च को हवाई जहाज से रवाना हुआ।
2. बछेंद्री ने नमचे बाजार से पहली बार _____ को देखा।
3. शिखर पर 150 किलोमीटर प्रति घंटा की गति से चलने वाली हवाओं के कारण _____ बनता था।
4. पैरिच में एक शेरपा कुली की मृत्यु _____ के कारण हुई।
5. कैंप-एक की ऊँचाई _____ मीटर थी।
6. बछेंद्री ने शिखर पर पहुँचकर _____ और _____ को बर्फ में दबाया।
7. हिमस्खलन की घटना _____ को बुद्ध पूर्णिमा के दिन हुई।
8. साउथ कोल से शिखर तक बछेंद्री ने _____ के साथ चढ़ाई की।
9. बछेंद्री ने शिखर पर _____ के ताज का चुंबन लिया।
10. कर्नल खुल्लर ने बछेंद्री की सफलता पर उनके _____ को बधाई दी।

निम्नलिखित कथनों को पढ़ें और बताएँ कि वे सही हैं या गलत :-

1. एवरेस्ट अभियान दल 26 मार्च को दिल्ली से रवाना हुआ।
2. बछेंद्री ने नमचे बाजार से पहली बार ल्होत्से पर्वत को देखा।
3. खुंभु हिमपात पर रास्ता साफ करने के लिए अग्रिम दल ने पुल बनाए और रस्सियाँ बाँधीं।
4. बेस कैंप पहुँचने से पहले अभियान दल को तीन मौतों की खबर मिली।
5. बछेंद्री और रीता गोंबू कैंप-एक पर पहुँचने वाली पहली महिलाएँ थीं।
6. हिमस्खलन की घटना में बछेंद्री की मृत्यु हो गई थी।
7. साउथ कोल को 'पृथ्वी पर बहुत अधिक कठोर जगह' कहा जाता है।
8. बछेंद्री ने शिखर पर तिरंगा लहराया और कोई पूजा नहीं की।
9. अंगदोरजी ने ऑक्सीजन सिलिंडर के साथ शिखर की चढ़ाई की।
10. कर्नल खुल्लर ने कहा कि बछेंद्री की सफलता पर देश को गर्व है।

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 2-5 वाक्यों में दें :-

1. बछेंद्री पाल का एवरेस्ट अभियान दल दिल्ली से काठमांडू के लिए कब रवाना हुआ?
2. नमचे बाजार का क्या महत्व है, और बछेंद्री ने वहाँ से पहली बार क्या देखा?
3. एवरेस्ट के शिखर पर दिखने वाला बर्फ का पुंज (प्लूम) किस कारण बनता था?
4. पैरिच पहुँचने पर अभियान दल को कौन-सा दुखद समाचार मिला?
5. खुंभु हिमपात पर रास्ता साफ करने के लिए अग्रिम दल ने कौन-से कार्य किए?
6. बेस कैंप पहुँचने से पहले अभियान दल को कितनी मौतों की खबर मिली?
7. बछेंद्री ने एवरेस्ट शिखर को बेस कैंप से कितनी बार और किस दूरी से देखा था?
8. हिमस्खलन की घटना कब और कहाँ हुई, जिसमें बछेंद्री को चोटें आईं?
9. साउथ कोल कैंप को किस नाम से जाना जाता है, और क्यों?
10. बछेंद्री ने शिखर पर पहुँचकर कौन-सी पूजा-अर्चना की?

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 5-10 वाक्यों में दें :

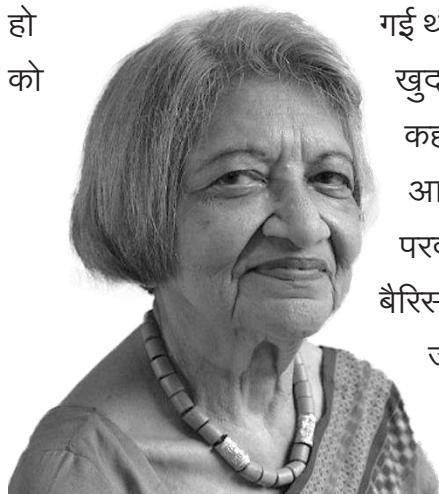
1. बछेंद्री पाल के एवरेस्ट अभियान के दौरान खुंभु हिमपात की चुनौतियों का वर्णन करें।
2. बछेंद्री ने एवरेस्ट शिखर पर पहुँचने से पहले किन खतरों का सामना किया ? इन खतरों ने उनके मनोबल को कैसे प्रभावित किया?
3. कर्नल खुल्लर ने अभियान दल के सामने एवरेस्ट जैसे महान अभियान में खतरों को स्वीकार करने के बारे में क्या कहा ?
4. हिमस्खलन की घटना के बाद बछेंद्री को कैसे बचाया गया, और इस घटना ने अभियान दल पर क्या प्रभाव डाला?
5. बछेंद्री और अंगदोरजी ने साउथ कोल से शिखर तक की चढ़ाई कैसे पूरी की? उनकी इस चढ़ाई की विशेषताएँ बताएँ।
6. बछेंद्री ने शिखर पर पहुँचकर किन भावनाओं का अनुभव किया, और उन्होंने वहाँ क्या-क्या किया?

शब्दावली

पर्वतारोहण	पहाड़ों पर चढ़ने की कला या गतिविधि; इस संदर्भ में एवरेस्ट पर चढ़ाई।
शिखर	पर्वत का सबसे ऊँचा बिंदु; यहाँ एवरेस्ट की चोटी।
तिरंगा	भारत का राष्ट्रीय ध्वज।
हिमपात	बर्फ का जमाव या बर्फला क्षेत्र, विशेषकर ग्लेशियर।
बेस कैंप	पर्वतारोहण अभियान का आधार शिविर, जहाँ से चढ़ाई शुरू होती है।
शेरपा	हिमालय क्षेत्र की एक जाति, जो पर्वतारोहण में सहायक के रूप में प्रसिद्ध है।
सागरमाथा	नेपाल में एवरेस्ट पर्वत का स्थानीय नाम।
हिमस्खलन	बर्फ या चट्टानों का अचानक नीचे खिसकना।
ग्लेशियर	बर्फ की विशाल नदी जो धीरे-धीरे बहती है।
प्लूम	बर्फ या धूल का बादलनुमा पुंज, जो हवा के कारण बनता है।
कैंप-एक, कैंप-तीन, कैंप-चार	पर्वतारोहण के दौरान विभिन्न ऊँचाइयों पर स्थापित अस्थायी शिविर।
साउथ कोल	एवरेस्ट पर एक महत्वपूर्ण बिंदु, जो शिखर से पहले आता है।
हिम-विदर	ग्लेशियर में गहरी दरारें।
वॉकी-टॉकी	छोटा रेडियो संचार उपकरण।
जय जेनेवा स्पर	एवरेस्ट पर एक विशिष्ट चट्टानी संरचना।
ऑक्सीजन सिलिंडर	उच्च ऊँचाई पर सांस लेने के लिए ऑक्सीजन की आपूर्ति।
अभियंत्रण कार्य	तकनीकी कार्य जैसे रसिसयाँ बाँधना, पुल बनाना।
बौद्ध पूर्णिमा	बौद्ध धर्म का एक पवित्र दिन, जिस दिन बछेंद्री कैंप-तीन में थीं।
नायलॉन तंबू	हल्के और मजबूत तंबू, जो पर्वतारोहण में उपयोग होते हैं।
हिमपुंज	बर्फ का विशाल जमाव या ढेर।
सुरक्षा-कार्य	आपात स्थिति में बचाव कार्य।
थरमस	गर्म या ठंडे पेय को संरक्षित रखने का उपकरण।
रज्जु-नेता	रस्सी के सहारे चढ़ाई का नेतृत्व करने वाला व्यक्ति।
दुर्गा माँ का चित्र	हिंदू देवी दुर्गा की तस्वीर, जो पूजा के लिए प्रयोग हुई।
हनुमान चालीसा	हनुमान को समर्पित भक्ति भजन।

-मृदुला गर्ग

मेरी एक नानी थीं। ज्ञाहिर है। पर मैंने उन्हें कभी देखा नहीं। मेरी माँ की शादी होने से पहले ही उनकी मृत्यु हो गई थी। शायद नानी से कहानी न सुन पाने के कारण बाद में, हम तीन बहनों को

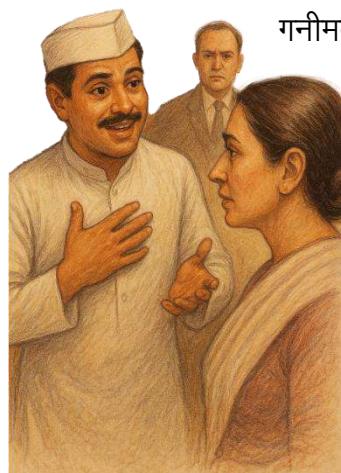


खुद कहानियाँ कहनी पड़ीं। नानी से कहानी भले न सुनी हो, नानी की कहानी ज़रूर सुनी और बहुत बाद में जाकर उसका असली मर्म समझ में आया। पहले इतना ही जाना कि मेरी नानी, पारंपरिक, अनपढ़, परदापरस्त औरत थीं, जिनके पति शादी के तुरंत बाद उन्हें छोड़कर बैरिस्ट्री पढ़ने विलायत चले गए थे। कैंब्रिज विश्वविद्यालय से डिग्री लेकर जब वे लौटे और विलायती रीति-रिवाज के संग ज़िंदगी बसर करने लगे तो, नानी के अपने रहन सहन पर, उसका कोई असर नहीं पड़ा, न उन्होंने अपनी किसी इच्छा-आकांक्षा या पसंद-नापसंद का इजहार पति पर कभी किया। पर जब कम-उम्र में नानी ने खुद को मौत के करीब पाया तो, पंद्रह वर्षीय इकलौती बेटी 'मेरी माँ' की शादी की फ़िक्र ने इतना डराया कि वे एकदम मुँहज़ोर हो उठीं। नाना से उन्होंने कहा कि वे परदे का लिहाज़ छोड़कर उनके दोस्त स्वतंत्रता-सेनानी प्यारेलाल शर्मा से मिलना चाहती हैं। सब दंग-हैरान रह गए। जिस परदापरस्त औरत ने पराए मर्द से क्या, खुद अपने मर्द से मुँह खोलकर बात नहीं की थी, आखिरी वक्त में अजनबी से क्या कहना चाह सकती है? पर नाना ने वक्त की कमी और मौके की नज़ाकत की लाज रखी। सवाल-जवाब में वक्त बर्बाद करने के बजाय फ़ौरन जाकर दोस्त को लिवा लाए और बीबी के हुज़ूर में पेश कर दिया।

अब जो नानी ने कहा, वह और भी हैरतअंगेज़ था। उन्होंने कहा, "वचन दीजिए कि मेरी लड़की के लिए वर आप तय करेंगे। मेरे पति तो साहब हैं और मैं नहीं चाहती मेरी बेटी की शादी, साहबों के फ़रमाबरदार से हो। आप अपनी तरह आज़ादी का सिपाही ढूँढ़कर उसकी शादी करवा दीजिएगा।"

कौन कह सकता था कि अपनी आज़ादी से पूरी तरह बेखबर उस औरत के मन में देश की आज़ादी के लिए ऐसा जुनून होगा। बाद में मेरी समझ में आया कि दरअसल वे निजी जीवन में भी काफ़ी आज़ाद-ख़्याल रही होंगी। ठीक है, उन्होंने नाना की ज़िंदगी में कोई दखल नहीं दिया, न उसमें साझेदारी की, पर अपनी ज़िंदगी को अपने ढंग से जीती ज़रूर रहीं। पारंपरिक, घरेलू, उबाऊ और खामोश ज़िंदगी जीने में, आज के हिसाब से, क्रांतिकारी चाहे कुछ न रहा हो — दूसरे की तरह जीने के लिए मजबूर न होने में असली आज़ादी कुछ ज़्यादा ही थी।

खैर, इस तरह मेरी माँ की शादी ऐसे पढ़े-लिखे होनहार लड़के से हुई, जिसे आज्ञादी के आंदोलन में हिस्सा लेने के अपराध में आई.सी.एस. के इम्तिहान में बैठने से रोक दिया गया था और जिसकी जेब में पुश्टैनी पैसा-धेला एक नहीं था। माँ, बेचारी, अपनी माँ और गांधी जी के सिद्धांतों के चक्कर में सादा जीवन जीने और ऊँचे ख्याल रखने पर मजबूर हुईं। हाल उनका यह था कि खादी की साड़ी उन्हें इतनी भारी लगती थी कि कमर चनका खा जाती। रात-रात भर जागकर वे उसे पहनने का अभ्यास करतीं, जिससे दिन में शर्मिंदगी न उठानी पड़े। वे कुछ ऐसी नाजूक थीं कि उन्हें देखकर उनकी सास यानी मेरी दादी ने कहा था, “हमारी बहू तो ऐसी है कि धोई, पोंछी और छींके पर टाँग दी।”



गनीमत यही थी कि किसी ने उन्हें छींके पर से उतारने की पेशकश नहीं की। क्यों नहीं की, उसकी दो वजहें थीं। पहली यही कि हिंदुस्तान के तमाम वाशिंदों की तरह, उनके ससुरालवाले भी, साहबों से खासे अभिभूत थे और मेरे नाना पक्के साहब माने जाते थे। बस जात से वे हिंदुस्तानी थे, बाकी चेहरे-मोहरे, रंग-दंग, पढ़ाई-लिखाई, सब में अंग्रेज थे। मजे की बात यह थी कि हमारे देश में आज्ञादी की जंग लड़ने वाले ही अंग्रेजों के सबसे बड़े प्रशंसक थे, गांधी-नेहरू हों या मेरे पिता जी के घरवाले। भले लड़का, आज्ञादी की लड़ाई लड़ते, जेब खाली और शोहरत सिर करता रहे, दबदबा उसके साहबी ससुर का ही था। एक आन-बान-शान वाले साहब ने उस सिरफिरे लड़के को अपनी नाशुक जान लड़की सौंपी, उससे रोमांचक क्या कोई परीकथा होती! नानी की सनकभरी आखिरी ख्वाहिश और नाना की रजामंदी, वे रोमांचक उपकथाएँ थीं, जो कहानी के तिलिस्म को और गाढ़ा बना चुकी थीं।

दूसरी वजह माँ की अपनी शख्सयत थी। उनमें खूबसूरती, नज़ाकत, गैर-दुनियादारी के साथ ईमानदारी और निष्पक्षता कुछ इस तरह घुली-मिली थी कि वे परीजात से कम जादुई नहीं मालूम पड़ती थीं। उनसे ठोस काम करवाने की कोई सोच भी नहीं सकता था। हाँ, हर ठोस और हवाई काम के लिए उनकी ज़बानी राय ज़रूर माँगी जाती थी और पत्थर की लकीर की तरह निभाई भी जाती थी।

मैंने अपनी दादी को कई बार कहते सुना था, “हम हाथी पे हल ना जुतवाया करते, हम पे बैल हैं।”

बचपन में ही मुझे इस जुमले का भावार्थ समझ में आ गया था, जब देखा था कि, हम बच्चों की ममतालु परवरिश के मामले में माँ के सिवा घर के सभी प्राणी मुस्तैद रहते थे। दादी और उनकी जिठानियाँ ही नहीं, खुद-मर्दजात, पिता जी भी।

पर ठोस काम न करने का यह मतलब नहीं था कि माँ को आज्ञादी का जुनून कम था। वह भरपूर था और अपने तरीके से वे उसे भरपूर निभाती रही थीं। ज़ाहिर है कि जब जुनून आज्ञादी का हो तो, उसे निभाना भी आज्ञादी से चाहिए। जिस-तिस से पूछकर, उसके तरीके से नहीं, खुद अपने तरीके से।

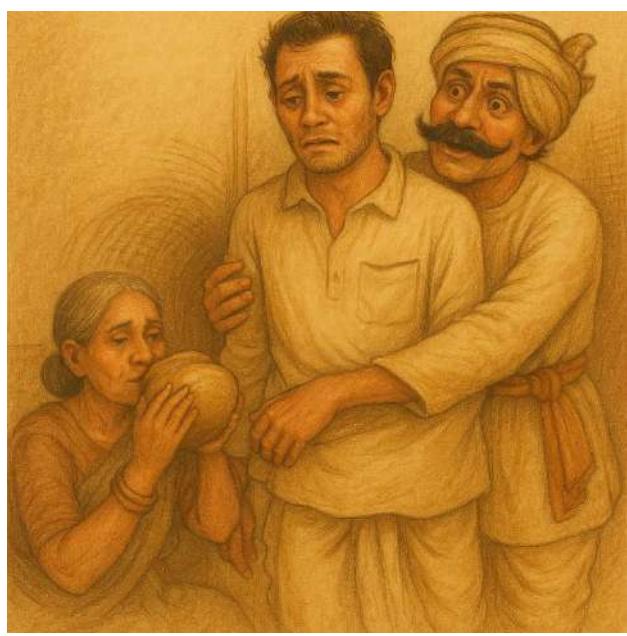
हमने अपनी माँ को कभी भारतीय माँ जैसा नहीं पाया। न उन्होंने कभी हमें लाड़ किया, न हमारे लिए खाना पकाया और न अच्छी पत्नी-बहू होने की सीख दी। कुछ अपनी बीमारी के चलते भी, वे घर-बार नहीं सँभाल पाती थीं पर उसमें ज़्यादा हाथ उनकी अरुचि का था। उनका ज़्यादा वक्त किताबें पढ़ने में बीतता था, बाकी वक्त साहित्य-चर्चा में

या संगीत सुनने में और वे ये सब बिस्तर पर लेटे-लेटे किया करती थीं। फिर भी, जैसा मैंने पहले कहा था, हमारे परंपरागत दादा-दादी या उनकी ससुराल के अन्य सदस्य उन्हें न नाम धरते थे, न उनसे आम औरत की तरह होने की अपेक्षा रखते थे। उनमें सबकी इतनी श्रद्धा क्यों थी, जबकि वह पत्नी, माँ और बहू के किसी प्रचारित कर्तव्य का पालन नहीं करती थीं? साहबी खानदान के रौब के अलावा मेरी समझ में दो कारण आए हैं –

1. वे कभी झूठ नहीं बोलती थीं और
2. वे एक की गोपनीय बात को दूसरे पर ज़ाहिर नहीं होने देती थीं।

पहले के कारण उन्हें घरवालों का आदर मिला हुआ था; दूसरे के कारण बाहरवालों की दोस्ती। दोस्त वे हमारी भी थीं, माँ की भूमिका हमारे पिता बखूबी निभा देते थे। मुझे याद है, बचपन में भी हमारे घर में किसी की चिढ़ी आने पर कोई उससे यह नहीं पूछता था कि उसमें क्या लिखा है। भले वह एक बहन की दूसरी के नाम क्यों न हो। और माँ यह जानने को बेहाल हों कि बीमारी से वह उबरी या नहीं। छोटे से घर में छह बच्चों के साथ, सास-ससुर आदि के रहते हुए भी, हर व्यक्ति को अपना निजत्व बनाए रखने की छूट थी। इसी निजत्व बनाए रखने की छूट का फ़ायदा उठाकर, हम तीन बहनें और छोटा भाई लेखन के हवाले हो गए।

लीक से खिसके, अपने पूर्वजों में, माँ और नानी ही रही होतीं तो गनीमत रहती, पर अपनी एक परदादी भी थीं, जिन्हें कतार से बाहर चलने का शौक था। उन्होंने व्रत ले रखा था कि अगर खुदा के फ़ज़ल से, उनके पास कभी दो से ज़्यादा धोतियाँ हो जाएँगी तो वे तीसरी दान कर देंगी। जैन समाज में अपरिग्रह की सनक बिरादरी बाहर हरकत नहीं मानी जाती, इसलिए वहाँ तक तो ठीक था। पर उनका असली जलवा तब देखने को मिला, जब मेरी माँ पहली बार गर्भवती हुईं। मेरी परदादी ने मंदिर में जाकर मन्त्र माँगी कि उनकी पतोहू का पहला बच्चा लड़की हो।



यह गैर-खायती मन्त्र माँगकर ही उन्हें चैन नहीं पड़ा। उसे भगवान और अपने बीच पोशीदा रखने के बजाय सरेआम उसका ऐलान कर दिया। लोगों के मुँह खुले-के-खुले रह गए। उनके फ़ितूर की कोई वाजिब वजह दृঁढ़े न मिली। यह भी नहीं कह सकते थे कि खानदान में पुश्तों से कन्या पैदा नहीं हुई थी, इसलिए माँ जी बेचारी कन्यादान के पुण्य के अभाव को पूरा करने के चक्कर में थीं। क्योंकि पिता जी की ही नहीं, दादा जी की भी बहनें मौजूद थीं। हाँ, पहला बच्चा हर बहू का बेटा होता रहा था। खैर, माँ जी ने अपनी तरफ से कोई सफाई नहीं दी, बल्कि बदस्तूर मंदिर जाकर मन्त्र दुहराती रहीं। पूरा नवफ़ड़ गाँव जानता था कि माँ जी का भगवान के साथ सीधा-सीधा तार जुड़ा हुआ है। बेतार का तार। इधर वह तार खींचतीं, उधर टन से तथास्तु बजता। मेरी दादी तो

पहली मर्तबा में ही तैयार हो गई थीं कि गोद में खेलेगी, तो पोती। पर माँ जी की आरजू किस कदर रंग लाएंगी, उसका उन्हें भी गुमान न रहा होगा।

लड़की की गैर-वाजिब जुस्तजू सुन, भगवान कुछ ऐसी अफरा-तफरी में आ गए कि एक न दो, पूरी पाँच कन्याएँ, एक-के-बाद-एक धरती पर उतार दीं। भगवान को क्या कहें, माँ जी के सामने तो नामी चोर भी अफरा-तफरी में आ जाते थे। माँ जी और नामी चोर का किस्सा होश सँभालने के बाद मैंने कई बार सुना था, चोर के दीदार की खुशनसीबी भी हाथ आई थी।

हुआ थूँ था कि किसी शादी के सिलसिले में नवफड़ की हवेली के तमाम मर्द बारात में दूसरे गाँव गए हुए थे। औरतें सज-धज कर रतजगा मना रही थीं। नाच-गाने और ढोलक की थाप के शोर में नामी चोर कब सेंध लगाकर हवेली में घुसा, किसी को खबर न हुई। पर चोर था बदकिस्मत, जिस कमरे में घुसा, उसमें माँ जी सोई हुई थीं। औरतों के शोर से बचने को, वे अपना कमरा छोड़ दूसरे में जा सोई थीं। चोर बेचारा, तमाम जुगराफिया दिमाग में बिठलाकर उतरा था, उसे क्या पता था कि इतनी बड़ी-बूढ़ी पुरखिन जगह बदल लेगी। खैर, बुढ़ापे की नींद ठहरी, चोर के दबे पाँवों की आहट से ही खुल गई।

"कौन?" माँ जी ने इतमीनान से पूछा।

"जी, मैं," चोर ने युगों से चला आ रहा, पारंपरिक, असंगत जवाब दिया।

"पानी पिला," माँ जी ने कहा।

"जी मैं...?" चोर झिझककर रह गया।

तब तक माँ जी बिस्तर के बराबर में टटोलकर देख चुकी थीं, लोटा खाली था।

"ऐसा कर," उन्होंने कहा, "यह लोटा ले और वहाँ से पानी भर ला। पर देख, कपड़ा कसकर बाँधे रखियो और तरीके से छानियो।"

चोर घबरा गया, अँधेरे में इन्होंने वैसे जाना कि उसके मुँह पर कपड़ा बँधा है और कमर में भाँग। भगवान से उनका तार जुड़े होने की खबर उसे थी। पर बुढ़िया भाँग भी छानती होगी, एकदम यकीन न हुआ। इसी से कुछ हैरान-परेशान हो उठा।

"जल्दी कर भाई," तभी माँ जी ने कहा, "बड़ी प्यास लगी है।"

"पर मैं तो चोर हूँ!" मारे घबराहट और धर्मसंकट के चोर सच कह गया।

"हुआ करे," माँ जी ने कहा, "प्यासे को पानी तो पिला। पर देख, मेरा धरम न बिगाड़ियो, लोटे के मुँह से कपड़ा न हटाइयो, हाथ रगड़कर धो लीजो और पानी कपड़े से छानकर भरियो।"

"आप चोर के हाथ का पी लोगी?"

"कहा न, रगड़कर धो लीजो, सब नाच-गाने में लगे हैं, तेरे और भगवान के सिवा कौन धरा है, जो पिलाएगा।"

भगवान वहीं-कहीं उसके बराबर में धरे हैं, सुनकर चोर कुछ ऐसा अकबकाया कि लोटा उठाकर चल दिया। पूरी एहतियात के साथ पानी भरकर लौटा तो, पहरेदार ने धर-दबोचा। कुँए पर देख लिया गया था।

तब माँ जी ने लोटे का आधा पानी खुद पीकर, बाकी चोर को पिला दिया और कहा, "एक लोटे से पानी पीकर हम माँ-बेटे हुए। अब बेटा, चाहे तो तू चोरी कर, चाहे खेती।"

बेटा बेचारा किस लायक रह गया होगा। सो रोमांचक धंधा छोड़ खेती से लगा। सालों-साल लगा रहा। जब मैंने उसे देखा तो बड़ा भलामानुस बूढ़ा लगा मुझे, डरा-डरा, हैरान-सा।

अब खानदानी विरासत कहिए या जीवाणुओं का प्रकोप, उन दो सनकी बुढ़ियों के बीच मैं अच्छी फँसी ! एक तरफ़, माँ जी के चलते, अपने लड़की होने पर कोई हीन भावना मन में नहीं उपजी। दूसरी तरफ़, नानी के चलते, देश की आजादी को लेकर नाहक रोमानी ही रही।

15 अगस्त 1947 को, जब देश को आजादी मिली या कहना चाहिए, जब आजादी पाने का जश मनाया गया तो दुर्योग से मैं बीमार थी। उन दिनों, टाइफ़ॉइड खासा जानलेवा रोग माना जाता था। इसलिए मेरे तमाम रोने-धोने के बावजूद डॉक्टर ने मुझे इंडिया गेट जाकर, जश में शिरकत करने की इजाजत नहीं दी। चूँकि डॉक्टर अपने नाना के परम मित्र, उनसे ज्यादा नाना थे, इसलिए हमारे पिता जी, जो बात-बात पर सत्ताधारियों से लड़ते-भिड़ते फिरते थे, चुप्पी साध गए। मैं बदस्तूर रोती-कलपती रही, क्या कोई बच्चा इकलौती गुड़िया के टूट जाने पर रोया होगा! मेरी उम्र तब नौ बरस की थी। इतनी छोटी नहीं कि गुड़िया से बहलती और इतनी बड़ी नहीं कि डॉक्टरी तर्क समझती। तंग आकर पिता जी मुझे 'ब्रदर्स कारामजोव' उपन्यास पकड़ा गए। किताबें पढ़ने का मुझे मिराक था। सो, जब कुछ देर बाद मैंने देखा कि पिता जी को छोड़कर, घर के बाकी सब प्राणी पलायन कर चुके थे और पिता जी दूसरे कमरे में बैठे अपनी किताब पढ़ रहे थे तो, रोना-धोना छोड़कर मैंने भी किताब खोल ली। एक बार शुरू कर लेने पर, उसने मुझे इतनी मोहलत नहीं दी कि दोबारा रोना शुरू करूँ या कोई और काम पकड़ूँ।

उस वक्त 'ब्रदर्स कारामजोव' मुझे देने में क्या तुक थी, तब मेरी समझ में नहीं आया। किताब कितनी समझ में आई, वह अब तक नहीं जानती, क्योंकि उसके बाद इतनी बार पढ़ी कि सारे पाठ आपस में गड्ढ-मड्ढ हो गए। कितना पहली बार मैं पल्ले पड़ा, कितना बाद मैं, कहना मुश्किल है। पर इतना विश्वास के साथ कह सकती हूँ कि उसका एक अध्याय, जो बच्चों पर होने वाले अनाचार-अत्याचार पर था, मुझे पहली बार मैं ही लगभग वाक्यस्थ हो गया था। उम्र के हर पड़ाव पर वह मेरे साथ रहा और मेरे लेखन के एक महत्वपूर्ण भाग को प्रभावित करता रहा। जैसे 'जादू का कालीन' मेरा नाटक, 'नहीं' व 'तीन किलो की छोरी', जैसी कहानियाँ और 'कठगुलाब' उपन्यास के कई अंश। माँ जी की मन्नत का असर रहा होगा कि मैं ही नहीं, मेरी चारों बहनें भी लड़की होने के नाते किसी हीन भावना का शिकार नहीं हुई। नानी, माँ और परदादी की परंपरा बरकरार रखते हुए, लीक पर चलने से भी इनकार किए रहीं।

पहली लड़की, जिसके लिए मन्नत माँगी गई थी, वह मैं नहीं, मेरी बड़ी बहन, मंजुल भगत थी। घर का नाम था—रानी, बाहर का मंजुल; लेखिका अवतार हुआ, मंजुल भगत। क्योंकि लिखना शादी के बाद शुरू किया और अपना नाम बदलकर पति का ग्रहण करने में कोई हीन भावना आड़े नहीं आई, इसलिए पैदाइशी जैन नाम छोड़ भगत बनीं। दूसरे नंबर पर मैं थी, घर का नाम उमा, बाहर का मृदुला। मैंने भी शादी के बाद लिखना शुरू किया सो बतौर लेखिका नाम चला मृदुला गर्ग। मुझे याद है, जब हमने लिखना शुरू किया, उससे कुछ पहले नारीवाद का चलन हुआ था। शादी के बाद नाम न बदलने का रिवाज उसी ने चलाया था। मन्नू भंडारी का हवाला देकर, हमसे पूछा भी जाता था कि आप लोग इतनी पोंगापंथी, घरघुस्सू क्यों हो? नाम क्यों बदला? हमारे पास इसका कोई ढंग का जवाब नहीं होता

था। अब भी नहीं है। पर नाम बदलने से, अपने व्यक्तित्व का कोई नुकसान होते, मैंने नहीं देखा। पूछने को तो पिताजी से लोग यह भी पूछते थे, पाँच बेटियों से आपका मन नहीं भरा जो हर बेटी के दो-दो नाम रख छोड़े हैं। मुझसे छोटी बहन का घर का नाम है गौरी और बाहर का चित्रा। वह नहीं लिखती।

उसका कहना है, वह इसलिए नहीं लिखती क्योंकि घर में कोई पढ़ने वाला भी तो चाहिए। खैर, उसके बाद जब चौथी-पाँचवीं बेटियाँ पैदा हुईं तो, पिता जी ने इतनी बात जमाने की सुनी कि उनका एक-एक नाम ही रखा। रेणु और अचला। पाँच बहनों के बाद एक भाई हुआ, राजीव। मजे की बात यह है कि बीच की दो बहनें ही लेखन से बची रहीं। अचला और राजीव फिर उसमें जा फँसे। अचला मुझसे आठ साल छोटी है और वक्त के बदलाव की लाज रखते हुए, अंग्रेजी में लिखती है। पर राजीव फिर हिंदी के हवाले।

हम चार लिखते हैं और तमाम खानदान हमें पढ़ता है। मेरी ससुराल में मुझे कोई नहीं पढ़ता। इस तथ्य को हज़म करने में मुझे काफ़ी वक्त लगा। फिर उसके फ़ायदे भी नज़र आने लगे। कम-से-कम, घर के भीतर तो मुझे हिंदी आलोचना-बुद्धि से दो-चार नहीं होना पड़ता।

खैर, मैं अपनी नहीं, उन अ-देवियों की बात कहना चाहती हूँ, जो परदादी की मन्नत के नतीजतन धरती पर आईं और लेखक नहीं बनीं। जो बनीं, उन्हें साँस लेने की ज़रूरत कुछ ज्यादा हो, समझ में आता है, जैसा मेरे पिता जी ने एक बार मंजुल से कहा था। कोई दम नहीं घुट्टा, साँस लेने की ज़रूरत ही ज्यादा है। पर यहाँ तो, हम सेर तो गैर-लेखिका बहनें सवा सेर। चौथे नंबर वाली रेणु का आलम यह था कि गरमी की दुपहरी में स्कूल से वापसी पर, जब गाड़ी उसे और उससे छोटी बहन अचला को बस अड़डे से लेने जाती, तो रेणु उसमें बैठने से इनकार कर देती। उसका कहना था कि यूँ थोड़ा-सा रास्ता गाड़ी में बैठकर तय करना, सामंतशाही का प्रतीक था। जो शायद था। पर साथ ही पिता के अतिरिक्त लाड़ का भी। और रसोइये को खाना खिलाकर जल्दी फ़ारिंग करने की लाचारी का भी। माँ तो सब चीजों से उदासीन रहती थीं पर पिता काफ़ी भुनते, जब देखते कि अचला गाड़ी में बैठी चली आ रही है और रेणु, पीछे-पीछे, पसीने में तरबतर, खरामा-खरामा। बचपन में एक बार चुनौती दिए जाने पर उसने जनरल थिमैया को पत्र लिखकर, उनका चित्र मँगवा लिया था, जो एक मोटरसाइकिल सवार जवान आकर, उसके हाथ में दे गया था। पड़ोस में उसका रुतबा काफ़ी बढ़ गया था। गाड़ी में बैठने के साथ, उसे इम्तिहान देने से भी परहेज़ था। स्कूल तो जैसे-तैसे पास कर लिया पर जब बी.ए. का इम्तिहान देने की बारी आई तो, वह अड़ गई। पहले मुझे समझाओ कि बी.ए. करना क्यों ज़रूरी है, तब मैं इम्तिहान दूँगी, अगर मुझे यकीन आ गया कि हाँ, कोई फ़ायदा है, वरना नहीं। हमने तरह-तरह के तर्क दिए, माँ ने कहा, पिता जी से पूछो। पिता जी ने कहा, नौकरी कर पाओगी, शादी कर पाओगी, लोग इज़्ज़त से देखेंगे, वगैरह-वगैरह। कोई तर्क विश्वसनीय नहीं लगा, न रेणु को, न खुद उन्हें। आखिर उन्होंने उसी तर्क का सहारा लिया जो, युगों से, माँ-बाप के काम आता रहा है।

कहा, बी.ए. करो, क्योंकि मैं कह रहा हूँ, करो। रेणु ने बी.ए. कर तो लिया पर सिर्फ़ पिता की खुशी के लिए, यानी पास होने लायक नंबर लाकर। सच बोलने में वह माँ से भी दो कदम आगे है। गनीमत यह है कि आधा समय उसके सच सुनकर लोग सोचते हैं, वह मज़ाक कर रही होगी इसलिए बिना मेहनत, वह लोगों को हँसाए रख लेती है। आज भी, उसे कोई इत्र भेंट करता है तो वह कहती है, "नहीं चाहिए। मैं तो नहाती हूँ।"

तीसरे नंबर पर चित्रा है। वह कॉलेज पढ़ने तो जाती थी पर खुद पढ़ने से ज्यादा दिलचस्पी, औरों को पढ़ाने में रखती थी। इसलिए इम्तिहान में उसके अंक कम और उसके शागिर्दों के ज्यादा आते थे। पर अपने यहाँ सब चलता था।

उसकी शादी का वक्त आया तो उसने एक नज़र में लड़का पसंद करके ऐलान कर दिया कि शादी करेगी तो उसी से। मुश्किल यह थी कि हमारे माँ-बाप ही नहीं, खुद लड़का भी उसके निर्णय से वाक़िफ नहीं था। पर उसका कहना था, वह जो सोच लेती है, करके रहती है। तो उसकी शादी उसी लड़के से हुई। कोई मुश्किल पेश नहीं आई।

आती क्यों? उसने कहा, "मैंने पहली मुलाकात में ही उसे बतला दिया था कि मैं जो सोच लेती हूँ, होकर रहता है।" तो उसने बात आगे खींची ही नहीं। पहली मुलाकात में ही हथियार डाल दिए। हममें सबसे छोटी बहन, अचला काफ़ी दिनों तक कुछ कम खिसकी मालूम पड़ती रही। पिता का कहा मानकर, पहले अर्थशास्त्र किया, फिर पत्रकारिता में दाखिला लिया, ढंग से पढ़ाई की, पास हुई। फिर पिता की पसंद से शादी भी कर ली। पर वह आगे लीक पर नहीं चल पाई। घर-बार में मन ज्यादा रुचा नहीं और मंजुल और मेरी तरह उम्र के तीस बरस पार करते ही, लिखने का रोग लग गया।

एक बात हममें एक-सी रही। घर-बार को परंपरागत तरीके से हमने भले न चलाया हो, उसे तोड़ा भी नहीं, शादी एक बार की और उसे कायम रखा। चाहे तलाक के कगार पर खड़ी चली हो पर कगार तोड़, डूबी नहीं। शायद इसलिए कि जैसा मैंने अपने पहले उपन्यास में लिख डाला था, हम सभी विश्वास करती रही होंगी कि मर्द बदलने से कोई प्रयोजन सिद्ध नहीं होता। घर के भीतर रहते हुए भी, अपनी मर्जी से जी लो, तो काफ़ी है।

निम्नलिखित कथनों को पढ़ें और बताएँ कि वे सही हैं या गलत।

1. लेखिका की नानी की मृत्यु उनकी माँ की शादी के बाद हुई थी।
2. नानी ने अपनी बेटी की शादी एक साहब के साथ करवाने की इच्छा जताई थी।
3. लेखिका की माँ खादी की साड़ी पहनने में सहज थीं।
4. परदादी ने मन्त्र माँगी थी कि उनकी पतोहू का पहला बच्चा लड़का हो।
5. लेखिका ने 15 अगस्त 1947 को इंडिया गेट पर आजादी का जश मनाया।
6. लेखिका और उनकी चार बहनों में से तीन लेखिका बनीं।
7. लेखिका के परिवार में निजत्व (प्राइवेसी) को कोई महत्व नहीं दिया जाता था।
8. परदादी ने चोर से पानी माँगा और उसे डराया नहीं।
9. लेखिका की माँ ने पारंपरिक माँ की तरह बच्चों को लाड़-प्यार किया।
10. लेखिका का पहला उपन्यास इस विश्वास को दर्शाता है कि मर्द बदलने से कोई प्रयोजन सिद्ध नहीं होता।

रिक्त स्थान भरें :-

1. लेखिका की नानी ने अपनी बेटी की शादी के लिए _____ से वचन माँगा।
2. नानी ने कहा कि उनकी बेटी की शादी _____ के फरमाबरदार से नहीं होनी चाहिए।
3. लेखिका की माँ की शादी एक ऐसे व्यक्ति से हुई, जिसे _____ के कारण ICS परीक्षा में बैठने से रोक दिया गया था।
4. परदादी ने मंदिर में मन्त्र माँगी कि उनकी पतोहू का पहला बच्चा _____ हो।
5. लेखिका ने 15 अगस्त 1947 को _____ के कारण आजादी का जश नहीं मना पाई।
6. लेखिका की माँ को _____ साड़ी पहनने में कठिनाई होती थी।
7. लेखिका के परिवार में हर व्यक्ति को _____ बनाए रखने की छूट थी।
8. परदादी ने चोर से कहा कि वह _____ भर लाए।
9. लेखिका और उनकी बहनों ने _____ के बाद लेखन शुरू किया।
10. लेखिका की छोटी बहन _____ अंग्रेजी में लिखती है।

मिलान करें :-

क	ख
1. नानी	● खादी की साड़ी पहनने में कठिनाई होती थी।
2. माँ	● मन्त्र माँगी कि पहला बच्चा लड़की हो।
3. परदादी	● आजादी के सिपाही से बेटी की शादी करवाना चाहती थीं।
4. लेखिका	● ब्रदर्स कारामजोव पढ़ी जब बीमार थीं।
5. रेणु	● गाड़ी में बैठने से इनकार करती थी क्योंकि यह सामंतशाही का प्रतीक था।
6. चित्रा	● पहली मुलाकात में ही लड़के को शादी के लिए मना लिया।
7. अचला	● अंग्रेजी में लेखन करती हैं।
8. मंजुल	● लेखिका बनने के बाद भगत सरनेम अपनाया।

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 2-3 वाक्यों में दीजिए :

1. नानी ने अपने अंतिम समय में प्यारेलाल शर्मा से मिलने की इच्छा क्यों जताई?
2. लेखिका की माँ को खादी की साड़ी पहनने में क्या कठिनाई होती थी?
3. लेखिका की माँ को घर में इतना सम्मान क्यों मिलता था, जबकि वह पारंपरिक कर्तव्यों का पालन नहीं करती थीं?
4. परदादी की मन्त्र का क्या परिणाम हुआ?
5. लेखिका और उनकी बहनों ने शादी के बाद अपने नाम क्यों बदले?

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 5-10 वाक्यों में दीजिए

1. नानी की अंतिम इच्छा से उनकी आजाद-ख्याल प्रकृति कैसे झलकती है?
2. लेखिका की माँ की शिक्षियत को उनके परिवार और ससुराल वाले कैसे देखते थे, और इसका क्या प्रभाव पड़ा?
3. परदादी की मन्त्र और उनके व्यवहार से उनके गैर-पारंपरिक स्वभाव का पता कैसे चलता है?
4. लेखिका और उनकी बहनों के लेखन की शुरुआत और उनके व्यक्तित्व पर नानी और माँ का क्या प्रभाव पड़ा?
5. लेखिका के परिवार में निजत्व को बनाए रखने की परंपरा का वर्णन करें और इसका उनके लेखन पर क्या प्रभाव पड़ा?

शब्दावली

1. नानी	माँ की माँ।
2. शाहीर	कवि, गीतकार, रचनात्मक व्यक्तित्व।
3. परदापरस्त	परदा करने वाली, पर्दे की प्रथा का पालन करने वाली।
4. विलायत	विदेश, विशेष रूप से ब्रिटेन।
5. मुँहज़ोर	बोल्ड, स्पष्टवादी, बिना संकोच के बोलने वाला।
6. हैरतअंगेज़	आश्चर्यजनक, चकित करने वाला।
7. आजादी का सिपाही	स्वतंत्रता सेनानी।
8. पर्दे का लिहाज़	पर्दे की प्रथा का सम्मान करना।
9. निजत्व	व्यक्तिगत स्वतंत्रता, निजी पहचान।
10. खादी	हस्तनिर्मित सूती कपड़ा।
11. नाशुक	नाज़ुक, कोमल, कमज़ोर।
12. साहबी	अंग्रेजी रीति-रिवाज अपनाने वाला।
13. पारिजात	स्वर्गीय, जादुई, असाधारण सुंदर।
14. शाबानी राय	बुद्धिमत्तापूर्ण सलाह।
15. अपरिग्रह	जैन धर्म का सिद्धांत, संचय न करना।
16. मन्नत	मंदिर में माँगी गई प्रार्थना या वचन।
17. फितूर	सनक, अनोखी झच्छा।
18. तथास्तु	ऐसा ही हो, भगवान की स्वीकृति।
19. सामंतशाही	सामंती व्यवस्था, अभिजात वर्ग का व्यवहार।
20. खरामा-खरामा	धीरे-धीरे, शांत और सुंदर ढंग से चलना।
21. मिराक	शौक, रुचि, लता।
22. वाक्यस्थ	कंठस्थ, पूरी तरह याद होना।
23. लीक	परपरागत रास्ता, रुढ़िगत मार्ग।
24. पोंगापंथी	रुढ़िवादी, पुरातनपंथी।
25. गड्ढ-मड्ढ	आपस में मिल जाना, भ्रमित होना।

8

भारतीय कलाएँ

कलाओं की अपनी भाषा होती है जैसे हम अपने आस-पास के परिवेश, प्रकृति या भावों और विचारों को भाषा में व्यक्त करते हैं। वैसे ही चित्रकारी, संगीत या नृत्य के माध्यम से भी हम अपने आस-पास और प्रकृति को अभिव्यक्त करते हैं। हम जो कुछ देखते-सुनते हैं उसे किसी न किसी रूप में और नए-नए तरीके से कहना या अभिव्यक्त करना चाहते हैं। समुद्र में उठती गिरती लहरों को देखकर चित्रकार उसे रंगों से सजाता है। चिड़ियाँ की चहचहाहट को गायक स्वरों में सजाता है तो नर्तक मन के भावों को विभिन्न मुद्राओं में सजाता है। कभी चित्रों में, तो कभी गीतों में, कभी नृत्य में, तो कभी संगीत में यह कहने-सुनने की परंपरा सदियों से चल रही है और आज भी नए-नए तरीकों में लगातार जारी है।

हमारा देश भारत उत्सवधर्मी है। विविधता हमारी पहचान है। विभिन्न संस्कृतियों और विभिन्न त्योहारों के साथ-साथ विविध कलाएँ भी हमारी अनूठी पहचान हैं। आपने देखा होगा कि भारत के अलग-अलग राज्यों की अपनी-अपनी विशिष्ट कलाएँ हैं। आपने यह भी देखा होगा कि हमारी कलाओं को त्योहारों, उत्सवों से अलग नहीं किया जा सकता। ये कलाएँ जन्मोत्सव से लेकर, शादी-ब्याह, पूजा तथा खेती-बाड़ी से भी जुड़ी हैं। मनुष्य के जीवन से जुड़ी होने के कारण ही भारत को ये विशिष्ट कलाएँ विरासत के प्रति हमें उत्साह और विश्वास से भर देती हैं। क्या आपको यह नहीं लगता कि पर्वों- त्योहारों या फिर फसलों से कलाओं का जुड़ाव ही एक ओर इसे केवल मनोरंजन या अलंकरण होने से बचाता है, तो दूसरी ओर यही पहलू, प्राचीन परंपराओं की सतत निरंतरता को बनाए रखता है। वास्तव में यही अतीत और वर्तमान के बीच जुड़ाव की कड़ी भी है।

अगर हम आज पीछे मुड़कर देखें तो पाएँगे कि जनजातीय और लोककला शैलियों के सभी रूपों में एक व्यवस्था भी दिखाई पड़ती है, जो आगे चलकर शास्त्रीय कलाओं का आधार बनी। एक बात ध्यान देने की है कि शुरुआती दौर में सभी कलाओं का संबंध लोक या समूह से ही था। बाद में चलकर जब इनका संबंध व्यवसाय से जुड़ा तो व्यक्ति केंद्रित होती चली गई। मध्यकाल तक आते-आते साहित्य, चित्र, संगीत, नृत्य कलाएँ राजाओं और विभिन्न शासकों के संरक्षण में चली गई और धीरे-धीरे शास्त्रीय नियमों में बँधीं। वे कलाकारों को अपनी अभिरुचियों के अनुरूप कलाओं को सुव्यवस्थित और परिष्कृत करने के लिए प्रोत्साहित भी करते रहते थे।

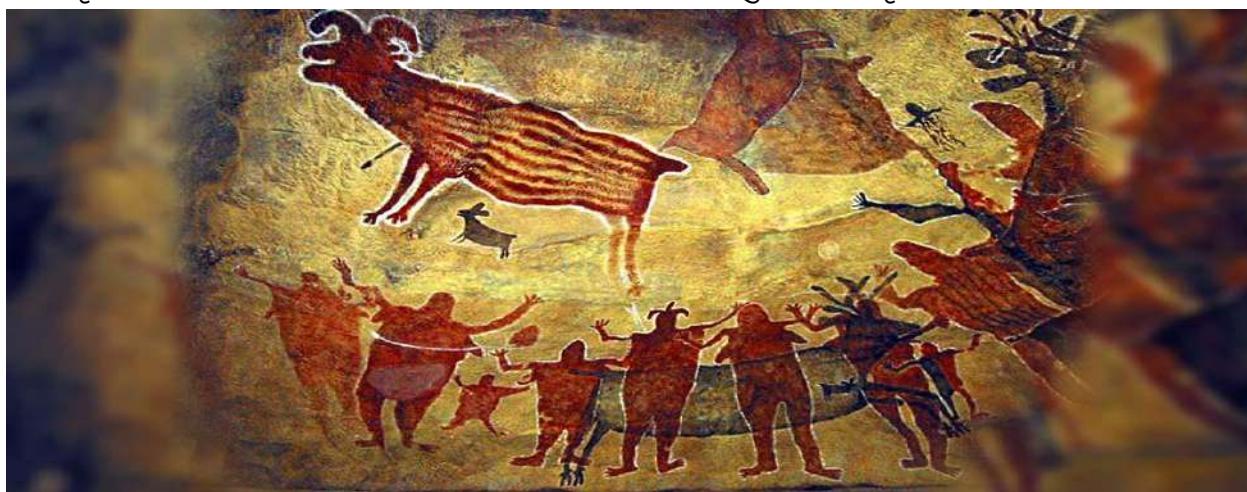
इस तरह मंदिरों और महलों में विकसित होती हुई ये कलाएँ शास्त्रीय स्वरूप ग्रहण करती गई। गुप्त साम्राज्य में तो पराकाष्ठा पर पहुँच गई। भरत मुनि के नाट्यशास्त्र में इनका शास्त्रीय स्वरूप बना, जो कला के लिए अब तक का प्राप्त सबसे महत्वपूर्ण शास्त्र है।

शास्त्र ने संगीत, नृत्य अभिनय कलाओं को एक शास्त्रीय कला का स्वरूप दिया। फिर भी लोक कलाएँ अपनी जड़ों से पूरी तरह जुड़ी रहीं। आज की कलाओं की जड़े लोक में ही हैं, चाहे चित्रकला हो, संगीतकला हो या फिर नृत्य कला। शास्त्रीय और लोककलाओं के बीच कभी न खत्म होने वाला संवाद ही इनकी ताकत है।

चित्रकला

चित्रकारी प्राचीन काल से ही हमारे जीवन का अभिन्न अंग रहा है। जब हमारे पास भाषा नहीं थी तब भी चित्रकारी थी और यही अभिव्यक्ति का माध्यम थी। प्रागैतिहासिक समय में अपने वातावरण, रहन-सहन, भावों और विचारों को मनुष्य ने चित्रों के माध्यम से ही व्यक्त किया।

सबसे प्राचीन चित्रों के नमूने शैल चित्रों को ही माना जाता है। वे छट्टानों पर प्राकृतिक रंगों से बने हुए चित्र हैं। ये गुफाओं में मिलते हैं। मध्य प्रदेश में भीम बेटका की गुफाएँ शैल चित्रों के लिए जानी जाती हैं। इन चित्रों में जीवन की रोजमर्रा की गतिविधियाँ शिकार, नृत्य, संगीत, जानवर, युद्ध, साज-सज्जा सभी कुछ दिखाई पड़ता है। गुफाओं में कला सृजन की अति प्राचीन परंपरा रही है। एलोरा और अजंता की गुफाएँ कला कृतियों के लिए विख्यात हैं।



चौथी से छठी सदी के बीच गुप्त साम्राज्य कलाओं के लिए स्वर्ण युग कहलाता है। अजंता की गुफाएँ उन्हीं दिनों खोदी गयीं। उनकी दीवारों पर चित्र बनाए गए। बाघ और बादामी की गुफाएँ भी इसी जमाने की हैं। अजंता की गुफाओं के चित्र इतने आकर्षक हैं कि वे आज तक के कलाकारों पर गहरा असर डालते हैं। ऐसा मानना है कि अजंता के दीवारों पर बने चित्रों को बौद्ध भिक्खुओं ने बनाया है।





सातवी-आठवीं सदी में चट्टानों को काटकर एलोरा की गुफाएं तैयार की गई। इसकी सबसे बड़ी विशेषता है कि इन्हीं के बीच कैलाश का बहुत विशाल मंदिर है। इन मानुषी कला सृजन को देखकर आश्र्वय होता है। उन दिनों मनुष्य ने इसको कल्पना कैसे की होगी और फिर उस कल्पना को साकार करने के लिए कितना परिश्रम किया होगा। लगभग इसी समय निर्मित एलीफेंटा की गुफाएँ भी मिलती हैं। यहाँ त्रिमूर्ति की जबरदस्त मूर्ति है। दक्षिण भारत के महाबलिपुरम की विशाल मूर्ति कला और तंजौर की चित्रकला, कला कौशल के अद्भुत उदाहरण हैं।

छत्तीसगढ़ की कलमकारी, पंजाब की फुलकारी, महाराष्ट्र की वरली इत्यादि बहुत प्रसिद्ध रहे हैं। इनमें प्रयोग होने वाली सभी सामग्री प्राकृतिक ही होती हैं।



इन चित्रों की विशेषता है इनकी विभिन्न प्रकार की शैलियाँ। वनों-गाँवों के लोग अपनी-अपनी पारंपरिक शैलियों में चित्रकारी करते हैं। राजस्थान के चित्तौड़गढ़ में कलाकार लकड़ी के मंदिरों पर चित्रकारी करते थे। इसे किवाड़ पेंटिंग भी कहते हैं। इस चित्रकारी में चित्र के माध्यम से सांस्कृतिक और ऐतिहासिक कथाओं को अभिव्यक्त किया जाता है।

उड़ीसा के पटचित्र कथा में कवि जयदेव के गीतगोविंद को भी उकेरा गया है। इसे कागज या पत्तों पर गहरे लाल, काले, नीले रंगों से उकेरते हैं। देखने की बात है कि गीतगोविंद के पदों को नर्तक ओडिशी नृत्य के माध्यम से भी अभिव्यक्त करते हैं। सभी कलाएँ एक दूसरे से जुड़ी हुई हैं।

मिथिला के चित्रकारी में मधुबन्नी चित्रकला भी बहुत प्रसिद्ध है। आज भी कलाकार अपनी इस कला को जिंदा रखे हुए हैं। आज के राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय बाजार में भी इन लोक कलाओं की बहुत मांग है। अस्थायी कलाओं में कोहबर, ऐपण, अल्पना, रंगोली जैसी कलाएँ काफी प्रचलित हैं। इन कलाओं का संबंध शादी-त्योहार और उत्सवों से है। इन्हें क्षेत्रीय भाषाओं में अलग-अलग नाम से जाना जाता है।

वास्तव में उत्तराखण्ड में जिसे ऐपण कहते हैं उसे ही राजस्थान में मंडवा, गुजरात में सत्तिया, महाराष्ट्र में रंगोली, बिहार में अरिपन, मध्यप्रदेश और उत्तरप्रदेश में चौकपूरना, दक्षिण भारत में कोलम के नाम से जाना जाता है। ये सभी किसी विशेष मांगलिक अवसरों पर बनाए जाते हैं। कलाओं का यह अद्भुत संसार हमारी संस्कृति की पहचान है, पर हम यह भी जानते हैं कि हिंदुस्तानी कला जितनी हिंदुस्तान में दिखाई पड़ती है। इससे कहीं अधिक उसके बाहर भी है। यह ध्यान देने की बात है कि यहाँ की कला अन्य देशों में किस प्रकार विकसित और सुरक्षित है। वास्तव में "हिंदुस्तान के अंदर की ही हिंदुस्तानी कला को जानना उसकी आधी ही कहानी जानने के बराबर है। उसे पूरी तौर पर समझने के लिए हमें बौद्ध धर्म के साथ-साथ मध्य एशिया, चीन और जापान तक जाना चाहिए; तिब्बत और बर्मा और स्याम में फैलकर नये रूप धारण करते हुए और फुटकर नये सौंदर्य पेश करते हुए हमें इसे देखना चाहिए; हमें कंबोडिया और जावा में इसके शानदार और बेमिसाल कारनामों को देखना चाहिए।"

यह सच है कि भारतीय कलाओं का विस्तार विश्व के अन्य भू-भागों में भी हुआ, लेकिन उन कलाकृतियों के सृजन में क्षेत्रीय विशेषताएँ हैं। गांधार शैली में बनी बुद्ध की प्रतिमा और तिब्बत की शैली में बनी बुद्ध की प्रतिमा में अपनी-अपनी क्षेत्रीय पहचान स्पष्ट दिखाई देती है।

संगीत कला



भारत के प्राचीनतम संगीत का वर्णन वैदिक काल में मिलता है। विद्वान लगभग पाँच हजार ई. वर्ष पूर्व के समय को वैदिक काल मानते हैं। इस समय में दो प्रकार के संगीत का उल्लेख मिलता है। एक मार्गी तथा दूसरा देसी। मार्गी संगीत धार्मिक समारोहों से जुड़ा था और नियम और अनुशासन से बंधा था। देसी लोक से जुड़ा था। लोक रुचि के अनुसार यह समूह में ही गाया जाता था। सामवेद में गाने के जो निर्देश दिए गए हैं उससे यह पता चलता है कि वैदिक महर्षियों के पूजा और मन्त्रोच्चार के तरीके को ही साम कहते थे। हमारे यहाँ आगे चलकर संगीत का जो विकास हुआ इसकी जानकारी बहुत नहीं मिलती। उसका कारण यह भी है कि हम भारतीय दस्तावेजीकरण नहीं करते थे। अन्य कलाओं की तरह संगीत का वर्णन भी भरत मुनि के नाट्यशास्त्र में ही सबसे प्रामाणिक ढंग से मिलता है। यह आज के शास्त्रीय संगीत से बहुत अलग नहीं था। अगर आपने वीणा पर दक्षिण भारतीय संगीतज्ञ को सुना हो तो अंदाजा लगा सकते हैं कि आज से हजार साल पहले का संगीत कैसा रहा होगा और यह उसके कितना करीब था।

भारतीय संगीत सुर/ताल, राग और काल से संबद्ध है। भिन्न-भिन्न समय के अनुसार राग भी अलग-अलग हैं। जैसे ब्रह्ममुहूर्त में भैरव, मेघ राग का संबंध सुबह से दीपक और श्रीराग का संबंध दोपहर से तो कौशिक और हिंडोला रात में गाए जाते हैं।

अगर आपने भारतीय पारंपरिक वाद्ययंत्रों को ध्यान से सुना और देखा होगा तो आपका ध्यान इस ओर गया होगा कि भारतीय संगीतज्ञ किसी भी वस्तु से संगीत निकाल सकते हैं। वीणा, जलतरंग, रवाब, दोतार या बांसुरी सुनकर आप इस बात को समझ सकते हैं। इन सब में प्रयोग किए जाने वाली चीजें हमारे आस-पास के रोज़मर्रा में प्रयोग होने वाली हैं। इस अद्भुत विशेषता के कारण यहाँ की कला सबसे अलग है। यह सहजता और प्रकृति से जुड़ाव भारतीय कला की विशेषता रही है।

हमारे यहाँ का मुख्य वाद्य वीणा ही थी। क्या आपने कभी सोचा है कि हमारी पुरानी फ़िल्मों में गायक, गायिका नाक से क्यों गाते थे? आज से दो हज़ार साल पहले भी गायक नाक से गाना पसंद करते थे इसका उल्लेख भरत के नाट्यशास्त्र में मिलता है। संभवतः यह मुख्य वाद्य वीणा के सुरों तक पहुँचने की कोशिश का प्रभाव था। ध्यान देने की बात है कि यह उत्सव और उल्लास भरा संगीत भी धीरे-धीरे नियमों से बंधा। इसका भी शास्त्र लिखा गया और बाद में चलकर एक शास्त्रीय परंपरा शुरू हुई।

संगीत भी लोक से जुड़ा था। इसमें संस्कारणीत और ऋतुगीत भी खूब मिलते हैं। आपने गिरिजा देवी की आवाज़ में मिर्जापुर की कज़री ज़रूर सुनी होगी। बच्चे के जन्म पर उत्तर प्रदेश का सोहर और विवाह के गीत सुने होंगे। हरेक वस्तु का स्वागत गीतों से किया जाता है। बंगाल में वर्षामंगल, बसंतोत्सव, ग्रीष्मोत्सव गीतों के बिना कहाँ संभव है। मध्यकाल तक आते-आते अन्य कलाओं की तरह संगीत भी व्यावसायिक हुआ, पर भारत का सबसे अच्छा समय वह था जब संगीत मनुष्य के जीवन का जरूरी अंग था। ऐसी कई कहावतें भी मिलती हैं।

नृत्य कला



भारतीय संगीत की तरह नृत्य में भी कम बदलाव आए हैं। पहले के नर्तक और आज के नर्तक भी भारतीय नृत्यकला के नियमों का पालन करते हैं, जिसका आधार है अभिनय। इसका भी मूलशास्त्र भरतमुनि का 'नाट्यशास्त्र' ही रहा है। नाट्यशास्त्र में 'नर्त्य' और 'नृत्य' दो शब्द मिलते हैं। ये दोनों अभिनय के ही अलग-अलग रूप हैं। 'नर्त्य' यानी अभिनय। इसमें शब्द और भंगिमा महत्वपूर्ण हैं। नृत्य में भाव और भंगिमा महत्वपूर्ण हैं।

भारत लोक नृत्यों से समृद्ध रहा है। हर राज्य के अलग-अलग समुदायों की अपनी नृत्यकलाएँ रही हैं, जो हमारे रोज़मर्रा के जीवन से जुड़ी हुई हैं। जीवन में जितने अनुष्ठान हैं उन सबसे नृत्य कलाओं का भी संबंध है।

खेती से जुड़े समुदाय के जीवन में ऋतुओं का बदलना, फसलों की बुवाई या कटाई सभी महत्वपूर्ण घटनाएँ हैं। ऋतुओं का बदलना उनके पाँवों को चंचल कर देता है। वर्षा होती है तो उनके पाँव थिरक उठते हैं। भारत के हर राज्य में यही भाव मिलते हैं। कश्मीर से दार्जिलिंग तथा समूचे हिमालय क्षेत्र में एक ओर शस्त्रों और युद्धों को नृत्य कला शालीनता से प्रस्तुत करते हैं तो दूसरी ओर गेहूँ की फसल बोने को भी एक उत्सव बना देते हैं। सभी लोक नृत्यों में एक गोलाई में नर्तक हाथ में हाथ मिलाए तरह-तरह के करतब दिखाते हैं। पंजाब की महिलाएँ गिद्ध करती हैं। राजस्थानी महिलाएँ अपनी ओढ़नी से चेहरे को ढंक कर घूमर करती हैं। गुजरात में डांडियों के सहारे स्त्रियाँ गरबा नृत्य करती हैं। पुरुष भी दांडिया रास करते हैं जो गरबा का ही एक और ऊर्जा भरा रूप है। महाराष्ट्र के मछली पालन से जुड़े समुदाय हाथों में हाथ डालकर एक-दूसरे के कंधे पर चढ़कर एक पिरामिड सा बना लेते हैं। महाराष्ट्र का लावणी नृत्य अपनी अद्भुत ऐंट्रिक आकर्षण के लिए प्रसिद्ध है।

मैसूर में डोडवा कबीले के लोग बालाकल नृत्य करते हैं। इसमें रंगीन वेशभूषा के साथ-साथ हाथ में तलवारें होती हैं। केरल के कुरुवांजी नृत्य को भरतनाट्यम का प्रेरणा स्रोत माना जाता है। गुजरात का टिप्पणी नृत्य भी समूह के साथ होता है। यह फसल की कटाई के बाद खलिहान में किया जाता है।

लोक नृत्यों में भी निकोबारी अंडमान निकोबार से जुड़ा है। अरुणाचल प्रदेश में निशि, असम का बिहु, आंध्रप्रदेश का कोलहम तो वहीं पंथी और राउत छत्तीसगढ़ तथा झारखंड के लोक नृत्य हैं। गुजरात का गरबा और रास टिप्पणी, हिमाचल का नागमेन और किन्नौरी, बंगाल, उड़ीसा, झारखंड का छाओ उल्लेखनीय है।

अलग-अलग राज्यों के ये नृत्य भिन्न-भिन्न नामों से जाने जाते हैं। पर इनमें एक समानता भी है। ये सभी नृत्य समूह में होते हैं, सभी का संबंध प्रकृति और जीवन से है, सभी में स्त्री-पुरुष एक साथ मिलकर नाचते हैं। राज्य की सीमाएँ भला कला को कैसे बाँध सकती हैं। ध्यान देने की बात यह भी है कि नृत्यों का संबंध विभिन्न धार्मिक अनुष्ठानों से भी है पर यह किसी एक धर्म में नहीं बल्कि लगभग सभी धर्मों में दिखाई पड़ता है। भारतीय लोक इसी तरह थिरकता हुआ कब शास्त्रों और नियमों में बंधा यह ठीक-ठीक तो नहीं कहा जा सकता पर इसका भी आधार भरतमुनि का नाट्य शास्त्र ही है। विद्वानों का यह मानना है कि लोक नृत्य से ही शास्त्रीय नृत्य विकसित हुआ है।

भारतीय नृत्य को देखकर कुछ लोग ऐसा सोचते हैं कि यह सिर्फ हाथ और पैर की गति से जुड़ा है। अगली बार आप ध्यान से देखिएगा भारतीय नृत्य में सभी अंगों की गति/लय महत्वपूर्ण है। भारतीय नर्तकों को आँख, भौंह या फिर नासिका के माध्यम से ही खुशी, दुख, क्रोध, वीभत्स आदि भावों को अभिव्यक्त करने में महारत हासिल है। इन्हीं भाव-भंगिमाओं के जरिये महाभारत और रामायण जैसी कथाओं तक को कह देने की परंपरा नृत्य कला में मिलती है।

भारतीय नृत्य का सबसे आकर्षक रूप है- हाथों की विभिन्न मुद्राएँ। इनके माध्यम से मनुष्य के भावों से लेकर जानवरों के भावों तक को दिखाया जा सकता है। इन शास्त्रीय नृत्यों में मुख्यरूप से केरल का कथकली, मोहिनीअद्वाम, उत्तर प्रदेश का कत्थक, आंध्र प्रदेश का कुचिपुड़ी, उड़ीसा का ओडिशी, मणिपुर का मणिपुरी, कर्नाटक और तमिलनाडु का भरतनाट्यम मौजूद हैं। असम के सत्रिया को भी शास्त्रीय नृत्यों में शामिल किया गया है। इन सभी का संबंध किसी न किसी राज्य और उनकी परंपराओं से है। चूंकि इस नृत्य को सीखने के लिए बहुत साधना की ज़रूरत थी इसलिए ज्यादातर व्यावसायिक ही सीखते थे। यह संदर्भ भी आता है कि बाद में चलकर महलों में राजकुमारी और राजकुमार

भी नृत्य करते थे, पर सार्वजनिक रूप से नहीं। शास्त्रीय नृत्यों के स्वरूप में बहुत परिवर्तन हुआ है। वर्तमान समय में इन्हें देखकर दो-तीन सौ साल प्राचीन नृत्य कला से भी इन्हें पूरी तरह नहीं जोड़ा जा सकता।

भारतीय कलाएँ लोक से शास्त्रीय रूप तक अचानक नहीं पहुंची हैं। वर्षों इनके बीच संवाद होता रहा है। आज के मंचों या फिल्मों में जो संगीत या नृत्य मिलता है उनमें दोनों का मिला-जुला रूप अधिक दिखाई पड़ता है। हमारा ध्यान इस पर भी जरूर जाना चाहिए कि हरेक राज्य में सभी कलाओं के बीच भी एक अंतर्संबंध भारतीय कलाएँ दिखेगा। उत्तर भारत में बाँस नृत्य, बाँस क्राफ्ट कला या फिर बाँस के वाद्य यंत्र इसके उदाहरण हैं।

ध्यान देने की बात यह भी है कि सभी कलाएँ धीरे-धीरे समूह से व्यक्ति कला का रूप धारण करती गई हैं। इसका कारण निश्चित रूप से व्यवसाय भी रहा। सभी लोक नृत्यों में साथ-साथ एक ताल में पैरों का उठना, हाथों का एक-दूसरे से जुड़ना अपने आप में भारत की अद्भुत साहचर्य और प्रेमभावना के संकेत हैं। क्या यह अनायास रूप से कलाओं में आया होगा? समूचा मानव जीवन समूची प्रकृति क्या अनायास ही कला का विषय बने होंगे? इनका संबंध भारत की प्रेम भावना के साथ-साथ भारतीय संस्कृति में निहित वसुधैव कुटुंबकम की भावना से भी अवश्य होगा। यही कारण है कि यहाँ की कलाओं का मुरीद आज पूरा पूरा विश्व है।

निम्नलिखित कथनों को पढ़ें और बताएँ कि वे सही हैं या गलत :-

1. कलाएँ केवल मनोरंजन और अलंकरण के लिए होती हैं।
2. भारत की कलाएँ त्योहारों और उत्सवों से अलग की जा सकती हैं।
3. प्रार्णतिहासिक काल में चित्रकला अभिव्यक्ति का एकमात्र माध्यम थी।
4. भीम बेटका की गुफाएँ मध्य प्रदेश में हैं और शैल चित्रों के लिए प्रसिद्ध हैं।
5. गुप्त साम्राज्य को कलाओं का काला युग कहा जाता है।
6. भरत मुनि का नाट्यशास्त्र केवल संगीत के लिए लिखा गया था।
7. मधुबनी चित्रकला मिथिला क्षेत्र से संबंधित है।
8. सामवेद में संगीत को साम कहा जाता था, जो पूजा और मंत्रोच्चार से जुड़ा था।
9. भारतीय संगीत में रागों का संबंध समय से नहीं है।
10. सभी भारतीय लोक नृत्य व्यक्तिगत प्रदर्शन पर आधारित हैं।

रिक्त स्थान भरें :-

1. समुद्र की लहरों को चित्रकार _____ से सजाता है।
2. भारत की विविधता हमारी _____ है।
3. मध्य प्रदेश की _____ गुफाएँ शैल चित्रों के लिए प्रसिद्ध हैं।
4. गुप्त साम्राज्य को कलाओं का _____ युग कहा जाता है।
5. भरत मुनि के _____ में संगीत, नृत्य, और अभिनय का शास्त्रीय स्वरूप वर्णित है।
6. उड़ीसा के _____ चित्रकला में गीतगोविंद को उकेरा गया है।
7. उत्तराखण्ड में रंगोली को _____ कहा जाता है।
8. वैदिक काल में संगीत दो प्रकार का था: _____ और देसी।
9. भारतीय संगीत में _____ राग का संबंध सुबह से है।
10. _____ नृत्य महाराष्ट्र के मछली पालन समुदाय से जुड़ा है।

मिलान करें:-

‘क’	‘ख’
1. भीम बेटका	● गुप्त साम्राज्य की गुफाएँ, चित्रों के लिए प्रसिद्ध
2. अजंता	● मध्य प्रदेश में शैल चित्रों वाली गुफाएँ
3. मधुबनी	● उड़ीसा की चित्रकला, गीतगोविंद से संबंधित
4. पटचित्र	● मिथिला क्षेत्र की लोक चित्रकला
5. नाट्यशास्त्र	● संगीत, नृत्य, और अभिनय का शास्त्रीय शास्त्र
6. वीणा	● महाराष्ट्र का कामुक आकर्षण वाला नृत्य
7. घूमर	● मुख्य भारतीय वाद्य यंत्र
8. लावणी	● राजस्थान का लोक नृत्य
9. कथकली	● केरल का शास्त्रीय नृत्य
10. मेघ राग	● सुबह के समय गाया जाने वाला राग

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 2-3 वाक्यों में दें :

1. भारतीय कलाएँ अपनी अभिव्यक्ति के लिए किन माध्यमों का उपयोग करती हैं?
2. भारत की कलाएँ त्योहारों और उत्सवों से कैसे जुड़ी हैं?
3. भीम बेटका की गुफाएँ क्यों प्रसिद्ध हैं?
4. गुप्त साम्राज्य को कलाओं का स्वर्ण युग क्यों कहा जाता है?
5. भरत मुनि के नाट्यशास्त्र का भारतीय कलाओं में क्या योगदान है?
6. मधुबनी चित्रकला की विशेषता क्या है और यह कहाँ से संबंधित है?
7. लोक और शास्त्रीय कलाओं के बीच क्या संबंध है?
8. वैदिक काल में संगीत के दो प्रकार कौन-से थे?
9. भारतीय संगीत में रागों का समय से क्या संबंध है?
10. घूमर और गिद्दा नृत्य कहाँ से संबंधित हैं और इनकी विशेषता क्या है?

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 5-10 वाक्यों में दें:-

1. भारतीय कलाओं को उत्सवधर्मी और विविधतापूर्ण क्यों कहा जाता है? उदाहरणों सहित समझाएँ।
2. प्रागैतिहासिक शैल चित्रों से लेकर अजंता-एलोरा की गुफाओं तक चित्रकला के विकास को संक्षेप में वर्णन करें।
3. भारतीय संगीत की विशेषताएँ क्या हैं? वैदिक काल से लेकर मध्यकाल तक इसके विकास को संक्षेप में बताएँ।
4. भारतीय नृत्य कला में भाव और भंगिमा की क्या भूमिका है? किसी एक शास्त्रीय नृत्य और एक लोक नृत्य के उदाहरण के साथ समझाएँ।
5. भारतीय कलाओं का विश्व के अन्य भागों में प्रसार कैसे हुआ? गांधार और तिब्बत की शैलियों के उदाहरण से समझाएँ।

शब्दावली

1. उत्सवधर्मी - उत्सवों और समारोहों को प्रिय मानने वाला।
2. विविधता - भिन्नता, अनेक रूपों का होना।
3. अभिव्यक्ति - भाव, विचार या अनुभव को व्यक्त करने की क्रिया।
4. चहचहाहट - चिड़ियों की मधुर ध्वनि।
5. मुद्राएँ - नृत्य या अभिनय में हाथों की विशिष्ट भंगिमाएँ।
6. विरासत - पीढ़ी-दर-पीढ़ी प्राप्त सांस्कृतिक धरोहर।
7. अलंकरण - सजावट, सौंदर्य बढ़ाने की क्रिया।
8. लोककला - जनसाधारण से जुड़ी कला, जो समुदाय द्वारा विकसित हो।
9. शास्त्रीय - शास्त्रों पर आधारित, नियमबद्ध और परिष्कृत कला।
10. पराकाष्ठा - चरम बिंदु, उच्चतम स्तर।
11. नाट्यशास्त्र - भरत मुनि द्वारा रचित कला और नाट्य का प्राचीन शास्त्र।
12. शैल चित्र - चट्टानों पर प्राकृतिक रंगों से बने प्राचीन चित्र।
13. गुफाएँ - प्राकृतिक या मानव-निर्मित चट्टानी संरचनाएँ, जहाँ कला दिखाई देती हैं।
14. लघुचित्र - छोटे आकार के चित्र, जो कपड़े, कागज या लकड़ी पर बनाए जाते हैं।
15. कलमकारी - कपड़े पर प्राकृतिक रंगों से बनाई गई चित्रकला।
16. फुलकारी - पंजाब की पारंपरिक कढ़ाई शैली।
17. वरली - महाराष्ट्र की जनजातीय चित्रकला।
18. पटचित्र - उड़ीसा की कागज या पत्तों पर बनाई जाने वाली चित्रकला।
19. मधुबनी - मिथिला क्षेत्र की प्रसिद्ध लोक चित्रकला।
20. ऐपण/अल्पना/संगोली - मांगलिक अवसरों पर बनाए जाने वाले अस्थायी फर्श चित्र।
21. मार्गी - धार्मिक और नियमबद्ध संगीत, जो समारोहों से जुड़ा हो।

- 22. देसी** - लोकप्रिय और समुदाय-केंद्रित संगीत।
- 23. साम** - सामवेद में वर्णित मंत्रोच्चार और गायन की शैली।
- 24. राग** - भारतीय संगीत में समय और भाव पर आधारित मेलोडिक ढाँचा।
- 25. वाद्ययंत्र** - संगीत उत्पन्न करने के लिए प्रयुक्त उपकरण, जैसे वीणा, बांसुरी।
- 26. संस्कारगीत** - जीवन के संस्कारों (जन्म, विवाह) से जुड़े गीत।
- 27. ऋतुगीत** - ऋतुओं से प्रेरित लोक गीत।
- 28. कजरी** - उत्तर प्रदेश की लोक गीत शैली, जो वर्षा और प्रेम से जुड़ी है।
- 29. सोहर** - उत्तर भारत में जन्मोत्सव पर गाए जाने वाले गीत।
- 30. नृत्य** - शारीरिक भंगिमाओं और लय के माध्यम से भावों की अभिव्यक्ति।
- 31. नट्यं** - अभिनय-केंद्रित प्रदर्शन, जिसमें शब्द और भंगिमाएँ महत्वपूर्ण हैं।
- 32. घूमर** - राजस्थान का लोक नृत्य, जिसमें महिलाएँ ओढ़नी के साथ नाचती हैं।
- 33. गिद्धा** - पंजाब का महिलाओं का उत्साहपूर्ण लोक नृत्य।
- 34. गरबा/दांडिया** - गुजरात के लोक नृत्य, जो नवरात्रि से जुड़े हैं।
- 35. लावणी** - महाराष्ट्र का कामुक और ऊर्जावान लोक नृत्य।
- 36. कथकली** - केरल का शास्त्रीय नृत्य, जो नाटकीय अभिनय पर आधारित है।
- 37. भरतनाट्यम्** - तमिलनाडु और कर्नाटक का शास्त्रीय नृत्य।
- 38. ओड़िशी** - उड़ीसा का शास्त्रीय नृत्य, जो भाव और मुद्राओं पर केंद्रित है।
- 39. साहचर्य** - साथ-साथ रहने और कार्य करने की भावना।
- 40. वसुधैव कुटुंबकम्** - विश्व को एक परिवार मानने की भारतीय दार्शनिक अवधारणा।

9

भारतीय गायिकाओं में बेजोड़ लता मंगेशकर

- कुमार गंधर्व

बरसों पहले की बात है। मैं बीमार था। उस बीमारी में एक दिन मैंने सहज ही रेडियो लगाया और अचानक एक अद्वितीय स्वर मेरे कानों में पड़ा। स्वर सुनते ही मैंने अनुभव किया कि यह स्वर कुछ विशेष है, रोज का नहीं। यह स्वर सीधे मेरे कलेज से जा भिड़ा। मैं तो हैरान हो गया। मुझे समझ में नहीं आ रहा था कि यह स्वर किसका है। मैं तन्मयता से सुनता ही रहा। गाना समाप्त होते ही गायिका का नाम घोषित किया गया लता मंगेशकर। नाम सुनते ही मैं चकित हो गया। मन-ही-मन एक संगति पाने का भी अनुभव हुआ। सुप्रसिद्ध गायक दीनानाथ मंगेशकर की अजब गायकी एक दूसरा स्वरूप लिए उन्हीं की बेटी की कोमल आवाज में सुनने का अनुभव हुआ।



मुझे लगता है 'बरसात' के भी पहले के किसी चित्रपट का वह कोई गाना था। तब से लता निरंतर गाती आ रही है और मैं भी उसका गाना सुनता आ रहा हूँ। लता के पहले प्रसिद्ध गायिका नूरजहाँ का चित्रपट संगीत में अपना जमाना था। परंतु उसी क्षेत्र में बाद में आई हुई लता उससे कहीं आगे निकल गई। कला के क्षेत्र में ऐसे चमत्कार कभी-कभी दीख पड़ते हैं। जैसे प्रसिद्ध सितारिये विलायत खाँ अपने सितारवादक पिता की तुलना में बहुत ही आगे चले गए।

मेरा स्पष्ट मत है कि भारतीय गायिकाओं में लता के जोड़ की गायिका हुई ही नहीं। लता के कारण चित्रपट संगीत को विलक्षण लोकप्रियता प्राप्त हुई है, यही नहीं लोगों का शास्त्रीय संगीत की ओर देखने का दृष्टिकोण भी एकदम बदला है। छोटी बात कहूँगा। पहले भी घर-घर छोटे बच्चे गाया करते थे पर उस गाने में और आजकल घरों में सुनाई देने वाले बच्चों के गाने में बड़ा अंतर हो गया है। आजकल के नन्हे मुन्ने भी स्वर में गुनगुनाते हैं। क्या लता इस जादू का कारण नहीं है? कोकिला का स्वर निरंतर कानों में पड़ने लगे तो कोई भी सुनने वाला उसका अनुकरण करने का प्रयत्न करेगा। ये स्वाभाविक ही है। चित्रपट संगीत के कारण सुंदर स्वर मालिकाएँ लोगों के कानों पर पड़ रही हैं। संगीत के विविध प्रकारों से उनका परिचय हो रहा है। उनका स्वर-ज्ञान बढ़ रहा है। सुरीलापन क्या है, इसकी समझ भी उन्हें होती जा रही है। तरह-तरह की लय के भी प्रकार उन्हें सुनाई पड़ने लगे हैं और आकारयुक्त लय के साथ उनकी जान-पहचान होती जा रही है। साधारण प्रकार के लोगों को भी उसकी सूक्ष्मता समझ में आने लगी है। इन सबका श्रेय लता को ही है। इस प्रकार उसने नयी पीढ़ी के संगीत को संस्कारित किया है और सामान्य मनुष्य में संगीत विषयक अभिरुचि पैदा करने में बड़ा हाथ बँटाया है। संगीत की लोकप्रियता, उसका प्रसार और अभिरुचि के विकास का श्रेय लता को ही देना पड़ेगा।

सामान्य श्रोता को अगर आज लता की 'ध्वनिमुद्रिका' और शास्त्रीय गायकों की 'ध्वनिमुद्रिका सुनाई जाए तो वह लता की 'ध्वनिमुद्रिका ही पसंद करेगा। गाना कौन से राग में गाया गया और ताल कौन-सा था, यह शास्त्रीय व्योरा इस आदमी को सहसा मालूम नहीं रहता। उसे इससे कोई मतलब नहीं कि राग मालकोस था और ताल त्रिताल। उसे तो

चाहिए वह मिठास, जो उसे मस्त कर दे, जिसका वह अनुभव कर सके और यह स्वाभाविक ही है। क्योंकि जिस प्रकार मनुष्यता हो तो वह मनुष्य है, वैसे ही 'गानपन' हो तो वह संगीत है। और लता का कोई भी गाना लीजिए तो उसमें शत-प्रतिशत यह 'गानपन' मौजूद मिलेगा।

लता की लोकप्रियता का मुख्य मर्म यह 'गानपन' ही है। लता के गाने की एक और विशेषता है, उसके स्वरों की निर्मलता। उसके पहले की पार्श्व गायिका नूरजहाँ भी एक अच्छी गायिका थी, इसमें संदेह नहीं तथापि उसके गाने में एक मादक उत्तान दिखता था। लता के स्वरों में कोमलता और मुग्धता है। ऐसा दिखता था है कि लता का जीवन की ओर देखने का जो दृष्टिकोण है वहीं उसके गायन की निर्मलता में झलक रहा है। हाँ, संगीत दिग्दर्शकों ने उसके स्वर की इस निर्मलता का जितना उपयोग कर लेना चाहिए था, उतना नहीं किया। मैं स्वयं संगीत दिग्दर्शक होता तो लता को बहुत जटिल काम देता, ऐसा कहे बिना रहा नहीं जाता।

लता के गाने की एक और विशेषता है, उसका नादमय उच्चार। उसके गीत के किन्हीं दो शब्दों का अंतर स्वरों के आलाप द्वारा बड़ी सुंदर रीति से भरा रहता है और ऐसा प्रतीत होता है कि वे दोनों शब्द विलीन होते-होते एक दूसरे में मिल जाते हैं। यह बात पैदा करना बड़ा कठिन है, परंतु लता के साथ यह बात अत्यंत सहज और स्वाभाविक हो बैठी है।

ऐसा माना जाता है कि लता के गाने में करुण रस विशेष प्रभावशाली रीति से व्यक्त होता है, पर मुझे खुद यह बात नहीं पटती। मेरा अपना मत है कि लता ने करुण रस के साथ उतना न्याय नहीं किया है। बजाए इसके, मुग्ध श्रृंगार की अभिव्यक्ति करने वाले मध्य या 'द्रुतलय' के गाने लता ने बड़ी उत्कटता से गाए हैं। मेरी दृष्टि से उसके गायन में एक और कमी है; तथापि यह कहना कठिन होगा कि इसमें लता का दोष कितना है और संगीत दिग्दर्शकों का दोष कितना। लता का गाना सामान्यतः ऊँची पट्टी में रहता है। गाने में संगीत दिग्दर्शक उसे अधिकाधिक ऊँची पट्टी में गवाते हैं और उसे अकारण ही चिलवाते हैं।

एक प्रश्न उपस्थित किया जाता है कि शास्त्रीय संगीत में लता का स्थान कौन-सा है। मेरे मत से यह प्रश्न खुद ही प्रयोजनहीन है। उसका कारण यह है कि शास्त्रीय संगीत और चित्रपट संगीत में तुलना हो ही नहीं सकती। जहाँ गंभीरता शास्त्रीय संगीत का स्थायीभाव है वहीं जलदलय और चपलता चित्रपट संगीत का मुख्य गुणधर्म है। चित्रपट संगीत का ताल प्राथमिक अवस्था का ताल होता है, जबकि शास्त्रीय संगीत में ताल अपने परिष्कृत रूप में पाया जाता है। चित्रपट संगीत में आधे तालों का उपयोग किया है, आसान होती है। यहाँ गीत और आधात को 'लोचा' को अग्र स्थान दिया जाता है; तथापि उत्तम जानकारी होना आवश्यक है और वह मिनट के गाए हुए चित्रपट के किसी गाने का तीन-साढ़े तीन घंटे की महफिल, इन दोनों एक ही है, ऐसा मैं मानता हूँ। किसी जीवन के रहस्य का विशद् रूप में से सुभाषित का या नन्ही सी कहावत हुआ भी दृष्टिगोचर होता है। उसी



जाता है। उसकी लयकारी बिलकुल अलग होती ज्यादा महत्व दिया जाता है। सुलभता और चित्रपट संगीत गाने वाले को शास्त्रीय संगीत की लता के पास निःसंशय है। तीन साढ़े तीन और एकाध खानदानी शास्त्रीय गायक को का कलात्मक और आनंदात्मक मूल्य उत्तम लेखक का कोई विस्तृत लेख वर्णन करता है तो वही रहस्य छोटे में सुंदरता और परिपूर्णता से प्रकट प्रकार तीन घंटों की रंगदार

महफिल का सारा रस लता की तीन मिनट की ध्वनिमुद्रिका में आस्वादित किया जा सकता है। उसका एक-एक गाना एक संपूर्ण कलाकृति होता है। स्वर, लय, शब्दार्थ का वहाँ त्रिवेणी संगम होता है और महफिल की बेहोशी उसमें समाई रहती है। वैसे देखा जाए तो शास्त्रीय संगीत क्या और चित्रपट संगीत क्या, अंत में रसिक को आनंद देने की सामर्थ्य किस गाने में कितना है, इस पर उसका महत्व ठहराना उचित है। मैं तो कहूँगा कि शास्त्रीय संगीत भी रंजक न हो, तो बिलकुल ही नीरस ठहरेगा। अनाकर्षक प्रतीत होगा और उसमें कुछ कमी-सी प्रतीत होगी। गाने में जो गानपन प्राप्त होता है, वह केवल शास्त्रीय बैठक के पक्केपन की वजह से ताल सुर के निर्दोष ज्ञान के कारण नहीं। गाने की सारी मिठास, सारी ताकत उसकी रंजकता पर मुख्यतः अवलंबित रहती है और रंजकता का मर्म रसिक वर्ग के समक्ष कैसे प्रस्तुत किया जाए, किस रीति से उसकी बैठक बिठाई जाए और श्रोताओं से कैसे सुसंवाद साधा जाए, इसमें समाविष्ट है। किसी मनुष्य का अस्थिपंजर और एक प्रतिभाशाली कलाकार द्वारा उसी मनुष्य का 'तैलचित्र', इन दोनों में जो अंतर होगा वही गायन के शास्त्रीय ज्ञान और उसकी स्वरों द्वारा की गई सुसंगत अभिव्यक्ति में होगा।

संगीत के क्षेत्र में लता का स्थान अव्वल दरजे के खानदानी गायक के समान ही मानना पड़ेगा। क्या लता तीन घंटों की महफिल जमा सकती है, ऐसा संशय व्यक्त करने वालों से मुझे भी एक प्रश्न पूछना है, क्या कोई पहली श्रेणी का गायक तीन मिनट की अवधि में चित्रपट का कोई गाना उसकी इतनी कुशलता और रसोत्कट्टा से गा सकेगा? नहीं, यही उस प्रश्न का उत्तर उन्हें देना पड़ेगा? खानदानी गवैयों का ऐसा भी दावा है कि चित्रपट संगीत के कारण लोगों की अभिरुचि बिगड़ गई है। चित्रपट संगीत ने लोगों के 'कान बिगड़ दिए' ऐसा आरोप लगाया जाता है। पर मैं समझता हूँ कि चित्रपट संगीत ने लोगों के कान खराब नहीं किए हैं, उलटे सुधार दिए हैं। ये विचार पहले ही व्यक्त किए हैं और उनकी पुनरुक्ति नहीं करूँगा।



सच बात तो यह है कि हमारे शास्त्रीय गायक बड़ी आत्मसंतुष्ट वृत्ति के हैं। संगीत के क्षेत्र में उन्होंने अपनी हुक्मशाही स्थापित कर रखी है। शास्त्र शुद्धता के कर्मकांड को उन्होंने आवश्यकता से अधिक महत्व दे रखा है। मगर चित्रपट

संगीत द्वारा लोगों की अभिजात्य संगीत से जान-पहचान होने लगी है। उनकी चिकित्सक और चौकस वृत्ति अब बढ़ती जा रही है। केवल शास्त्र शुद्ध और नीरस गाना उन्हें नहीं चाहिए, उन्हें तो सुरीला और भावपूर्ण गाना चाहिए। और यह क्रांति चित्रपट संगीत ही लाया है। चित्रपट संगीत समाज की संगीत विषयक अभिरुचि में प्रभावशाली मोड़ लाया है। चित्रपट संगीत की लचकदारी उसका एक और सामर्थ्य है, ऐसा मुझे लगता है। उस संगीत की मान्यताएँ, मर्यादाएँ, झंझट सब कुछ निराली है। चित्रपट संगीत का तंत्र ही अलग है। यहाँ नवनिर्मिति की बहुत गुंजाइश है। जैसा शास्त्रीय रागदारी का चित्रपट संगीत दिग्दर्शकों ने उपयोग किया, उसी प्रकार राजस्थानी, पंजाबी, बंगाली, प्रदेश के लोकगीतों के भंडार को भी उन्होंने खूब लूटा है, यह हमारे ध्यान में रहना चाहिए। धूप का कौतुक करने वाले पंजाबी लोकगीत, रुक्ष और निर्जल राजस्थान में पर्जन्या की याद दिलाने वाले गीत पहाड़ों की घाटियों, खोरों में प्रतिध्वनित होने वाले पहाड़ी गीत, ऋतुचक्र समझाने वाले और खेती के विविध कामों का हिसाब लेने वाले कृषिगीत और ब्रजभूमि में समाविष्ट सहज मधुर गीतों का अतिशय मार्मिक व रसानुकूल उपयोग चित्रपट क्षेत्र के प्रभावी संगीत दिग्दर्शकों ने किया है और आगे भी करते रहेंगे। थोड़े में कहूँ तो संगीत का क्षेत्र ही विस्तीर्ण है। वहीं अब तक अलक्षित, असंशोधित और अदृष्टिपूर्व ऐसा खूब बड़ा प्रांत है तथापि बड़े जोश से इसकी खोज और उपयोग चित्रपट के लोग करते चले आ रहे हैं। फलस्वरूप चित्रपट संगीत दिनोंदिन अधिकाधिक विकसित होता जा रहा है।

ऐसे इस चित्रपट संगीत क्षेत्र की लता अनभिषिक्त सम्राज्ञी है। और भी कई पाश्चं गायक-गायिकाएँ हैं, पर लता की लोकप्रियता इन सभी से कहीं अधिक है। उसकी लोकप्रियता के शिखर का स्थान अचल है। बीते अनेक वर्षों से वह गाती आ रही है और फिर भी उसकी लोकप्रियता अबाधित है। लगभग आधी शताब्दी तक जन-मन पर सतत प्रभुत्व रखना आसान नहीं है। ज्यादा क्या कहूँ, एक राग भी हमेशा टिका नहीं रहता। भारत के कोने-कोने में लता का गाना जा पहुँचे, यही नहीं परदेस में भी उसका गाना सुनकर लोग पागल हो उठें, यह क्या चमत्कार नहीं है? और यह चमत्कार हम प्रत्यक्ष देख रहे हैं।

ऐसा कलाकार शताब्दियों में शायद एक ही पैदा होता है। ऐसा कलाकार आज हम सभी के बीच है, उसे अपनी आँखों के सामने धूमता-फिरता देख पा रहे हैं। कितना बड़ा है हमारा भाग्य!

निम्नलिखित कथनों को पढ़ें और बताएँ कि वे सही हैं या गलत :-

1. कुमार गंधर्व ने लता मंगेशकर की आवाज को पहली बार टेलीविजन पर सुना था। (सही / गलत)
2. लता मंगेशकर ने नूरजहाँ को चित्रपट संगीत में पीछे छोड़ दिया। (सही / गलत)
3. लता के गायन ने शास्त्रीय संगीत की लोकप्रियता को कम किया। (सही / गलत)
4. लता के स्वरों में मादक उत्तान की विशेषता थी। (सही / गलत)
5. चित्रपट संगीत में ताल की तुलना में आघात और लय को अधिक महत्व दिया जाता है। (सही / गलत)
6. लता ने करुण रस की तुलना में मुग्ध श्रृंगार रस को बेहतर व्यक्त किया। (सही / गलत)
7. शास्त्रीय संगीत में चपलता और सुलभता प्रमुख गुण हैं। (सही / गलत)
8. लता की गायकी ने बच्चों में भी सुरीलापन और लय की समझ बढ़ाई। (सही / गलत)
9. चित्रपट संगीत ने लोगों के संगीत ज्ञान को बिगाड़ दिया है। (सही / गलत)
10. लता की लोकप्रियता का मुख्य कारण उनके गायन का 'गानपन' है। (सही / गलत)

निम्नलिखित वाक्यों में रिक्त स्थानों को पाठ के आधार पर उपयुक्त शब्दों या वाक्यांशों से भरें :-

1. कुमार गंधर्व ने बीमारी के दौरान _____ पर लता मंगेशकर की आवाज़ सुनी।
2. लता के पिता _____ एक सुप्रसिद्ध गायक थे।
3. लता ने _____ की तुलना में चित्रपट संगीत को अधिक लोकप्रिय बनाया।
4. लता के गायन की विशेषता है उनके स्वरों की _____ और नादमय उच्चार।
5. लेखक का मानना है कि लता ने _____ रस को उतना न्याय नहीं किया।
6. चित्रपट संगीत में _____ और सुलभता को अधिक महत्व दिया जाता है।
7. लता की गायकी ने सामान्य लोगों में संगीत की _____ को बढ़ाया।
8. चित्रपट संगीत में _____ लोकगीतों का उपयोग किया गया है।
9. लता का गाना एक _____ कलाकृति के समान है।
10. लता की लोकप्रियता _____ वर्षों तक अबाधित रही है।

मिलान करें :-

क		ख
1. लता मंगेशकर	●	चित्रपट संगीत में मादक उत्तान की विशेषता
2. नूरजहाँ	●	स्वरों की निर्मलता और मुग्धता
3. चित्रपट संगीत	●	गंभीरता और परिष्कृत ताल
4. शास्त्रीय संगीत	●	चपलता, सुलभता, और लोकगीतों का उपयोग
5. गानपन	●	लता की लोकप्रियता का मुख्य मर्म
6. मुग्ध श्रृंगार	●	लता ने इसे करुण रस से बेहतर व्यक्त किया
7. कुमार गंधर्व	●	लता की आवाज़ को रेडियो पर सुना
8. दीनानाथ मंगेशकर	●	लता के पिता और सुप्रसिद्ध गायक
9. ध्वनिमुद्रिका	●	लता के गानों की रिकॉर्डिंग
10. लोकगीत	●	चित्रपट संगीत में पंजाबी, राजस्थानी आदि का उपयोग

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 2-3 वाक्यों में दें :-

1. कुमार गंधर्व ने लता मंगेशकर की आवाज़ को पहली बार कब और कैसे सुना?
2. लता मंगेशकर ने चित्रपट संगीत को किस तरह लोकप्रिय बनाया?
3. लता के गायन की दो प्रमुख विशेषताएँ क्या हैं?
4. नूरजहाँ और लता मंगेशकर के गायन में क्या अंतर बताया गया है?
5. लता के गायन ने सामान्य लोगों की संगीत अभिरुचि पर क्या प्रभाव डाला?
6. चित्रपट संगीत और शास्त्रीय संगीत में क्या मुख्य अंतर है?
7. लता के गायन में करुण रस के बारे में लेखक का क्या मत है?
8. चित्रपट संगीत में लोकगीतों का उपयोग कैसे किया गया है?
9. लता की लोकप्रियता का मुख्य मर्म क्या है?
10. लेखक के अनुसार, शास्त्रीय गायकों की तुलना में लता का स्थान क्या है?

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 5-10 वाक्यों में दें :-

1. लता मंगेशकर की गायकी ने चित्रपट संगीत को कैसे नई ऊँचाइयों तक पहुँचाया? उदाहरणों के साथ समझाएँ।
2. लता के स्वरों की निर्मलता और नादमय उच्चार की विशेषताएँ क्या हैं? इनका उनके गायन पर क्या प्रभाव पड़ता है?
3. लेखक के अनुसार, लता मंगेशकर ने सामान्य श्रोताओं की संगीत अभिरुचि को कैसे प्रभावित किया?
4. चित्रपट संगीत और शास्त्रीय संगीत की तुलना में लेखक का क्या दृष्टिकोण है? दोनों के कलात्मक मूल्य पर उनके विचार स्पष्ट करें।
5. लता के गायन में मुग्ध श्रृंगार रस की अभिव्यक्ति को लेखक ने कैसे उत्कृष्ट माना है? उदाहरण सहित विश्लेषण करें।
6. लेखक ने शास्त्रीय गायकों की आत्मसंतुष्ट वृत्ति और चित्रपट संगीत की क्रांति के बारे में क्या कहा है?
7. चित्रपट संगीत में लोकगीतों के उपयोग ने इसकी लोकप्रियता को कैसे बढ़ाया? पाठ के आधार पर उदाहरणों सहित समझाएँ।

- 8.** लता मंगेशकर की लोकप्रियता को "चमत्कार" क्यों कहा गया है? उनके योगदान के वैश्विक प्रभाव को स्पष्ट करें।
- 9.** लेखक के अनुसार, चित्रपट संगीत ने लोगों के संगीत ज्ञान को कैसे सुधारा? इसकी तुलना शास्त्रीय संगीत से करें।
- 10.** "लता का गाना एक संपूर्ण कलाकृति है।" इस कथन को पाठ के आधार पर विश्लेषण करें और उदाहरणों सहित समझाएँ।

शब्दावली

- 1. अद्वितीय** - बेजोड़, अनुपम, जिसका कोई जोड़ न हो।
- 2. तन्मयता** - पूर्ण एकाग्रता, तल्लीनता।
- 3. चित्रपट** - चलचित्र, सिनेमा, फिल्म।
- 4. विलक्षण** - असाधारण, अनोखा।
- 5. कोकिला** - कोयल, जिसका स्वर मधुर माना जाता है।
- 6. गानपन** - गीत का मधुर और भावपूर्ण गुण, संगीत की आत्मा।
- 7. ध्वनिमुद्रिका** - रिकॉर्डिंग संगीत, जैसे ग्रामोफोन रिकॉर्ड या ऑडियो रिकॉर्डिंग।
- 8. निर्मलता** - स्वच्छता, पवित्रता, शुद्धता (यहाँ स्वर की शुद्धता)।
- 9. मादक** - नशीला, जो मर्स्त कर दे।
- 10. मुग्धता** - आकर्षण, मोहकता, जो मन को बाँध ले।
- 11. नादमय** - मधुर ध्वनि से परिपूर्ण, संनादति हुआ।
- 12. आलाप** - राग का प्रारंभिक स्वर-विस्तार, बिना शब्दों के गायन।
- 13. करुण रस** - गीत या कला में दुख और करुणा का भाव।
- 14. श्रृंगार** - प्रेम और सौंदर्य का रस, जो रोमांटिक भाव व्यक्त करता है।
- 15. द्रुतलय** - तेज गति की लय, संगीत में तीव्र ताल।
- 16. पट्टी** - स्वर का स्तर या पिच, विशेषकर ऊँची या नीची।
- 17. चिलवाना** - ऊँचे स्वर में गाने के लिए बाध्य करना।
- 18. स्थायीभाव** - कला का मूल भाव, जो उसका आधार बनता है।
- 19. जलदलय** - तेज और चंचल लय, चित्रपट संगीत की विशेषता।
- 20. चपलता** - चंचलता, तेजी और जीवंतता।
- 21. लोच** - लचीलापन, संगीत में सहजता और प्रवाह।
- 22. रसिक** - संगीत या कला का रसास्वादन करने वाला, कला प्रेमी।
- 23. रंजकता** - मनोरंजन करने और आनंद देने की क्षमता।
- 24. सुसंवाद** - सामंजस्यपूर्ण संवाद, श्रोताओं के साथ तालमेल।
- 25. अस्थिपंजर** - कंकाल, यहाँ संगीत के आधारभूत ढाँचे की तुलना।
- 26. तैलचित्र** - तेल रंगों से बना चित्र, यहाँ कलात्मक अभिव्यक्ति की तुलना।
- 27. खानदानी** - परंपरागत, उच्च कुल या शास्त्रीय संगीत परंपरा से संबंधित।
- 28. चिकित्सक** - जाँच करने वाला, सूक्ष्म विश्लेषण करने वाला।
- 29. लचकदारी** - लचीलापन, संगीत में विविधता और अनुकूलनशीलता।
- 30. नवनिर्मिति** - नई रचना, नवाचार।
- 31. पर्जन्य** - वर्षा, मेघ।
- 32. प्रतिध्वनित** - गूँजना, ध्वनि का फैलना।
- 33. ऋतुचक्र** - मौसमों का चक्र, जैसे बसंत, ग्रीष्म आदि।
- 34. मार्मिक** - हृदयस्पर्शी, भावनात्मक।
- 35. रसानुकूल** - रस के अनुरूप, भावनाओं को व्यक्त करने में समर्थ।
- 36. अनभिषिक्त** - बिना औपचारिक ताजपोशी के, फिर भी सर्वोच्च।

10

बाजार दर्शन

-जैनेंद्र कुमार

एक बार की बात कहता हूँ। मित्र बाजार गए तो थे कोई एक मामूली चीज लेने पर लौटे तो एकदम बहुत-से बंडल पास थे।

मैंने कहा-यह क्या? बोले-यह जो साथ थीं।

उनका आशय था कि यह पत्नी की महिमा है। उस महिमा का मैं कायल हूँ। आदिकाल से इस विषय में पति से पत्नी की ही प्रमुखता प्रमाणित है। और यह व्यक्तित्व का प्रश्न नहीं, स्वीत्व का प्रश्न है। स्त्री माया न जोड़े तो क्या मैं जोड़ूँ? फिर भी सच सच है और वह यह कि इस बात में पत्नी की ओट ली जाती है। मूल में एक और तत्व की महिमा सविशेष है। वह तत्व है मनीषीण, अर्थात् पैसे की गरमी या एनर्जी।



पैसा पावर है। पर उसके सबूत में आस-पास माल-टाल न जमा हो तो क्या वह खाक पावर है। पैसे को देखने के लिए बैंक हिसाब देखिए, पर माल अस्वाद मकान कोठी तो अनदेखे भी दीखते हैं। पैसे की उस 'पर्चेजिंग पावर' के प्रयोग में ही पावर का रस है।

लेकिन नहीं, लोग संयमी भी होते हैं। वे फिजूल सामान को फिजूल समझते हैं। वे पैसा बहाते नहीं हैं और बुद्धिमान होते हैं। बुद्धि और संयमपूर्वक वह पैसे को जोड़ते जाते हैं, जोड़ते जाते हैं। वह पैसे की पावर को इतना निश्चय समझते हैं कि उसके प्रयोग की परीक्षा उन्हें दरकार नहीं है। बस खुद पैसे के जुड़ा होने पर उनका मन गर्व से भरा फूला रहता है।

मैंने कहा यह कितना सामान ले आए। मित्र ने सामने मनीषीण फैला दिया, कहा- यह देखिए। सब उड़ गया, अब जो रेल-टिकट के लिए भी बचा हो।

मैंने तब तय माना कि और पैसा होता और सामान आता। वह सामान जरूरत की तरफ देखकर नहीं आया, अपनी 'पर्चेजिंग पावर' के अनुपात में आया है।

लेकिन, ठहरिए। इस सिलसिले में एक और भी महत्व का तत्व है, जिसे नहीं भूलना चाहिए। उसका भी इस करतब में बहुत कुछ हाथ है। वह महत्व है, बाजार।

मैंने कहा- यह इतना कुछ नाहक ले आए।

मित्र बोले-कुछ न पूछो। बाजार है कि शैतान का जाल है? ऐसा सजा-सजाकर माल रखते हैं कि बेहया ही हो जो न फँसे।

मैंने मन में कहा, ठीक । बाजार आमंत्रित करता है कि आओ मुझे लूटो और लूटो । सब भूल जाओ, मुझे देखो । मेरा रूप और किसके लिए है? मैं तुम्हारे लिए हूँ । नहीं कुछ चाहते हो, तो भी देखने में क्या हरत है । अजी आओ भी । इस आमंत्रण में यह खूबी है कि आग्रह नहीं है आग्रह तिरस्कार जगाता है । लेकिन उँचे बाजार का आमंत्रण मूक होता है और उससे चाह जगती है । चाह मतलब अभाव । चौक बाजार में खड़े होकर भादमी को लगने लगता है कि उसके अपने पास काफ़ी नहीं हैं और चाहिए और चाहिए । मेरे यहाँ कितना परिमित है और यहाँ कितना अतुलित है ओह! कोई अपने को न जाने तो बाजार का यह चौक उसे कामना से विकल बना छोड़े ।

विकल क्यों, पागल । असंतोष, तृष्णा और ईर्ष्या से घायल कर मनुष्य को सदा के लिए यह बेकार बना डाल सकता है । एक और मित्र की बात है । यह दोपहर के पहले के गए-गए बाजार से कहीं शाम को वापिस आए । आए तो खाली हाथ ।

मैंने पूछा- कहाँ रहे?

बोले- बाजार देखते रहे ।

मैंने कहा- बाजार को देखते क्या रहे?

बोले- क्यों? बाजार ।

तब मैंने कहा-लाए तो कुछ नहीं ।

बोले- हाँ पर यह समझ न आता था कि न लूँ तो क्या? सभी कुछ तो लेने को जी होता था । कुछ लेने का मतलब था शेष सब कुछ को छोड़ देना । पर मैं कुछ भी नहीं छोड़ना चाहता था । इससे मैं कुछ भी नहीं ले सका ।

मैंने कहा- खूब!

पर मित्र की बात ठीक थी । अगर ठीक पता नहीं है कि क्या चाहते हो तो सब ओर की चाह तुम्हें घेर लेगी । और तब परिणाम त्रास ही होगा, गति नहीं होगी, न कर्म ।

बाजार में एक जादू है । वह जादू आँख की राह काम करता है । वह रूप का जादू है पर जैसे चुंबक का जादू लोहे पर ही चलता है । वैसे ही इस जादू की भी मर्यादा है । जेब भरी हो और मन खाली हो ऐसी हालत में जादू का असर खूब होता है । जेब खाली पर मन भरा न हो, तो भी जादू चल जाएगा । मन खाली है तो बाजार की अनेकानेक चीजों का निमंत्रण उस तक पहुँच जाएगा । कहीं हुई उस वक्त जेब भरी तब तो फिर वह मन किसको मानने वाला है । मालूम होता है यह भी लूँ वह भी लूँ । सभी सामान जरूरी और आराम को बढ़ाने वाला मालूम होता है । पर यह सब जादू का असर है । जादू की सवारी उत्तरी कि पता चलता है कि फँसी चीजों की बहुतायत आराम में मदद नहीं देती, बल्कि खलल ही डालती है । थोड़ी देर को स्वाभिमान को जरूर संक मिल जाता है पर इससे अभिमान की गिल्टी की और खुराक ही मिलती है । जकड़ रेशमी डोरी की हो तो रेशम के स्पर्श के मुलायम के कारण क्या वह कम जकड़ होगी?

पर उस जादू की जकड़ से बचने का एक सीधा-सा उपाय है । वह यह कि बाजार जाओ तो खाली मन न हो । मन खाली हो, तब बाजार न जाओ । कहते हैं लू में जाना हो तो पानी पीकर जाना चाहिए । पानी भीतर हो, लू का लूपन व्यर्थ हो जाता है । मन लक्ष्य में भरा हो तो बाजार भी फैला-का-फैला ही रह जाएगा । तब वह पाव बिलकुल नहीं दे सकेगा, बल्कि कुछ आनंद ही देगा । तब बाजार तुमसे कृतार्थ होगा, क्योंकि तुम कुछ-न-कुछ सच्चा लाभ उसे दोगे । बाजार की असली कृतार्थता है आवश्यकता के समय काम आना ।

यहाँ एक अंतर चीन्ह लेना बहुत जरूरी है । मन खाली नहीं रहना चाहिए, इसका मतलब यह नहीं है कि वह मन बंद रहना चाहिए । जो बंद हो जाएगा, वह शून्य हो जाएगा । शून्य होने का अधिकार बस परमात्मा का है जो सनातन भाव

से संपूर्ण है। शेष सब अपूर्ण है। इससे मन बंद नहीं रह सकता। सब इच्छाओं का निरोध कर लोगे, यह झूठ है और अगर 'इच्छानिरोधस्तपः' का ऐसा ही नकारात्मक अर्थ हो तो वह तप झूठ है। वैसे तप की राह रेगिस्तान को जाती होगी, मोक्ष की राह वह नहीं है। ठाठ देकर मन को बंद कर रखना जड़ता है। लोभ का यह जीतना नहीं है कि जहाँ लोभ होता है, यानी मन में, वहाँ नकार हो! यह तो लोभ की ही जीत है और आदमी की हार। आँख अपनी फोड़ डाली, तब लोभनीय के दर्शन से बचे तो क्या हुआ? ऐसे क्या लोभ मिट जाएगा? और कौन कहता है कि आँख फूटने पर रूप दीखना बंद हो जाएगा? क्या आँख बंद करके ही हम सपने नहीं लेते हैं? और वे सपने क्या चैन-भंग नहीं करते हैं? इससे मन को बंद कर डालने की कोशिश तो अच्छी नहीं। वह अकारथ है यह तो हठवाला योग है। शायद हठ-ही-हठ है, योग नहीं है। इससे मन कुश भले हो जाए और पीला और अशक्त जैसे विद्वान का ज्ञान। वह मुक्त ऐसे नहीं होता। इससे वह व्यापक की जगह संकीर्ण और विराट की जगह क्षुद्र होता है। इसलिए उसका रोम-रोम मूंदकर बंद तो मन को करना नहीं चाहिए। वह मन पूर्ण कब है? हम में पूर्णता होती तो परमात्मा से अभिन्न हम महाशून्य ही न होते? अपूर्ण हैं, इसी से हम हैं। सच्चा ज्ञान सदा इसी अपूर्णता के बोध को हम में गहरा करता है। सच्चा कर्म सदा इस अपूर्णता की स्वीकृति के साथ होता है। अतः उपाय कोई वही हो सकता है जो बलात् मन को रोकने को न कहें, जो मन को भी इसलिए सुने क्योंकि वह अप्रयोजनीय रूप में हमें नहीं प्राप्त हुआ है। हाँ, मनमानेपन की छूट मन को न हो, क्योंकि वह अखिल का अंग है, खुद कुल नहीं है।

पड़ोस में एक महानुभाव रहते हैं जिनको लोग भगत जी कहते हैं। चूरन बेचते हैं। यह काम करते, जाने उन्हें कितने बरस हो गए हैं। लेकिन किसी एक भी दिन चूरन से उन्होंने छः आने पैसे से ज्यादा नहीं कमाए। चूरन उनका आस-पास सरनाम है। और खुद खूब लोकप्रिय हैं। कहीं व्यवसाय का गुरु पकड़ लेते और उस पर चलते तो आज खुशहाल क्या मालामाल होते! क्या कुछ उनके पास न होता। इधर दस वर्षों से मैं देख रहा हूँ, उनका चूरन हाथों-हाथ बिक जाता है। पर वह न उसे थोक देते हैं, न व्यापारियों को बेचते हैं। पेशगी आर्डर कोई नहीं लेते। बँधे वक्त पर अपनी चूरन की पेटी लेकर घर से बाहर हुए नहीं कि देखते-देखते छह आने की कमाई उनकी हो जाती है। लोग उनका चूरन लेने को उत्सुक जो रहते हैं। चूरन से भी अधिक शायद वह भगत जी के प्रति अपनी सद्भावना का देय देने को उत्सुक रहते हैं। पर छह आने पूरे हुए नहीं कि भगतजी बाकी चूरन बालकों को मुफ्त बॉट देते हैं। कभी ऐसा नहीं हुआ है कि कोई उन्हें पच्चीसों पैसा भी दे सके। कभी चूरन में लापरवाही नहीं हुई है। और कभी रोग होता भी मैंने उन्हें नहीं देखा है। और तो नहीं, लेकिन इतना मुझे निश्चय मालूम होता है कि इन चूरनवाले भगत जी पर बाजार का जादू नहीं चल सकता।

कहीं आप भूल न कर बैठिएगा। इन पंक्तियों को लिखने वाला में चूरन नहीं बेचता हूँ। जी नहीं, ऐसी हल्की बात भी न सोचिएगा। यह समझिएगा कि लेख के किसी भी मान्य पाठक से उस चूरन वाले को श्रेष्ठ बताने की मैं हिम्मत कर सकता हूँ। क्या जाने उस भोले आदमी को अक्षर-ज्ञान तक भी है या नहीं। और बड़ी बातें तो उसे मालूम क्या होंगी। और हम-आप न जाने कितनी बड़ी-बड़ी बातें जानते हैं। इससे यह तो हो सकता है कि वह चूरन वाला भगत हम लोगों के सामने एकदम नाचीज आदमी हो। लेकिन आप पाठकों की विद्वान श्रेणी का सदस्य होकर भी मैं यह स्वीकार नहीं करना चाहता हूँ कि उस अपदार्थ प्राणी को वह प्राप्त है जो हम में से बहुत कम को शायद प्राप्त है। उस पर बाजार का जादू वार नहीं कर पाता। माल बिछा रहता है। और उसका मन अडिग रहता है। पैसा उससे आगे होकर भीख तक माँगता है कि मुझे लो। लेकिन उसके मन में पैसे पर दया नहीं समाती। वह निर्मम व्यक्ति पैसे को अपने आहत गर्व में बिलखता ही छोड़ देता है। ऐसे आदमी के आगे क्या पैसे की व्यंग्य-शक्ति कुछ भी चलती होगी? क्या वह शक्ति कुंठित रहकर सलज्ज ही न हो जाती होगी?

पैसे की व्यंग्य-शक्ति की सुनिए। वह दारूण है। मैं पैदल चल रहा हूँ कि पास ही धूल उड़ाती निकल गई मोटर। वह क्या निकली मेरे कलेजे को कौंधती एक कठिन व्यंग्य की लीक ही आर-से-पार हो गई। जैसे किसी ने आँखों में उंगली देकर दिखा दिया हो कि देखो, उसका नाम है मोटर, और तुम उससे बंचित हो। यह मुझे अपनी ऐसी विडंबना मालूम होती है कि बस पूछिए नहीं। मैं सोचने को ही आता हूँ कि हाय, ये ही माँ-बाप रह गए थे जिनके यहाँ मैं जन्म लेने को था। क्यों न मैं मोटरवालों के यहाँ हुआ। उस व्यंग्य में इतनी शक्ति है कि जरा मैं मुझे अपने सगों के प्रति कृतघ्न कर सकती है।

लेकिन क्या लोकवैभव की यह व्यंग्य-शक्ति उस चूरन वाले अकिञ्चित्कर मनुष्य के आगे चूर-चूर होकर ही नहीं रह जाती? चूर-चूर क्यों, कहो पानी-पानी।

तो वह क्या बल है जो इस तीखे व्यंग्य के आगे ही अजेय ही नहीं रहता, बल्कि मानो उस व्यंग्य की क्रूरता को ही पिघला देता है?

उस बल को नाम जो दो; पर वह निश्चय उस तल की वस्तु नहीं है जहाँ पर संसारी वैभव फलता-फूलता है। वह कुछ अपर जाति का तत्त्व है। लोग स्पिरिचुअल कहते हैं; आत्मिक, धार्मिक, नैतिक कहते हैं। मुझे योग्यता नहीं कि मैं उन शब्दों में अंतर देखूँ और प्रतिपादन करूँ। मुझे शब्द से सरोकार नहीं। मैं विद्वान् नहीं कि शब्दों पर अटकूँ। लेकिन इतना तो है कि जहाँ तृष्णा है, बटोर रखने की स्पृहा है, वहाँ उस बल का बीज नहीं है। बल्कि यदि उसी बल को सच्चा बल मानकर बात की जाए तो कहना होगा कि संचय की तृष्णा और वैभव की चाह में व्यक्ति की निर्बलता हो प्रमाणित होती है। निर्बल ही धन की ओर झुकता है। वह अबलता है। वह मनुष्य पर धन की और चेतन पर जड़ की विजय है।

एक बार चूरन वाले भगत जी बाजार चौक में दीख गए। मुझे देखते ही उन्होंने जय जयराम किया। मैंने भी जयराम कहा। उनकी आँखें बंद नहीं थी और न उस समय वह बाजार को किसी भाँति कोस रहे मालूम होते थे। गृह में बहुत लोग, बहुत बालक मिले जो भगत जी द्वारा पहचाने जाने के इच्छुक थे। भगत जी ने सबको ही हँसकर पहचाना। सबका अभिवादन लिया और सबको अभिवादन किया। इससे तनिक भी यह नहीं कहा जा सकेगा कि चौक बाजार में होकर उनकी आँखें किसी से भी कम खुली थीं। लेकिन भौचकके हो रहने की लाचारी उन्हें नहीं थी। व्यवहार में पसोपेश उन्हें नहीं था और खोए से खड़े नहीं वह रह जाते थे। भाँति-भाँति के बढ़िया माल से चौक भरा पड़ा है।

उस सबके प्रति अप्रीति इस भगत के मन में नहीं है। जैसे उस समूचे माल के प्रति भी उनके मन में आशीर्वाद हो सकता है। विद्रोह नहीं, प्रसन्नता ही भीतर है, क्योंकि कोई रिक्त भीतर नहीं है। देखता हूँ कि खुली आँख, तुष्ट और मन, वह चौक बाजार में से चलते चले जाते हैं। राह में बड़े-बड़े फैसी स्टोर पड़ते हैं, पर पड़े रह जाते हैं। कहीं भगत नहीं रुकते। रुकते हैं तो एक छोटी पंसारी की दुकान पर रुकते हैं। वहाँ दो-चार अपने काम की चीज ली, और चले आते हैं। बाजार से हठपूर्वक विमुखता उनमें नहीं है: लेकिन अगर उन्हें जीरा और काला नमक चाहिए तो सारे चौक बाजार की सत्ता उनके लिए तभी तक है, तभी तक उपयोगी है, जब तक वहाँ जीरा मिलता है। जरूरत भर जीरा वहाँ से ले लिया कि फिर सारा चौक उनके लिए आसानी से नहीं के बराबर हो जाता है। वह जानते हैं कि जो उन्हें चाहिए वह है जीरा नमक। बस इस निश्चित प्रतीति के बल पर शेष सब चाँदनी चौक का आमंत्रण उन पर व्यर्थ होकर बिखरा रहता है। चौक की चाँदनी दाएँ-बाएँ भूखी-की-भूखी फैली रह जाती है; क्योंकि भगत जी को जीरा चाहिए वह तो कोने

वाली पंसारी की दुकान से मिल जाता है और वहाँ से सहज भाव में ले लिया गया है। इसके आगे आस-पास अगर चाँदनी बिछी रहती है तो बड़ी खुशी से बिछी रहे, भगत जी से बेचारी का कल्याण ही चाहते हैं।

यहाँ मुझे ज्ञात होता है कि बाजार को सार्थकता भी वही मनुष्य देता है जो जानता है कि वह क्या चाहता है। और जो नहीं जानते कि वे क्या चाहते हैं, अपनी 'पर्वजिग पावर' के गर्व में अपने पैसे से केवल एक विनाशक शक्ति शैतानी शक्ति, व्यंग्य की शक्ति ही बाजार को देते हैं। न तो वे बाजार से लाभ उठा सकते हैं, न उस बातार को सच्चा लाभदे सकते हैं। वे लोग बाजार का बाजारूपन बढ़ाते हैं। जिसका मतलब है कि कपट बढ़ाते हैं। कपट की बढ़ती का अर्थ परस्पर में सद्ग्राव की घटी। इस सद्ग्राव के हास पर आदमी आपस में भाई-भाई और सुहद और पड़ोसी फिर रह ही नहीं जाते हैं और आपस में कोरे गाहक और बंचक की तरह व्यवहार करते हैं। मानो दोनों एक-दूसरे को उगने की घात में हों। एक को हानि में दूसरे का अपना लाभ दीखता है और यह बाजार का, बल्कि इतिहास का; सत्य माना जाता है ऐसे बातार को बीच में लेकर लोगों में आवश्यकताओं का आदान-प्रदान नहीं होता बल्कि शोषण होने लगता है तब कपट सफल होता है, निष्कपट शिकार होता है। ऐसे बाजार मानवता के लिए विडंबना हैं और जो ऐसे बाजार का पोषण करता है, जो उसका शास्त्र बना हुआ है; वह अर्थशास्त्र सरासर औंधा है वह मायावी शास्त्र है वह अर्थशास्त्र अनीति-शास्त्र है।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न :

- 1. मित्र के बाजार से लौटने पर उनके पास क्या था?**
अ) एक मामूली चीज
ब) बहुत से बंडल
स) खाली हाथ
द) केवल मनीबैग

- 2. लेखक के अनुसार बाजार का जादू किस पर सबसे अधिक प्रभाव डालता है?**
अ) भरा हुआ मन
ब) खाली मन और भरी जेब
स) खाली जेब और भरा मन
द) संयमी व्यक्ति

- 3. चूरन वाले भगत जी की दैनिक कमाई कितनी थी?**
अ) छह रुपये
ब) छह आने
स) पच्चीस पैसे
द) एक रुपये

- 4. लेखक के अनुसार बाजार की सार्थकता किसके द्वारा तय होती है?**
अ) जो बहुत सारा सामान खरीदता है
ब) जो जानता है कि उसे क्या चाहिए
स) जो बाजार का जादू समझता है
द) जो पैसे की शक्ति पर भरोसा करता है

- 5. लेखक ने पैसे की शक्ति को किस रूप में वर्णित किया है?**
अ) आध्यात्मिक शक्ति
ब) व्यंग्य शक्ति
स) सृजनात्मक शक्ति
द) नैतिक शक्ति

लघु उत्तरीय प्रश्न :

- 1. लेखक के अनुसार बाजार का आमंत्रण किस प्रकार का होता है और यह मनुष्य को कैसे प्रभावित करता है?**
- 2. पाठ में 'मनीबैग' की महिमा को किस तरह समझाया गया है?**
- 3. चूरन वाले भगत जी की लोकप्रियता का कारण क्या है?**

4. लेखक ने बाजार को 'शैतान का जाल' क्यों कहा?
5. पाठ में 'खाली मन' और 'भरे मन' के बीच क्या अंतर बताया गया है?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न :

1. लेखक ने बाजार के जादू और उसकी सीमाओं का वर्णन कैसे किया है? क्या आप इस विचार से सहमत हैं कि बाजार का प्रभाव केवल खाली मन पर पड़ता है? अपने विचारों के साथ तर्क दीजिए।
2. पाठ में चूरन वाले भगत जी के चरित्र के माध्यम से लेखक ने कौन-सा जीवन दर्शन प्रस्तुत किया है? उनके जीवन से हमें क्या प्रेरणा मिलती है?
3. लेखक ने पैसे की 'व्यंग्य-शक्ति' की चर्चा की है। इस अवधारणा को उदाहरणों के साथ स्पष्ट कीजिए और बताइए कि यह मनुष्य के जीवन को कैसे प्रभावित करती है।
4. 'बाजार को सार्थकता वही मनुष्य देता है जो जानता है कि वह क्या चाहता है।' इस कथन के संदर्भ में लेखक के विचारों का विश्लेषण कीजिए और वर्तमान उपभोक्तावादी समाज पर इसके प्रभाव पर चर्चा करें।
5. लेखक ने अर्थशास्त्र को 'अनीति-शास्त्र' क्यों कहा? पाठ के आधार पर इस कथन की व्याख्या करें और अपनी राय व्यक्त करें।

-भदंत आनंद कौसल्यायन

जो शब्द सबसे कम समझ में आते हैं और जिनका उपयोग होता है सबसे अधिक ऐसे दो शब्द हैं सभ्यता और संस्कृति।

इन दो शब्दों के साथ जब अनेक विशेषण लग जाते हैं, उदाहरण के लिए जैसे भौतिक-सभ्यता और आध्यात्मिक-सभ्यता, तब दोनों शब्दों का जो थोड़ा बहुत अर्थ समझ में आया रहता है, वह भी गलत सलत हो जाता है। क्या यह एक ही चीज है अथवा दो वस्तुएँ? यदि दो हैं तो दोनों में क्या अंतर है? हम इसे अपने तरीके पर समझने की कोशिश करें।

कल्पना कीजिए उस समय की जब मानव समाज का अग्नि देवता से साक्षात् नहीं हुआ था। आज तो घर-घर चूल्हा जलता है। जिस आदमी ने पहले-पहल आग का आविष्कार किया होगा, वह कितना बड़ा आविष्कर्ता होगा।

अथवा कल्पना कीजिए उस समय की जब मानव को सुई-धागे का परिचय न था, जिस मनुष्य के दिमाग में पहले-पहल बात आई होगी कि लोहे के एक टुकड़े को धिसकर उसके एक सिरे को छेदकर और छेद में धागा पिरोकर कपड़े के दो टुकड़े एक साथ जोड़े जा सकते हैं, वह भी कितना बड़ा आविष्कर्ता रहा होगा!

इन्हीं दो उदाहरणों पर विचार कीजिए पहले उदाहरण में एक चीज है किसी व्यक्ति विशेष की आग का आविष्कार कर सकने की शक्ति और दूसरी चीज है आग का आविष्कार। इसी प्रकार दूसरे सुई-धागे के उदाहरण में एक चीज है सुई-धागे का आविष्कार कर सकने की शक्ति और दूसरी चीज है सुई-धागे का आविष्कार।

जिस योग्यता, प्रवृत्ति अथवा प्रेरणा के बल पर आग का व सुई-धागे का आविष्कार हुआ, वह है व्यक्ति विशेष की संस्कृति; और उस संस्कृति द्वारा जो आविष्कार हुआ, जो चीज उसने अपने तथा दूसरों के लिए आविष्कृत की, उसका नाम है सभ्यता। जिस व्यक्ति में पहली चीज, जितनी अधिक व जैसी परिष्कृत मात्रा में होगी, वह व्यक्ति उतना ही अधिक व वैसा ही परिष्कृत आविष्कर्ता होगा।

एक संस्कृत व्यक्ति किसी नयी चीज की खोज करता है; किंतु उसकी संतान को वह अपने पूर्वज से अनायास ही प्राप्त हो जाती है। जिस व्यक्ति को बुद्धि ने अथवा उसके विवेक ने किसी भी नए तथ्य का दर्शन किया, वह व्यक्ति ही वास्तविक संस्कृत व्यक्ति है और उसकी संतान जिसे अपने पूर्वज से वह वस्तु अनायास ही प्राप्त हो गई है, वह अपने पूर्वज की भाँति सभ्य भले ही बन जाए, संस्कृत नहीं कहला सकता। एक आधुनिक उदाहरण लें। न्यूटन ने गुरुत्वाकर्षण के सिद्धांत का आविष्कार किया। वह संस्कृत मानव था। आज के युग का भौतिक विज्ञान का विद्यार्थी न्यूटन के गुरुत्वाकर्षण से तो परिचित है ही; लेकिन उसके साथ उसे और भी अनेक बातों का ज्ञान प्राप्त है जिनसे शयद न्यूटन अपरिचित ही रहा। ऐसा होने पर भी हम आज के भौतिक विज्ञान के विद्यार्थी को न्यूटन की अपेक्षा अधिक सभ्य भले ही कह सके; पर न्यूटन जितना संस्कृत नहीं कह सकते।

आग के आविष्कार में कदाचित पेट की ज्वाला की प्रेरणा एक कारण रही। सुई-धागे के आविष्कार में शायद शीतोष्ण से बचने तथा शरीर को सजाने की प्रवृत्ति का विशेष हाथ रहा। अब कल्पना कीजिए उस आदमी की जिसका पेट भरा है, जिसका तन ढँका है, लेकिन जब वह खुले आकाश के नीचे सोया हुआ रात के जगमगाते तारों को देखता है, तो उसको केवल इसलिए नींद नहीं आती क्योंकि वह यह जानने के लिए परेशान है कि आखिर यह मोती भरा थाल क्या है? पेट भरने और तन ढँकने की इच्छा मनुष्य की संस्कृति की जननी नहीं है। पेट भरा और तन ढँका होने पर भी ऐसा मानव जो वास्तव में संस्कृत है, निठल्ला नहीं बैठ सकता। हमारी सभ्यता का एक बड़ा अंश हमें ऐसे संस्कृत आदमियों से ही मिला है, जिनकी चेतना पर स्थूल भौतिक कारणों का प्रभाव प्रधान रहा है, किंतु उसका कुछ हिस्सा हमें मनीषियों से भी मिला है जिन्होंने तथ्य-विशेष को किसी भौतिक प्रेरणा के वशीभूत होकर नहीं, बल्कि उनके अपने अंदर की सहज संस्कृति के ही कारण प्राप्त किया है। रात के तारों को देखकर न सो सकने वाला मनीषी हमारे आज के ज्ञान का ऐसा ही प्रथम पुरस्कर्ता था।

भौतिक प्रेरणा, ज्ञानेप्सा- क्या ये दो ही मानव संस्कृति के माता-पिता है? दूसरे के मुँह में कौर डालने के लिए जो अपने मुँह का कौर छोड़ देता है, उसको यह बात क्यों और कैसे सूझती है? रोगी बच्चे को सारी रात गोद में लिए जो माता बैठी रहती है, वह आखिर ऐसा क्यों करती है? सुनते हैं कि रुस का भाग्यविधाता लेनिन अपनी डैस्क में रखे हुए डबल रोटी के सूखे टुकड़े स्वयं न खाकर दूसरों को खिला दिया करता था। वह आखिर ऐसा क्यों करता था? संसार के मजदूरों को सुखी देखने का स्वप्न देखते हुए कार्ल मार्क्स ने अपना सारा जीवन दुख में बिता दिया। और इन सबसे बढ़कर आज नहीं, आज से ढाई हजार वर्ष पूर्व सिद्धार्थ ने अपना घर केवल इसलिए त्याग दिया कि किसी तरह तृष्णा के वशीभूत लड़ती करती मानवता सुख से रह सके।

हमारी समझ में मानव संस्कृति की जो योग्यता आग व सुई-धागे का आविष्कार कराती है; वह भी संस्कृति है जो योग्यता तारों की जानकारी कराती है। वह भी है; और जो योग्यता किसी महामानव से सर्वस्व त्याग कराती है, वह भी संस्कृति है।

और सभ्यता? सभ्यता है संस्कृति का परिणाम। हमारे खाने-पीने के तरीके, हमारे ओढ़ने पहनने के तरीके, हमारे गमना-गमन के साधन, हमारे परस्पर कट मरने के तरीके: सब हमारी सभ्यता हैं। मानव की जो योग्यता उससे आत्म-विनाश के साधनों का आविष्कार कराती हैं, हम उसे उसकी संस्कृति कहें या असंस्कृति? और जिन साधनों के बल पर वह दिन-रात आत्म-विनाश में जुटा हुआ है, उन्हें हम उसकी सभ्यता समझें या असभ्यता? संस्कृति का यदि कल्याण की भावना से नाता टूट जाएगा तो वह असंस्कृति होकर ही रहेगी और ऐसी संस्कृति का अवश्यंभावी परिणाम असभ्यता के अतिरिक्त दूसरा क्या होगा?

संस्कृति के नाम से जिस कूड़े-करकट के ढेर का बोध होता है। वह न संस्कृति है न रक्षणीय वस्तु। क्षण-क्षण परिवर्तन होने वाले संसार में किसी भी चीज को पकड़कर बैठा नहीं जा सकता। मानव ने जब-जब प्रज्ञा और मैत्री भाव से किसी नए तथ्य का दर्शन किया है तो उसने कोई वस्तु नहीं देखी है, जिसकी रक्षा के लिए दलबंदियों की जरूरत है।

मानव संस्कृति एक अविभाज्य वस्तु है और उसमें जितना अंश कल्याण का है, वह अकल्याणकर की अपेक्षा श्रेष्ठ ही नहीं स्थायी भी है।

अभ्यास प्रश्न

सही विकल्प चुनें :-

1. लेखक के अनुसार “संस्कृति” किसका द्योतक है?
 - अ. केवल पहनावे का
 - ब. भौतिक उपलब्धियों का
 - स. मनुष्य की आंतरिक चेतना और प्रवृत्ति का
 - द. धर्म और जाति का
2. सभ्यता किसका परिणाम मानी गई है?
 - अ. धर्म का
 - ब. समाज का
 - स. संस्कृति का
 - द. विज्ञान का
3. लेखक ने सुई-धागे के आविष्कार को किसकी देन बताया है?
 - अ. भूख की
 - ब. सजने-संवरने की
 - स. शीत से बचने और सजने की प्रवृत्ति की
 - द. युद्ध की तैयारी की
4. न्यूटन को लेखक ने क्यों ‘संस्कृत मानव’ कहा है?
 - अ. क्योंकि उन्होंने विज्ञान पढ़ाया
 - ब. क्योंकि वे सभ्य व्यक्ति थे
 - स. क्योंकि उन्होंने एक मौलिक खोज की
 - द. क्योंकि वे राजा थे

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 3-5 वाक्यों में दें :-

1. लेखक ने संस्कृति और सभ्यता में क्या मुख्य अंतर बताया है?
2. आग और सुई-धागे के आविष्कार को लेखक किस प्रकार दो दृष्टियों से देखता है?
3. लेखक के अनुसार ‘संस्कृति’ को जन्म देने वाली प्रेरणाएँ क्या-क्या हो सकती हैं?
4. लेखक ने सिद्धार्थ (गौतम बुद्ध) का उदाहरण किस संदर्भ में दिया है?
5. “मनुष्य की संस्कृति यदि कल्याण की भावना से जुड़ी न हो...” – इस वाक्य का भाव स्पष्ट कीजिए।

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 5-10 वाक्यों में दें :-

1. ‘संस्कृति’ और ‘सभ्यता’ एक-दूसरे से कैसे भिन्न हैं? लेखक के दृष्टिकोण से स्पष्ट कीजिए।
2. गद्यांश के आधार पर समझाइए कि संस्कृति का वास्तविक रूप क्या है और क्यों उसकी रक्षा के लिए दलबंदियों की आवश्यकता नहीं है?

3. लेखक ने किन उदाहरणों के माध्यम से यह बताया है कि संस्कृति एक आंतरिक प्रेरणा है, न कि केवल बाहरी उपलब्धियाँ?

4. ‘सभ्यता बिना संस्कृति के असभ्यता हो सकती है’ – इस विचार पर अपने शब्दों में विवेचना कीजिए।

- सीताराम सेक्सरिया

26 जनवरी : आज का दिन तो अमर दिन है। आज के ही दिन सारे हिंदुस्तान में स्वतंत्रता दिवस मनाया गया था। और इस वर्ष भी उसकी पुनरावृत्ति थी, जिसके लिए काफ़ी तैयारियाँ पहले से की गई थीं। गत वर्ष अपना हिस्सा बहुत साधारण था। इस वर्ष जितना अपने दे सकते थे, दिया था। केवल प्रचार में दो हज़ार रुपया खर्च किया गया था। सारे काम का भार अपने समझते थे अपने ऊपर है, और इसी तरह जो कार्यकर्ता थे, उनके घर जा-जाकर समझाया था। बड़े बाज़ार के प्रायः मकानों पर राष्ट्रीय झंडा फहरा रहा था और कई मकान तो ऐसे सजाए गए थे कि ऐसा मालूम होता था कि मानो स्वतंत्रता मिल गई हो। कलकत्ते के प्रत्येक भाग में ही झंडे लगाए गए थे। जिस रास्ते से मनुष्य जाते थे, उसी रास्ते में उत्साह और नवीनता मालूम होती थी। लोगों का कहना था कि ऐसी सजावट पहले नहीं हुई। पुलिस भी अपनी पूरी ताकत से शहर में गश्त देकर प्रदर्शन कर रही थी। मोटर लारियों में गोरखे तथा सारजेंट प्रत्येक मोड़ पर तैनात थे। कितनी ही लारियाँ शहर में घुमाई जा रही थीं। घुड़सवारों का प्रबंध था। कहीं भी ट्रैफ़िक पुलिस नहीं थी, सारी पुलिस को इसी काम में लगाया गया था। बड़े-बड़े पार्कों तथा मैदानों को पुलिस ने सवेरे से ही घेर लिया था।

मोन्यूमेंट के नीचे जहाँ शाम को सभा होने वाली थी, उस जगह को तो भोर में छह बजे से ही पुलिस ने बड़ी संख्या में घेर लिया था, पर तब भी कई जगह तो भोर में ही झंडा फहराया गया। श्रमानंद पार्क में बंगाल प्रांतीय विद्यार्थी संघ के मंत्री अविनाश बाबू ने झंडा गढ़ा तो पुलिस ने उनको पकड़ लिया तथा और लोगों को मारा या हटा दिया। तारा सुंदरी पार्क में बड़ा बाज़ार कांग्रेस कमेटी के युवक मंत्री हरिश्चंद्र सिंह झंडा फहराने गए, पर वे भीतर न जा सके। वहाँ पर काफ़ी मारपीट हुई और दो-चार आदमियों के सिर फट गए। गुजराती सेविका संघ की ओर से जुलूस निकला, जिसमें बहुत-सी लड़कियाँ थीं, उनको गिरफ़तार कर लिया।

11 बजे मारवाड़ी बालिका विद्यालय की लड़कियों ने अपने विद्यालय में झंडोत्सव मनाया। जानकीदेवी, मदालसा (मदालसा बजाज-नारायण) आदि भी गई थीं। लड़कियों को उत्सव का क्या मतलब है, समझाया गया। एक बार मोटर में बैठकर सब तरफ घूमकर देखा तो बहुत अच्छा मालूम हो रहा था। जगह-जगह फोटो उत्तर रहे थे। अपने भी फोटो का काफ़ी प्रबंध किया था। दो-तीन बजे कई आदमियों को पकड़ लिया गया, जिसमें मुख्य पूर्णोदास और पुरुषोत्तम राय थे।

सुभाष बाबू के जुलूस का भार पूर्णोदास पर था, पर यह प्रबंध कर चुका था। स्त्री समाज अपनी तैयारी में लगा था। जगह-जगह से स्त्रियाँ अपना जुलूस निकालने तथा ठीक स्थान पर पहुँचने की कोशिश कर रही थीं। मोन्यूमेंट के पास



जैसा प्रबंध भोर में था, वैसा करीब एक बजे नहीं रहा। इससे लोगों को आशा होने लगी कि शायद पुलिस अपना रंग न दिखलावे, पर वह कब रुकने वाली थी। तीन बजे से ही मैदान में हजारों आदमियों की भीड़ होने लगी और लोग टोलियाँ बना-बनाकर मैदान में घूमने लगे। आज जो बात थी, वह निराली थी।

जब से कानून भंग का काम शुरू हुआ है, तब से आज तक इतनी बड़ी सभा ऐसे मैदान में नहीं की गई थी, और यह सभा तो कहना चाहिए कि ओपन लड़ाई थी। पुलिस कमिश्नर का नोटिस निकल चुका था कि अमुक-अमुक धारा के अनुसार कोई सभा नहीं हो सकती। जो लोग काम करने वाले थे, उन सबको इंसपेक्टरों के द्वारा नोटिस और सूचना दे दी गई थी कि आप यदि सभा में भाग लेंगे तो दोषी समझे जाएँगे। इधर कौंसिल की तरफ से नोटिस निकल गया था कि मोन्यूमेंट के नीचे ठीक चार बजकर चौबीस मिनट पर झंडा फहराया जाएगा तथा स्वतंत्रता की प्रतिज्ञा ली जाएगी।

ठीक चार बजकर दस मिनट पर सुभाष बाबू जुलूस लेकर आए। उनको चौरंगी पर ही रोका गया, पर भीड़ की अधिकता के कारण पुलिस जुलूस को रोक नहीं सकी। मैदान के मोड़ पर पहुँचते ही पुलिस ने लाठियाँ चलानी शुरू कर दीं। बहुत आदमी घायल हुए, सुभाष बाबू पर भी लाठियाँ पड़ीं। सुभाष बाबू बहुत ज़ोरों से वंदे मातरम् बोल रहे थे। ज्योतिर्मय गांगुली ने सुभाष बाबू से कहा, “आप इधर आ जाइए।” पर सुभाष बाबू ने कहा, “आगे बढ़ो।”

यह सब तो अपने सुनी हुई लिख रहे हैं, पर सुभाष बाबू का और अपना विशेष फ़ासला नहीं था। सुभाष बाबू बड़े ज़ोर से वंदे मातरम् बोलते थे, यह अपनी आँख से देखा। पुलिस भयानक रूप से लाठियाँ चला रही थीं। क्षितीश चटर्जी का फटा हुआ सिर देखकर तथा उसका बहता हुआ खून देखकर आँख सिमट जाती थी। इधर यह हालत हो रही थी कि उधर स्त्रियाँ मोन्यूमेंट की सीढ़ियाँ चढ़ने की कोशिश कर रही थीं।

सुभाष बाबू को पकड़ लिया गया और गाड़ी में बैठाकर लालबाज़ार लॉकअप में भेज दिया गया। कुछ देर बाद ही स्त्रियाँ जुलूस बनाकर वहाँ से चलीं। साथ में बहुत बड़ी भीड़ इकट्ठी हो गई। बीच में पुलिस कुछ ठंडी पड़ी थी, उसने फिर डंडे चलाने शुरू कर दिए। अबकी बार भीड़ ज़्यादा होने के कारण बहुत आदमी घायल हुए। धर्मतल्ले के मोड़ पर आकर जुलूस टूट गया और करीब 50-60 स्त्रियाँ वहीं मोड़ पर बैठ गईं। पुलिस ने उनको पकड़कर लालबाज़ार भेज दिया। स्त्रियों का एक भाग आगे बढ़ा।

इस प्रकार करीब पौन घंटे के बाद पुलिस की लारी आई और उनको लालबाज़ार ले जाया गया। और भी कई आदमियों को पकड़ा गया। वृजलाल गोयनका, जो कई दिन से अपने साथ काम कर रहा था और दमदम जेल में भी अपने साथ था, पकड़ा गया। पहले तो वह झंडा लेकर वंदे मातरम् बोलता हुआ मोन्यूमेंट की ओर इतने ज़ोर से दौड़ा कि अपने आप ही गिर पड़ा और उसे एक अंग्रेजी घुड़सवार ने लाठी मारी, फिर पकड़कर कुछ दूर ले जाने के बाद छोड़ दिया। इस पर वह स्त्रियों के जुलूस में शामिल हो गया और वहाँ पर भी उसको छोड़ दिया, तब वह दो सौ आदमियों का जुलूस बनाकर लालबाज़ार गया और वहाँ पर गिरफ्तार हो गया। मदालसा भी पकड़ी गई थी। उससे मालूम हुआ कि उसको थाने में भी मारा था। सब मिलाकर 105 स्त्रियाँ पकड़ी गई थीं। बाद में रात को नौ बजे सबको छोड़ दिया गया। कलकत्ता में आज तक इतनी स्त्रियाँ एक साथ गिरफ्तार नहीं की गई थीं। करीब आठ बजे खादी भंडार आए तो कांग्रेस ऑफिस से फोन आया कि यहाँ बहुत आदमी चोट खाकर आए हैं और कई की हालत संगीन है, उनके लिए गाड़ी चाहिए। जानकीदेवी के साथ वहाँ गए, बहुत लोगों को चोट लगी हुई थी। डॉक्टर दासगुप्ता उनकी देखरेख तथा फोटो उतरवा रहे थे। उस समय तक 67 आदमी वहाँ आ चुके थे। बाद में तो 103 तक आ पहुँचे।

अस्पताल गए, लोगों को देखने से मालूम हुआ कि 160 आदमी तो अस्पतालों में पहुँचे और जो लोग घरों में चले गए, वे अलग हैं। इस प्रकार दो सौ घायल ज़रूर हुए हैं। पकड़े गए आदमियों की संख्या का पता नहीं चला, पर लालबाज़ार के लॉकअप में स्त्रियों की संख्या 105 थी। आज तो जो कुछ हुआ, वह अपूर्व हुआ है। बंगाल के नाम या कलकत्ता के नाम पर कलंक था कि यहाँ काम नहीं हो रहा है, वह आज बहुत अंश में धुल गया और लोग सोचने लग गए कि यहाँ भी बहुत सा काम हो सकता है।

अभ्यास प्रश्न

सही विकल्प चुनें :-

1) 26 जनवरी 1931 को कौन-सा दिवस मनाया गया?

- अ) गणतंत्र दिवस
- ब) संविधान दिवस
- स) स्वतंत्रता दिवस
- द) बलिदान दिवस

2) बंगाल प्रांतीय विद्यार्थी संघ के मंत्री कौन थे जिन्होंने श्रमानंद पार्क में झंडा फहराया?

- अ) पुरुषोत्तम राय
- ब) अविनाश बाबू
- स) हरिश्चंद्र सिंह
- द) सुभाष चंद्र बोस

5) मदालसा कौन थीं?

- अ) विद्यार्थिनी
- ब) कांग्रेस नेत्री
- स) सेविका संघ की कार्यकर्ता
- द) मदालसा बजाज-नारायण

3) मोन्यूमेंट के नीचे झंडा फहराने का समय क्या था?

- अ) दोपहर 12 बजे
- ब) सुबह 10 बजे
- स) शाम 6 बजे
- द) शाम 4 बजकर 24 मिनट

4) सुभाष बाबू को कहाँ ले जाकर बंद किया गया?

- अ) दमदम जेल
- ब) प्रेसिडेंसी जेल
- स) लालबाजार लॉकअप
- द) अलीपुर जेल

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 2-5 वाक्यों में दीजिए

1. कलकत्ता शहर को कैसे सजाया गया था?
2. पुलिस की क्या भूमिका थी इस दिन?
3. महिलाओं की भागीदारी का वर्णन करें।

निम्नलिखित वाक्यों के 5-10 वाक्यों में उत्तर दें :

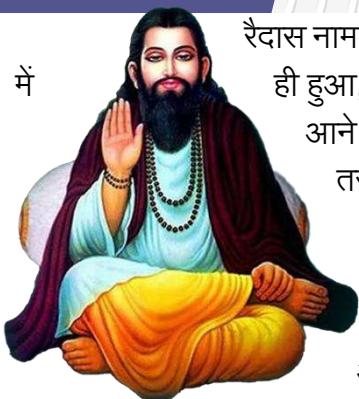
1. 26 जनवरी 1931 की घटना स्वतंत्रता संग्राम में क्यों महत्वपूर्ण मानी जाती है?
2. लेखक ने इस दिन की घटनाओं को डायरी में कैसे चित्रित किया है?

शब्दावली

पुनरावृत्ति	दोबारा होना, बार-बार होने की क्रिया।
प्रचार	जानकारी या विचार को लोगों तक पहुँचाना, प्रसार करना।
कार्यकर्ता	वह व्यक्ति जो किसी कार्य या आंदोलन में सक्रिय रूप से भाग लेता हो।
राष्ट्रीय	राष्ट्र से संबंधित, देश के लिए।
झंडोत्सव	राष्ट्रीय झंडा फहराने का समारोह।
सजावट	सजाने की क्रिया, आकर्षक बनाना।
गश्त	सुरक्षा के लिए क्षेत्र में घूमकर निगरानी करना।
प्रदर्शन	सार्वजनिक रूप से कुछ दिखाना या व्यक्त करना, जैसे आंदोलन या नाटक।
मोटर लारी	मोटर से चलने वाला भारी वाहन, ट्रक।
सारजेंट	पुलिस या सेना में एक निम्न-स्तरीय अधिकारी।
घुड़सवार	घोड़े पर सवार व्यक्ति, विशेष रूप से सैनिक।
प्रबंध	व्यवस्था करना, किसी कार्य को सुचारू रूप से करने की योजना।
सभा	लोगों का समूह जो किसी उद्देश्य के लिए एकत्रित हो।
भोर	सुबह का प्रारंभिक समय, सूर्योदय से पहले।
मारपीट	आपस में लड़ाई या हिंसक झड़प।
जुलूस	लोगों का समूह जो किसी उद्देश्य के लिए एक साथ सड़क पर चलता हो।
गिरफ्तार	कानून के तहत किसी को हिरासत में लेना।
विद्यालय	स्कूल, शिक्षा देने का स्थान।
उत्साह	जोश, प्रेरणा, कार्य करने की तीव्र इच्छा।
नवीनता	नयापन, ताजगी।
नोटिस	लिखित सूचना या चेतावनी।
धारा	कानून की कोई विशेष शर्त या नियम।
प्रतिज्ञा	किसी कार्य को करने का दृढ़ संकल्प या वचन।
लाठियाँ	लकड़ी की छड़ियाँ, विशेष रूप से पुलिस द्वारा उपयोग की जाने वाली।
घायल	चोटिल, जिसे शारीरिक क्षति पहुँची हो।
वंदे मातरम्	भारत का राष्ट्रीय गीत, स्वतंत्रता संग्राम में प्रेरणा का स्रोत।
लॉकअप	जेल या हिरासत कक्ष।
ठंडी पड़ना	स्थिति का शांत होना, उत्तेजना का कम होना।
संगीन	गंभीर, जोखिम भरा, महत्वपूर्ण।
अपूर्व	असाधारण, जो पहले कभी न हुआ हो।
कलंक	बदनामी, अपमान, दोष का ठप्पा।

13

संत रैदास— भक्ति पद



रैदास नाम से विख्यात संत रविदास का जन्म सन् 1388 और देहावसान सन् 1518 में बनारस में ही हुआ, ऐसा माना जाता है। इनकी ख्याति से प्रभावित होकर सिकंदर लोदी ने इन्हें दिल्ली आने का निमंत्रण भेजा था। मध्ययुगीन साधकों में रैदास का विशिष्ट स्थान है। कबीर की तरह रैदास भी संत कोटि के कवियों में गिने जाते हैं। मूर्तिपूजा, तीर्थयात्रा जैसे दिखावों में रैदास का ज़रा भी विश्वास न था। वे व्यक्ति की आंतरिक भावनाओं और आपसी भाईचारे को ही सच्चा धर्म मानते थे। रैदास ने अपनी काव्य-रचनाओं में सरल, व्यावहारिक ब्रजभाषा का प्रयोग किया है, जिसमें अवधी, राजस्थानी, खड़ी बोली और उर्दू-फ़ारसी के शब्दों का भी मिश्रण है। रैदास को उपमा और रूपक अलंकार विशेष प्रिय रहे हैं। सीधे-सादे पदों में संत कवि ने हृदय के भाव बड़ी सफाई से प्रकट किए हैं। उनके आत्मनिवेदन, दैन्य भाव और सहज भक्ति पाठक के हृदय को उद्भेदित करते हैं। रैदास के चालीस पद सिखों के पवित्र धर्मग्रंथ 'गुरुग्रंथ साहिब' में भी सम्मिलित हैं। यहाँ रैदास के दो पद लिए गए हैं। पहले पद 'प्रभु जी, तुम चंदन हम पानी' में कवि अपने आराध्य को याद करते हुए उनसे अपनी तुलना करता है। उसका प्रभु बाहर कहीं किसी मंदिर या मस्जिद में नहीं विराजता, वरन् उसके अपने अंतस में सदा विद्यमान रहता है। यही नहीं, वह हर हाल में, हर काल में उससे श्रेष्ठ और सर्वगुणसंपन्न है। इसीलिए तो कवि को उनके जैसा बनने की प्रेरणा मिलती है। दूसरे पद में भगवान की अपार उदारता, कृपा और उनके समदर्शी स्वभाव का वर्णन है। रैदास कहते हैं कि भगवान ने तथाकथित निम्न कुल के भक्तों को भी सहज-भाव से अपनाया है और उन्हें लोक में सम्माननीय स्थान दिया है।

पद - 1

अब कैसे छूटै राम नाम रट लागी।

प्रभु जी, तुम चंदन हम पानी, जाकी अंग-अंग बास समानी॥

प्रभु जी, तुम घन बन, हम मोरा, जैसे चितवत चंद चकोरा।

प्रभु जी, तुम दीपक, हम बाती, जाकी जोति बरै दिन राती।

प्रभु जी, तुम मोती, हम धागा, जैसे सोनहि मिलत सुहागा।

प्रभु जी, तुम स्वामी, हम दासा, ऐसी भक्ति करै रैदासा॥

पद का भावार्थ :

पंक्ति 1 :

अब कैसे छूटै राम नाम रट लागी ।

रैदास कहते हैं कि मैंने राम के नाम का निरंतर जप शुरू कर दिया है। यह जप मेरे जीवन का अभिन्न हिस्सा बन गया है, और अब इसे छोड़ना मेरे लिए असंभव है। राम का नाम मेरे हृदय में इस तरह रच-बस गया है कि वह मेरे अस्तित्व का आधार बन गया है।

पंक्ति 2 :

प्रभु जी, तुम चंदन हम पानी, जाकी अंग-अंग बास समानी॥

रैदास प्रभु और भक्त के संबंध को चंदन और पानी की उपमा से व्यक्त करते हैं। प्रभु चंदन के समान सुगंधित और पवित्र हैं, जबकि भक्त पानी के समान नम्र और सहायक है। जैसे पानी में चंदन धिसने से उसकी सुगंध चारों ओर फैलती है, वैसे ही भक्त के हृदय में प्रभु की भक्ति की सुगंध व्याप्त हो जाती है, जो उसके जीवन को पवित्र और सुगंधित बनाती है।

पंक्ति 3 :

प्रभु जी, तुम घन बन, हम मोरा, जैसे चितवत चंद चकोरा।

यहाँ प्रभु को घने बादल और भक्त को मोर से उपमित किया गया है। जैसे मोर बादल को देखकर नाचने लगता है, वैसे ही भक्त प्रभु के प्रति अनुराग और प्रेम से आकर्षित होकर उनके चिंतन में मग्न रहता है। यह उपमा भक्त की प्रभु के प्रति तीव्र भक्ति और एकनिष्ठ प्रेम को दर्शाती है।

पंक्ति 4 :

प्रभु जी, तुम दीपक, हम बाती, जाकी ज्योति बरै दिन राती।

रैदास प्रभु को दीपक और भक्त को उसकी बाती (बत्ती) बताते हैं। दीपक की ज्योति बाती के बिना नहीं जल सकती, और बाती दीपक के बिना अधूरी है। यह उपमा प्रभु और भक्त के अभिन्न संबंध को दर्शाती है, जहाँ भक्त प्रभु की कृपा से निरंतर प्रकाशित और प्रेरित रहता है, जो दिन-रात उसका मार्गदर्शन करता है।

पंक्ति 5 :

प्रभु जी, तुम मोती, हम धागा, जैसे सोनहिं मिलत सुहागा।

प्रभु को मोती और भक्त को धागे की उपमा दी गई है। जैसे धागा मोतियों को पिरोकर माला को सुंदर बनाता है, वैसे ही भक्त प्रभु की भक्ति में बंधकर उनके गुणों को अपने जीवन में संजोता है। सोना और सुहागा (बोरैक्स) की तरह, जो एक-दूसरे के साथ मिलकर और अधिक मूल्यवान बनते हैं, प्रभु और भक्त का मिलन भक्त के जीवन को पूर्ण और सार्थक बनाता है।

पंक्ति 6 :

प्रभु जी, तुम स्वामी, हम दासा, ऐसी भक्ति करै रैदासा॥

अंत में, रैदास प्रभु को स्वामी और स्वयं को उनका दास कहते हैं। यह दास्य भाव भक्ति की पराकाष्ठा को दर्शाता है, जहाँ भक्त पूर्ण समर्पण के साथ प्रभु की सेवा में अपना जीवन अर्पित करता है। रैदास कहते हैं कि ऐसी भक्ति ही उनके जीवन का लक्ष्य है, जिसमें वे प्रभु के प्रति पूर्ण निष्ठा और समर्पण के साथ जीते हैं।

इस पद में रैदास ने प्रभु और भक्त के संबंध को विभिन्न उपमाओं (चंदन-पानी, घन-मोरा, दीपक-बाती, मोती-धागा, स्वामी-दास) के माध्यम से अत्यंत सुंदर और भावनात्मक ढंग से व्यक्त किया है। ये उपमाएँ भक्त और ईश्वर के अभिन्न, प्रेमपूर्ण और समर्पित संबंध को दर्शाती हैं। रैदास का भक्ति भाव निर्गुण और सगुण भक्ति का समन्वय है, जो प्रभु के प्रति पूर्ण निष्ठा, प्रेम और आत्म-समर्पण को प्रकट करता है। यह पद भक्ति आंदोलन की समानता, नम्रता और ईश्वर के प्रति अनन्य भक्ति के सिद्धांतों को रेखांकित करता है।

शब्दावली	
1. ख्याति	प्रसिद्धि, यश
2. निमंत्रण	आमंत्रण, बुलावा
3. साधक	साधना करने वाला, भक्त
4. मूर्तिपूजा	मूर्तियों की पूजा, मूर्ति-उपासना
5. तीर्थयात्रा	पवित्र स्थानों की यात्रा
6. दिखावा	दिखावटीपन, बाहरी प्रदर्शन
7. आंतरिक	भीतरी, मन से संबंधित
8. भाईचारा	भाई-भाई का भाव, आपसी प्रेम
9. ब्रजभाषा	ब्रज क्षेत्र की भाषा, भक्ति काव्य में प्रयुक्त
10. अवधी	अवध क्षेत्र की भाषा
11. उपमा	समानता दर्शाने वाला अलंकार
12. बाती	दीपक की बत्ती
13. सोनहिं	सोना
14. सुहागा	बोरैक्स, जो सोने को शुद्ध करता है
15. दासा	दास, सेवक
16. गरीब निवाजु	गरीबों का रक्षक
17. गुसाईंआ	स्वामी, प्रभु
18. माथै छत्र धरै	सिर पर छत्र (सम्मान) देना
19. छाँति	छाया, रक्षा
20. नीचहु ऊँच	निम्न को उच्च करना

अभ्यास प्रश्न

1. निम्नलिखित पंक्तियों का अर्थ स्पष्ट करते हुए उनके भक्ति भाव को समझाइए :
“प्रभु जी, तुम चंदन हम पानी, जाकी अंग-अंग बास समानी।”
2. रैदास ने ‘प्रभु जी, तुम दीपक, हम बाती’ उपमा के माध्यम से क्या भाव व्यक्त किया है?
3. ‘प्रभु जी, तुम स्वामी, हम दासा’ पंक्ति में रैदास का कौन-सा भक्ति भाव प्रकट होता है?

निम्नलिखित प्रश्न के उत्तर 5-10 वाक्यों में दें :

1. रैदास ने इस पद में प्रभु और भक्त के संबंध को विभिन्न उपमाओं (चंदन-पानी, दीपक-बाती, मोती-धागा आदि) के माध्यम से व्यक्त किया है। इन उपमाओं के चयन में उनकी क्या विशेषता है और ये भक्ति भाव को कैसे सशक्त बनाती हैं?
2. निम्नलिखित पंक्तियों का अर्थ स्पष्ट करते हुए उनके भक्ति भाव को समझाइए :
“नीचहु ऊँच करै मेरा गोबिंदु, काहू ते न डरै।”

14

मीरा – मेरे तो गिरधर गोपाल

मीरा

जन्म: सन् 1498, कुड़की गाँव (मारवाड़ रियासत)

प्रमुख रचनाएँ: हे री मैं तो प्रेम दिवानी, जोगिया री प्रीतड़ी है दुखड़ा रों मूल, बसो
मेरे नैनन में नंदलाल, हरि बिन कूण गति मेरी, चालौं वाही देस, लगी मोहि राम
खुमारी हो

नहिं भावै थारो देसलड़ो रंगरुड़ो, श्रीराधे रानी दे डारो बाँसुरी मोरी

मृत्यु: सन् 1546 ई.

मीरा सगुण धारा की महत्वपूर्ण भक्ति कवयित्री थीं। कृष्ण की उपासिका होने के कारण उनकी कविता में सगुण भक्ति मुख्य रूप से मौजूद है, लेकिन निर्गुण भक्ति का प्रभाव भी मिलता है। संत कवि रैदास उनके गुरु माने जाते हैं। बचपन से ही उनके मन में कृष्ण भक्ति की भावना जन्म ले चुकी थी। इसलिए वे कृष्ण को ही अपना आराध्य और पति मानती रहीं।

अन्य भक्तिकालीन कवियों की तरह मीरा ने भी देश में दूर-दूर तक यात्राएँ कीं। चित्तौड़ राजघराने में अनेक कष्ट उठाने के बाद मीरा वापस मेड़ता आ गईं। यहाँ से उन्होंने कृष्ण की लीला भूमि वृदावन की यात्रा की। जीवन के अंतिम दिनों में वे द्वारका चली गईं। माना जाता है कि वहीं रणछोड़ दास जी के मंदिर की मूर्ति में वे समाहित हो गईं।



उन्होंने लोकलाज और फल की मर्यादा के नाम पर लगाए गए सामाजिक और वैचारिक बंधनों का हमेशा विरोध किया। पर्दा प्रथा का भी पालन नहीं किया तथा मंदिर में सार्वजनिक रूप से नाचने-गाने में कभी हिचक महसूस नहीं की।

मीरा मानती थीं कि महापुरुषों के साथ संवाद (जिसे सत्संग कहा जाता था) से ज्ञान प्राप्त होता है और ज्ञान से मुक्ति मिलती है। अपनी इन मान्यताओं को लेकर वे दृढ़निश्चयी थीं। निंदा या बंदगी उनको अपने पथ से विचलित नहीं कर पाई। जिस पर विश्वास किया, उस पर अमल किया। इस अर्थ में उस युग में जहाँ रुद्धियों से ग्रस्त समाज का दबदबा था, वहाँ मीरा स्त्री मुक्ति की आवाज़ बनकर उभरीं।

मीरा की कविता में प्रेम की गंभीर अभिव्यंजना है। उसमें विरह की वेदना है और मिलन का उल्लास भी। मीरा की कविता का प्रधान गुण सादगी और सरलता है। कला का अभाव ही उसकी सबसे बड़ी कला है। उन्होंने मुक्तक गेय पदों की रचना की। लोक संगीत और शास्त्रीय संगीत दोनों क्षेत्रों में उनके पद आज भी लोकप्रिय हैं। उनकी भाषा मूलतः राजस्थानी है तथा कहीं-कहीं ब्रजभाषा का प्रभाव है। कृष्ण प्रेम की दीवानी मीरा पर सूफियों के प्रभाव को भी देखा जा सकता है।

मीरा की कविता के मूल में दर्द है। वे बार-बार कहती हैं कि कोई मेरे दर्द को पहचानता नहीं- न शत्रु, न मित्र। यहाँ प्रस्तुत पद में मीरा ने कृष्ण से अपनी अनन्यता व्यक्त की है तथा व्यर्थ के कार्यों में व्यस्त लोगों के प्रति दुख प्रकट किया है।

यह पद **नरोत्तम दास स्वामी** द्वारा संकलित-संपादित **मीरामुक्तावली** से लिया गया है।

पद 1

मेरे तो गिरधर गोपाल, दूसरो न कोई।
जा के सिर मोर मुकुट, मेरो पति सोई॥
छाँड़ि दई कुल की कानि, कहा करिहै कोई?
संतन ढिग बैठि-बैठि, लोक-लाज खोई॥
अंसुवन जल सींचि-सींचि, प्रेम-बेलि बोई,
अब त बेलि फैलि गई, आनंद-फल होई॥
दूध की मथनियाँ बड़े प्रेम से विलोई,
दधि मथि घृत काढ़ि लियो, डारि दई छौई॥
भगत देखि राजी भई, जगत देखि रोई,
दासि मीरा लाल गिरधर! तारो अब मोही॥

संदर्भ :-

इस पद में मीरा ने अपनी अनन्य कृष्ण भक्ति को प्रकट करने के साथ-साथ अपने साहस और दृढ़ निश्चय को भी प्रकट किया है।

व्याख्या :-

मीराबाई एकमात्र श्रीकृष्ण को अपना कुटुंबी मानते हुए सार्वजनिक घोषणा करती हैं कि उनके तो केवल श्री कृष्ण हैं शेष कोई नहीं। वे यह भी कहती हैं कि जिसके सर पर मोर मुकुट है वही अर्थात् श्री कृष्ण उनके पति हैं। मीरा ने पिता, माता, भाई, बंधु सभी को परख लिया, अपना कोई नहीं होता। सभी रिश्ते स्वार्थ एवं व्यवहार के हैं। “परिवार की मर्यादा” नाम का बंधन मीरा ने त्याग दिया। अब जिसे जो करना हो



कर लो। मीरा अब संतों के निकट बैठती हैं, ज्ञान चर्चा करती हैं, भगवद् भजन करती हैं, जिससे तत्कालीन समाज में उनकी छवि धूमिल हुई क्योंकि शुरू से यह सारे कार्य व्यापार पुरुषों के द्वारा किए जाते थे।

इस प्रकार घर-बार छोड़ कर साधु बनना और साधुओं के बीच उठना-बैठना स्त्री सुलभ मर्यादा के खिलाफ समझा जाता था, जिसका मीरा ने अपने आचरण से विरोध किया। मीरा ने कीमती वस्त्रों का त्याग करते हुए महात्माओं वाला कंबल ओढ़ लिया (तमाम ऐश्वर्य त्याग दिए)।

मोती, मूँगे (आभूषण) उतार कर अपने प्रियतम श्रीकृष्ण को प्रिय वनमाला पिरोई। उन्होंने आंसुओं के जल से सिंचित कर प्रेम की बेल बोई। मीरा ने अब तक इतने कष्ट उठा लिए कि वह प्रेम की बेल आनंद रूपी फल प्रदान करने लगी।

उन्होंने दूध की मथनी को पूरा मन लगाकर बिलोया (मथा) और उस दही को मथ कर धी निकाल लिया एवं छाँच को छोड़ दिया। आशय है कि उन्होंने संत, महात्माओं, ज्ञानियों, मुनियों के साथ ईश्वर भक्ति पर लंबी-लंबी चर्चाएं की। इन चर्चाओं के बाद धन-सम्पदा और शेष देवी-देवताओं इत्यादि सब को छोड़कर इन्होंने कृष्ण भक्ति रूपी मक्खन को सभाल लिया। मीराबाई के लिए धन-संपदा, मान-पुरस्कार कोई अर्थ नहीं रखता। इसलिए जब भी सांसारिक कार्य-व्यापार की बात आती तो, वह निराश हो जाती और भक्तों से मुलाकात होती तो उन्हें अति प्रसन्नता होती। मीरा कहती हैं कि वे कृष्ण की दासी हैं और कृष्ण ही उनका उद्घार करें। अब वही उन्हें सांसारिक बंधनों से सर्वदा के लिए मुक्त कर दें।

शब्दावली –

1. गिरधर	श्रीकृष्ण का एक नाम, जो गोवर्धन पर्वत को धारण करने वाला कहलाता है।
2. गोपाल	श्रीकृष्ण का नाम, जो गायों का रक्षक है।
3. दूसरों न कोई	कोई अन्य नहीं, केवल एक ही।
4. मोर मुकुट	मोर के पंखों से बना मुकुट, श्रीकृष्ण का प्रतीक।
5. पति	स्वामी, प्रभु (यहाँ श्रीकृष्ण को संबोधन)।
6. कुल की कानि	परिवार की मर्यादा या प्रतिष्ठा।
7. संतन ढिग	संतों के साथ, संतों की संगति में।
8. लोक-लाज	समाज की मर्यादा, सामाजिक सम्मान।
9. अंसुवन जल	आँसुओं का पानी।
10. सींचि-सींचि	बार-बार सिंचन करना, पानी देना।
11. प्रेम-बेलि	प्रेम की लता, भक्ति का प्रतीक।
12. आनंद-फल	आनंद रूपी फल, भक्ति का सुखद परिणाम।
13. दूध की मथनियाँ	दूध मथने का बर्तन, मथनी।
14. विलोई	मथा, मंथन किया।
15. दधि	दही।
16. घृत	घी, मक्खन।
17. छौई	छाँच, मट्टा।
18. भगत	भक्त।
19. राजी	प्रसन्न, संतुष्ट।
20. जगत	संसार, दुनिया।
21. दासि	दासी, सेविका (यहाँ मीरा स्वयं को श्रीकृष्ण की दासी कहती हैं)।
22. लाल	प्रिय, प्रभु (श्रीकृष्ण के लिए संबोधन)।
23. तारो	उद्घार करो, मुक्ति दो।
24. मोही	मुझो।
25. कुटुंबी	परिवार का सदस्य, निकट का संबंधी।

26. सार्वजनिक	जनता के सामने, खुले तौर पर।
27. दृढ़ निश्चय	दृढ़ संकल्प, पक्का इरादा।
28. परख लिया	जाँच लिया, अनुभव कर लिया।
29. स्वार्थ	निजी लाभ, निजी हित।
30. व्यवहार	सामाजिक या सांसारिक संबंध।
31. धूमिल	बदनाम, कलंकित।
32. स्त्री सुलभ	स्त्रियों के लिए उपयुक्त मानी जाने वाली मर्यादा।
33. ऐश्वर्य	वैभव, धन-संपदा।
34. वनमाला	फूलों की माला, जो श्रीकृष्ण को प्रिय है।

- अभ्यास प्रश्न -

निम्नलिखित पंक्तियों का अर्थ स्पष्ट करते हुए उनके भक्ति भाव को समझाइए:

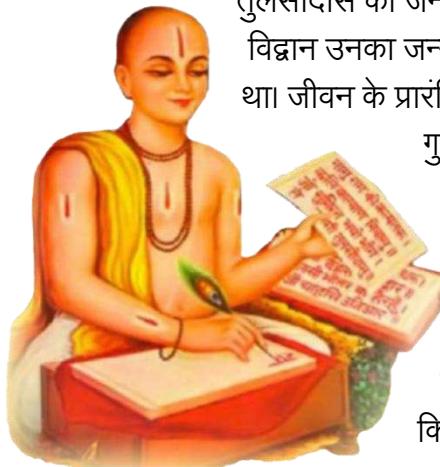
“मेरे तो गिरधर गोपाल, दूसरो न कोई जा के सिर मोर मुकुट, मेरो पति सोई।”

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 3-5 वाक्यों में दीजिए :

- अ. “छाँड़ि दई कुल की कानि, कहा करिहै कोई?” पंक्ति में मीरा ने समाज के प्रति अपनी क्या भावना व्यक्त की है?
- ब. “अंसुवन जल सींचि-सींचि, प्रेम-बेलि बोई” में प्रेम-बेलि से मीरा का क्या तात्पर्य है?
- स. “दधि मथि घृत काढ़ि लियो, डारि दई छोई” पंक्ति में मथन और घृत की उपमा से मीरा ने क्या संदेश दिया है?

15

तुलसीदास – राम-लक्ष्मण संवाद, पद



तुलसीदास का जन्म उत्तर प्रदेश के बाँदा ज़िले के राजापुर गाँव में सन् 1532 में हुआ था। कुछ विद्वान उनका जन्मस्थान सोरों (ज़िला एटा) भी मानते हैं। तुलसी का बचपन बहुत संघर्षपूर्ण था। जीवन के प्रारंभिक वर्षों में ही माता-पिता से उनका बिछोह हो गया। कहा जाता है कि गुरुकृपा से उन्हें रामभक्ति का मार्ग मिला। वे मानव-मूल्यों के उपासक कवि थे।

रामभक्ति परंपरा में तुलसी अतुलनीय हैं। रामचरितमानस कवि की अनन्य रामभक्ति और उनके सृजनात्मक कौशल का मनोरम उदाहरण है। उनके राम मानवीय मर्यादाओं और आदर्शों के प्रतीक हैं, जिनके माध्यम से तुलसी ने नीति, स्नेह, शील, विनय, त्याग जैसे उदात्त आदर्शों को प्रतिष्ठित किया। रामचरितमानस उत्तरी भारत की जनता के बीच बहुत लोकप्रिय है। मानस के अलावा कवितावली, गीतावली, दोहावली, कृष्णगीतावली, विनयपत्रिका आदि उनकी प्रमुख रचनाएँ हैं।

अवधी और ब्रज दोनों भाषाओं पर उनका समान अधिकार था। सन् 1623 में काशी में उनका देहावसान हुआ। तुलसी ने रामचरितमानस की रचना अवधी में और विनयपत्रिका तथा कवितावली की रचना ब्रजभाषा में की। उस समय प्रचलित सभी काव्यरूपों को तुलसी की रचनाओं में देखा जा सकता है। रामचरितमानस का मुख्य छंद चौपाई है तथा बीच-बीच में दोहा, सोरठा, हरिगीतिका तथा अन्य छंद पिरोए गए हैं। विनयपत्रिका की रचना गेय पदों में हुई है। कवितावली में सर्वैया और कवित्त छंद की छटा देखी जा सकती है। उनकी रचनाओं में प्रबंध और मुक्तक दोनों प्रकार के काव्यों का उत्कृष्ट रूप है।

राम-लक्ष्मण-परशुराम संवाद :-

नाथ संभुधनु भंजनिहारा॥ होइहि केउ एक दास तुम्हारा॥
आयसु काह कहिअ किन मोही॥ सुनि रिसाइ बोले मुनि कोही॥1॥

भावार्थ :- हे नाथ! शिवजी के धनुष को तोड़ने वाला आपका कोई एक दास ही होगा। क्या आज्ञा है, मुझसे क्यों नहीं कहते? यह सुनकर क्रोधी मुनि रिसाकर बोले-॥1॥

सेवक सो जो करै सेवकाई॥ अरि करनी करि करिअ लराई॥
सुनहु राम जेहिं सिवधनु तोरा॥ सहसबाहु सम सो रिपु मोरा॥2॥

भावार्थ :- सेवक वह है जो सेवा का काम करे। शत्रु का काम करके तो लड़ाई ही करनी चाहिए हे राम! सुनो, जिसने शिवजी के धनुष को तोड़ा है, वह सहस्राहु के समान मेरा शत्रु है॥2॥

सो बिलगाऊ बिहाइ समाजा। न त मारे जैहहि सब राजा॥
सुनि मुनि बचन लखन मुसुकाने। बोले परसुधरहि अपमाने॥3॥

भावार्थ :- वह इस समाज को छोड़कर अलग हो जाए, नहीं तो सभी राजा मारे जाएँगे। मुनि के बचन सुनकर लक्ष्मणजी मुस्कुराए और परशुरामजी का अपमान करते हुए बोले

बहु धनुहीं तोरी लरिकाईं कबहुँ न असि रिस कीन्हि गोसाई॥
एहि धनु पर ममता केहि हेतू। सुनि रिसाइ कह भृगुकुलकेतू॥

भावार्थ :- हे गोसाई! लड़कपन में हमने बहुत सी धनुषियाँ तोड़ डालीं, किन्तु आपने ऐसा क्रोध कभी नहीं किया। इसी धनुष पर इतनी ममता किस कारण से है? यह सुनकर भृगुवंश की धजा स्वरूप परशुरामजी कुपित होकर कहने लगे॥4॥

रे नृप बालक काल बस बोलत तोहि न सँभार।
धनुही सम तिपुरारि धनु बिदित सकल संसार॥

भावार्थ :- अरे राजपुत्र! काल के वश होने से तुझे बोलने में कुछ भी होश नहीं है। सारे संसार में विच्छात शिवजी का यह धनुष क्या धनुही के समान है?॥

लखन कहा हँसि हमरें जाना॥ सुनहु देव सब धनुष समाना॥
का छति लाभु जून धनु तोरें। देखा राम नयन के भोरें॥1॥

भावार्थ :- लक्ष्मणजी ने हँसकर कहा- हे देव! सुनिए, हमारे जान में तो सभी धनुष एक से ही हैं। पुराने धनुष के तोड़ने में क्या हानि-लाभ! श्री रामचन्द्रजी ने तो इसे नवीन के धोखे से देखा था॥1॥

छुअत टूट रघुपतिहु न दोसू। मुनि बिनु काज करिअ कत रोसू॥
बोले चितइ परसु की ओरा। रे सठ सुनेहि सुभाज न मोरा॥

भावार्थ :- फिर यह तो छूते ही टूट गया, इसमें रघुनाथजी का भी कोई दोष नहीं है। मुनि! आप बिना ही कारण किसलिए क्रोध करते हैं? परशुरामजी अपने फरसे की ओर देखकर बोले- अरे दुष्ट! तूने मेरा स्वभाव नहीं सुना।

बालकु बोलि बधउँ नहिं तोही। केवल मुनि जड जानहि मोही॥
बाल ब्रह्मचारी अति कोही। बिस्व बिदित छत्रियकुल द्रोही॥

भावार्थ :- मैं तुझे बालक जानकर नहीं मारता हूँ अरे मूर्ख! क्या तू मुझे निरा मुनि ही जानता है। मैं बालब्रह्मचारी और अत्यन्त क्रोधी हूँ क्षत्रियकुल का शत्रु तो विश्वभर में विख्यात हूँ।

भुजबल भूमि भूप बिनु कीन्ही। बिपुल बार महिदेवन्ह दीन्ही॥
सहस्राहु भुज छेदनिहारा। परसु बिलोकु महीपकुमारा॥

भावार्थ :- अपनी भुजाओं के बल से मैंने पृथ्वी को राजाओं से रहित कर दिया और बहुत बार उसे ब्राह्मणों को दे डाला है राजकुमार! सहस्रबाहु की भुजाओं को काटने वाले मेरे इस फरसे को देख!॥

मातु पितहि जनि सोचबस करसि महीसकिसोर।
गर्भन्ह के अर्भक दलन परसु मोर अति घोर॥

भावार्थ :- अरे राजा के बालक! तू अपने माता-पिता को सोच के वश न करा। मेरा फरसा बड़ा भयनक है, यह गर्भों के बच्चों का भी नाश करने वाला है।

बिहसि लखनु बोले मृदु बानी। अहो मुनीसु महा भटमानी॥
पुनि पुनि मोहि देखाव कुठारू। चहत उड़ावन फूँकि पहारू॥

भावार्थ :- लक्ष्मणजी हँसकर कोमल वाणी से बोले- अहो, मुनीश्वर तो अपने को बड़ा भारी योद्धा समझते हैं। बार-बार मुझे कुल्हाड़ी दिखाते हैं। फूँक से पहाड़ उड़ाना चाहते हैं।

इहाँ कुम्हड़बतिया कोउ नाहीं। जे तरजनी देखि मरि जाहीं॥
देखि कुठारू सरासन बाना। मैं कछु कहा सहित अभिमाना॥

भावार्थ :- यहाँ कोई कुम्हड़े की बतिया (छोटा कच्चा फल) नहीं है, जो तर्जनी (सबसे आगे की) अँगुली को देखते ही मर जाती है। कुठार और धनुष-बाण देखकर ही मैंने कुछ अभिमान सहित कहा था॥2॥

भृगुसुत समुद्धि जनेउ बिलोकी। जो कछु कहु सहउँ रिस रोकी॥
सुर महिसुर हरिजन अरु गाई। हमरें कुल इन्ह पर न सुराई॥

भावार्थ :- भृगुवंशी समझकर और यज्ञोपवीत देखकर तो जो कुछ आप कहते हैं, उसे मैं क्रोध को रोककर सह लेता हूँ। देवता, ब्राह्मण, भगवान के भक्त और गो- इन पर हमारे कुल में वीरता नहीं दिखाई जाती।

बधें पापु अपकीरति हारें। मारतहूँ पा परिअ तुम्हारें॥
कोटि कुलिस सम बचनु तुम्हारा। व्यर्थ धरहु धनु बान कुठारा॥

भावार्थ :- क्योंकि इन्हें मारने से पाप लगता है और इनसे हार जाने पर अपकीर्ति होती है, इसलिए आप मारें तो भी आपके पैर ही पड़ना चाहिए। आपका एक-एक वचन ही करोड़ों वज्रों के समान है। धनुष-बाण और कुठार तो आप व्यर्थ ही धारण करते हैं।

जो बिलोकि अनुचित कहेउँ छमहु महामुनि धीरा
सुनि सरोष भूगुबंसमनि बोले गिरा गंभीर॥

भावार्थ :- इन्हें (धनुष-बाण और कुठार को) देखकर मैंने कुछ अनुचित कहा हो, तो उसे हे धीर महामुनि! क्षमा कीजिए। यह सुनकर भूगुवंशमणि परशुरामजी क्रोध के साथ गंभीर वाणी बोले-॥273॥

कौसिक सुनहु मंद यहु बालकु। कुटिल कालबस निज कुल घालकु॥
भानु बंस राकेस कलंकु। निपट निरंकुस अबुध असंकु॥

भावार्थ :- हे विश्वामित्र! सुनो, यह बालक बड़ा कुबुद्धि और कुटिल है, काल के वश होकर यह अपने कुल का घातक बन रहा है। यह सूर्यवंश रूपी पूर्ण चन्द्र का कलंक है। यह बिल्कुल उद्धण्ड, मूर्ख और निडर है॥1॥

काल कवलु होइहि छन माही। कहउँ पुकारि खोरि मोहि नाहीं॥
तुम्ह हटकहु जाँ चहहु उबारा। कहि प्रतापु बलु रोषु हमारा॥

भावार्थ :- अभी क्षण भर में यह काल का ग्रास हो जाएगा। मैं पुकारकर कहे देता हूँ, फिर मुझे दोष नहीं है। यदि तुम इसे बचाना चाहते हो, तो हमारा प्रताप, बल और क्रोध बतलाकर इसे मना कर दो।

लखन कहेउ मुनि सुजसु तुम्हारा। तुम्हहि अछत को बरनै पारा॥
अपने मुँह तुम्ह आपनि करनी। बार अनेक भाँति बहु बरनी॥

भावार्थ :- लक्ष्मणजी ने कहा- हे मुनि! आपका सुयश आपके रहते दूसरा कौन वर्णन कर सकता है? आपने अपने ही मुँह से अपनी करनी अनेकों बार बहुत प्रकार से वर्णन की है।

नहिं संतोषु त पुनि कछु कहहू। जनि रिस रोकि दुसह दुख सहहू॥
बीरब्रती तुम्ह धीर अछोभा। गारी देत न पावहु सोभा॥

भावार्थ :- इतने पर भी संतोष न हुआ हो तो फिर कुछ कह डालिए। क्रोध रोककर असह्य दुःख मत सहिए। आप वीरता का व्रत धारण करने वाले, धैर्यवान और क्षोभरहित हैं। गाली देते शोभा नहीं पाते।

सूर समर करनी करहिं कहि न जनावहिं आपु।
बिद्यमान रन पाइ रिपु कायर कथहिं प्रतापु॥

भावार्थ :- शूरवीर तो युद्ध में करनी (शूरवीरता का कार्य) करते हैं, कहकर अपने को नहीं जनाते। शत्रु को युद्ध में उपस्थित पाकर कायर ही अपने प्रताप की डींग मारा करते हैं।

तुम्ह तौ कालु हाँक जनु लावा। बार बार मोहि लागि बोलावा॥
सुनत लखन के बचन कठोरा। परसु सुधारि धरेउ कर घोरा॥

भावार्थ :- आप तो मानो काल को हाँक लगाकर बार-बार उसे मेरे लिए बुलाते हैं। लक्ष्मणजी के कठोर वचन सुनते ही परशुरामजी ने अपने भयानक फरसे को सुधारकर हाथ में ले लिया।

अब जनि देइ दोसु मोहि लोगू। कटुबादी बालकु बधजोगू॥
बाल बिलोकि बहुत मैं बाँचा। अब यहु मरनिहार भा साँचा॥

भावार्थ :- और बोले- अब लोग मुझे दोष न दें। यह कड़ुआ बोलने वाला बालक मारे जाने के ही योग्य है। इसे बालक देखकर मैंने बहुत बचाया, पर अब यह सचमुच मरने को ही आ गया है।

कौसिक कहा छमिअ अपराधू। बाल दोष गुन गनहिं न साधू॥
खर कुठार मैं अकरुन कोही। आगें अपराधी गुरुद्रोही॥

भावार्थ :- विश्वामित्रजी ने कहा- अपराध क्षमा कीजिए। बालकों के दोष और गुण को साधु लोग नहीं गिनते। (परशुरामजी बोले-) तीखी धार का कुठार, मैं दयारहित और क्रोधी और यह गुरुद्रोही और अपराधी मेरे सामने-

उतर देत छोड़उँ बिनु मारें। केवल कौसिक सील तुम्हारें॥
न त एहि काटि कुठार कठोरें। गुरहि उरिन होतेउँ श्रम थोरें॥

भावार्थ :- उत्तर दे रहा है। इतने पर भी मैं इसे बिना मारे छोड़ रहा हूँ, सो हे विश्वामित्र! केवल तुम्हारे शील (प्रेम) से नहीं तो इसे इस कठोर कुठार से काटकर थोड़े ही परिश्रम से गुरु से उऋण हो जाता।

गाधिसूनु कह हृदय हँसि मुनिहि हरिअरइ सूझा।
अयमय खाँड न ऊखमय अजहुँ न बूझ अबूझ॥

भावार्थ :- विश्वामित्र जी ने हृदय में हँसकर कहा- मुनि को हरा ही हरा सूझ रहा है (अर्थात् सर्वत्र विजयी होने के कारण ये श्री राम-लक्ष्मण को भी साधारण क्षत्रिय ही समझ रहे हैं), किन्तु यह लोहमयी (केवल फौलाद की बनी हुई) खाँड़ (खाँड़ा-खड़ग) है, ऊख की (रस की) खाँड़ नहीं है (जो मुँह में लेते ही गल जाए। खेद है,) मुनि अब भी बेसमझ बने हुए हैं, इनके प्रभाव को नहीं समझ रहे हैं।

शब्दावली	
1. नाथ	स्वामी, प्रभु
2. संभुधनु	शिवजी का धनुष
3. भंजनिहारा	तोड़ने वाला
4. दास	सेवक, भक्त
5. आयसु	आज्ञा, आदेश
6. रिसाइ	क्रोध करना, गुरस्सा होना
7. मुनि	ऋषि, साधु
8. कोही	क्रोधी, गुरस्सैल
9. सेवकाई	सेवा करने का कार्य
10. अरि	शत्रु
11. सहस्रबाहु	सहस्रबाहु, अर्जुन नामक राजा जो अपनी हजार भुजाओं के लिए प्रसिद्ध था
12. बिलगाउ	अलग होना, हट जाना
13. समाजा	सभा, समूह
14. मुसुकाने	मुस्कुराना
15. परसुधर	परशुराम, फरसा धारण करने वाला
16. अपमाने	अपमान करना
17. लरिकाई	बचपन, बाल्यावस्था
18. ममता	लगाव, प्रेम
19. भृगुकुलकेतू	भृगु वंश की ध्वजा, परशुराम
20. नृप	राजा
21. काल बस	मृत्यु के वश में, मृत्यु के अधीन
22. सँभार	होश, समझ
23. तिपुरारि	त्रिपुर का शत्रु, शिवजी
24. बिदित	प्रसिद्ध, विख्यात
25. जाना	समझ, अनुभव
26. जून	पुराना
27. नयन के भोरे	आँखों का धोखा
28. छुअत	छूने पर

29. दोसू	दोष, अपराध
30. सठ	दुष्ट, मूर्ख
31. सुभाउ	स्वभाव, प्रकृति
32. बालकु	बालक, बच्चा
33. जड़	मूर्ख, नासमझ
34. बाल ब्रह्मचारी	आजीवन ब्रह्मचारी
35. छत्रियकुल द्रोही	क्षत्रिय कुल का शत्रु
36. भुजबल	भुजाओं का बल, शारीरिक शक्ति
37. महिदेव	ब्राह्मण (पृथ्वी के देवता)
38. महीपकुमारा	राजकुमार
39. मातु	माता, माँ
40. अर्भक	शिशु, बच्चा
41. मृदु बानी	कोमल वचन, नरम बात
42. मुनीसु	मुनियों का स्वामी
43. भटमानी	योद्धा मानने वाला, युद्ध में गर्व करने वाला
44. कुठारू	कुल्हाड़ी, फरसा
45. कुम्हड़बतिया	कच्चा कुम्हड़ा, कमजोर व्यक्ति
46. तरजनी	तर्जनी अंगुली, सबसे आगे की उँगली
47. सरासन	धनुष
48. जनेउ	यज्ञोपवीत, पवित्र धागा
49. सुराई	वीरता, शौर्य
50. अपकीरति	बदनामी, अपयश
51. कुलिस	वज्र, बिजली
52. धीर	धैर्यवान, शांतचित्त
53. कौसिक	विश्वामित्र, मुनि का नाम
54. कुटिल	कपटी, दुष्ट
55. राकेस	पूर्ण चन्द्र
56. कलंकू	कलंक, दोष
57. निरंकुस	उद्घण्ड, अनियंत्रित
58. अबुध	मूर्ख, बुद्धिहीन
59. खोरि	दोष, गलती
60. हटकहु	रोकना, मना करना
61. सुजसु	सुयश, कीर्ति
62. बरनै पारा	वर्णन करने की शक्ति

अभ्यास प्रश्न

1. निम्नलिखित पंक्तियों का अर्थ स्पष्ट करते हुए उनके भक्ति भाव और संवाद के तनाव को समझाइएः “सेवकु सो जो करै सेवकाई। अरि करनी करि करिअ लराई॥”
2. “सहसबाहु सम सो रिपु मोरा न त मारे जैहें सब राजा॥” पंक्ति में परशुराम का क्षत्रिय-विरोधी स्वभाव कैसे प्रकट होता है?
3. “लखन कहा हँसि हमरें जाना। सुनहु देव सब धनुष समाना॥” में लक्ष्मण की निडरता और व्यंग्य कैसे व्यक्त होता है?
4. “बालकु बोलि बधउँ नहिं तोही। केवल मुनि जड़ जानहि मोही॥” में परशुराम का क्रोध और आत्म-गौरव कैसे उजागर होता है?

16

बादल को घिरते देखा है

— नागार्जुन

अमल-धवल गिरि के शिखरों पर,
बादल को घिरते देखा है।
छोटे-छोटे मोती जैसे
उसके शीतल तुहिन कणों को,
मानसरोवर के उन स्वर्णिम
कमलों पर गिरते देखा है।
बादल को घिरते देखा है।

व्याख्या- नागार्जुन कहते हैं कि मैंने निर्मल और सफेद पर्वत की ऊँची चोटियों पर बादल को घिरते देखा है। मैंने उस बादल की छोटी-छोटी मोती जैसी ओस की बूँदों को मानसरोवर के स्वर्णिम कमलों पर गिरते हुए देखा है। मैंने बादल को घिरते देखा है।

तुंग हिमालय के कंधों पर
छोटी-बड़ी कई झीलें हैं,
उनके श्यामल नील सलिल में
समतल देशों से आ-आकर
पावस की उमस से आकुल
तिक्त-मधुर रसवंतु खोजते
हंसों को तिरते देखा है।
बादल को घिरते देखा है।

व्याख्या- कवि नागार्जुन कहते हैं कि ऊँचे हिमालय के कंधों अर्थात् चोटियों पर छोटी बड़ी अनेक झीले हैं। इन्हीं झीलों के काले और नीले जल में ऐसे हंसों को कवि ने तैरते हुए देखा है जो पावस अथवा वर्षा के समय की गर्मी से व्याकुल होकर मैदानी क्षेत्र से पहाड़ी स्थान पर आकर कमल के भीतर स्थित कड़वे और मीठे तंतु खोजते हैं। हिमालय क्षेत्र की चोटियों पर बादलों के घिरते हुए वातावरण को कवि ने साक्षात् अनुभव किया है।

ऋतु वसंत का सुप्रभात था
मंद-मंद था अनिल बह रहा,
बालारुण की मृदु किरणें थीं,
अगल-बगल स्वर्णिम शिखर थे।
एक-दूसरे से विरहित हो
अलग-अलग रहकर ही जिनको
सारी रात बितानी होती,
निशाकाल से चिर-अभिशापित
बेबस उस चकवा-चकई का
बद हुआ वंदन, फिर उनमें
उस महान सरोवर के तीरे
शैवालों की हरी दरी पर
प्रणय-कलह छिड़ते देखा है।
बादल को घिरते देखा है।

व्याख्या- कवि नागार्जुन कहते हैं कि वसंत ऋतु के सुंदर सुबह धीरे-धीरे हवा बह रही थी। सुबह-सुबह उदय होने वाले सूर्य की सुनहरी किरणों से आस-पास की पर्वत चोटियाँ सोने के समान चमक रही थीं। ऐसे सुंदर वातावरण के बीच कवि ने ऐसे चकवा-चकवी पक्षी जोड़े को देखा जो सदैव से ही रात्रि में अलग-अलग रहकर रात बिताते आए हैं और सुबह होने पर मिल जाते हैं। सुबह होने पर उन चकवा-चकवी के विरह का क्रंदन (रोना) अब समाप्त हो चुका है अब वे झील किनारे गने वाले शैवालों की हरी-हरी धास पर प्यार भरी नोंक-झोंक (छेड़छाड़) कर रहे हैं। कवि ने पर्वत की चोटियों पर बादल को घिरते देखा है।

दुर्गम बफ़ानी धाटी में
 शत-सहस्र फुट ऊँचाई पर
 अलख नाभि से उठनेवाले
 निज ही उन्मादक परिमलों
 के पीछे धावित हो-होकर
 तरल तनक कस्तूरी मृग को
 अपने पर चिढ़ते देखा है।
 बादल को घिरते देखा है।

कहाँ गया धनपति कुबेर वह?
 कहाँ गई उसकी वह अलका?
 नहीं ठिकाना कालिदास के
 व्योम-प्रवाही गंगाजल का।
 ढूँढ़ा बहुत, परंतु लगा क्या
 मेघदूत का पता कहीं पर?
 कौन बताएः वह छायामय
 बरस पड़ा होगा न यहीं पर!
 जाने दो, वह कवि-कल्पित था।
 मैंने तो भीषण जाड़ों में
 नभ-चुंबी वैष्णव शीर्ष पर
 महामेघ को झंझानिल से
 गरज-गरज भिड़ते देखा है।
 बादल को घिरते देखा है।

शत-शत निर्झर-निर्झरणी-कल, मुखरित देवदारु कानन में, शोणित-ध्वल भोजपत्रों से, छाई हुई धाटी के भीतर, रंग-बिरंगे और सुगंधित, फूलों से फुनगियाँ सजी हुईं, इंद्रनील की माला डाले, शंख-सरीखे सुघड़ गलों में, कानों में कुंडल लटकाए, शतदल लाल कमल वेणी में, रजत-रचित मणि-खचित कलामय, पान पात्र द्राक्षासव पूरित रखे सामने अपने-अपने, लोहित चंदन की त्रिपदी पर, नरम निदाघ बाल-कस्तूरी, मृगछालों पर पलथी मारे, मदिरारुण आँखों वाले उन, उन्मद किन्नर-किन्नरियों की मृदुल मनोरम अँगुलियों को, वंशी पर फिरते देखा है। बादल को घिरते देखा है।

व्याख्या - कवि नागार्जुन कहते हैं कि सैंकड़ों हजारों फुट ऊँची बर्फ की ऐसी धाटियों में जहाँ जाना बहुत ही कठिन है, वहाँ कवि ने ऐसे चंचल और युवा कस्तूरी मृग को अपने पर चिढ़ते देखा है जो अपनी न दिखने वाली नाभि से उठने वाली मस्त कर देने वाली सुगंध को पाने के लिए इधर-उधर दौड़ रहा है। कवि ने हिमालय पर्वत पर बादलों के घिरते दृश्य को देखा है।

व्याख्या - कवि कहता है कि हिमालय पर्वत पर रहने वाला धन का स्वामी कुबेर और उसकी नगरी अलका कहाँ चले गए और कवि को कालिदास द्वारा वर्णित आकाश में बहने वाले गंगाजल का भी कोई ठिकाना नहीं मिला। कवि कालिदास ने मेघदूत खंडकाव्य की रचना की थी। उसमें मेघ को दूत बनाकर भेजा जाता है। नागार्जुन कहते हैं कि बहुत ढूँढ़ने पर भी मेघदूत का पता कहीं नहीं मिला। कौन ये बताए कि वह छाया से युक्त बादल कहीं यहीं तो न बरस पड़ा होगा। फिर कवि को याद आता है कि वह तो कालिदास की कल्पना मात्र था। कवि ने तो इस भीषण जाड़े की ऋतु में गगन को चूमने वाले कैलाश पर्वत के शीर्ष पर विशाल बादलों को भीषण हवा से गरज-गरज कर भिड़ते देखा है। कवि ने हिमालय पर्वत पर बादलों के घिरते हुए मोहक वातावरण को देखा है।

व्याख्या - कवि कहता है कि उसने सैंकड़ों-सैंकड़ों झरनों और नदियों की कल-कल की आवाज से गुजायमान देवदारु वृक्ष के जंगलों में मदिरा पीने से लाल हुई आँखों वाले मस्त किन्नर-किन्नरियों की कोमल और सुंदर अँगुलियों को वंशी बजाते हुए देखा है। कवि किन्नर-किन्नरियों की शोभा का वर्णन करते हुए कहता है वे लाल-सफेद भोज-पत्रे से छाई हुई कुटी के भीतर बैठे थे। उन्होंने रंग-बिरंगे और सुगंधित फूल बालों की लटों पर सजा रखे थे। वे अपनी शंख से समान सुंदर गलों में इंद्रनील की माला डाले हुए थे। उन्होंने कानों में नीलकमल और चोटी पर लाल कमल लटकाए हुए थे। वे चाँदी से बनी हुई और मणियों से सजी हुई चित्रित सुराही में शराब डालकर अपने-अपने सामने रखे हुए थे और लाल चंदन की तिपाई पर नरम बिना दाग वाले कस्तूरी बाल हिरण की खाल से बनी चटाई पर पालती मारे बैठे हुए थे।

अभ्यास प्रश्न

1. सही उत्तर चुनें

क. कवि नागार्जुन ने कविता में किस पर्वत का वर्णन किया है?

- i. हिमालय
- ii. विंध्याचल
- iii. नीलगिरी
- iv. अरावली

ख. “बादल को घिरते देखा है” पंक्ति में बादल कहाँ घिरते हुए दिखाई देते हैं?

- i. समुद्र के ऊपर
- ii. पर्वत की चोटियों पर
- iii. मैदानी क्षेत्र में
- iv. जंगल में

ग. चकवा-चकई पक्षी कविता में किस समय एक-दूसरे से मिलते हैं?

- i. रात में
- ii. सुबह में
- iii. दोपहर में
- iv. शाम में

2. रिक्त स्थान भरें :-

क. कवि ने मानसरोवर के _____ कमलों पर ओस की बूँदें गिरते देखी हैं।

ख. हिमालय की झीलों में _____ पक्षी तैरते हुए दिखाई देते हैं।

ग. कस्तूरी मृग अपनी _____ से निकलने वाली सुगंध के पीछे दौड़ता है।

घ. कवि ने किन्नर-किन्नरियों को _____ बजाते हुए देखा है।

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 2-3 वाक्यों में दें :-

क. कवि ने हिमालय की चोटियों पर बादल को घिरते हुए क्या देखा है?

ख. चकवा-चकई पक्षी रात में क्यों अलग रहते हैं और सुबह क्या करते हैं?

ग. कस्तूरी मृग अपनी सुगंध के पीछे क्यों दौड़ता है?

घ. कविता में कालिदास के मेघदूत का जिक्र क्यों किया गया है?

4. सही या गलत बताएँ (1 अंक प्रत्येक) :-

क. कवि ने हिमालय की झीलों में मछलियाँ तैरते देखी हैं।

ख. चकवा-चकई सुबह मिलकर प्रणय-कलह करते हैं।

ग. कवि ने कुबेर की अलका नगरी को हिमालय में देखा है।

घ. किन्नर-किन्नरियाँ लाल चंदन की तिपाई पर बैठे थे।

5. जोड़े मिलाएँ :-

क	ख
क. मानसरोवर	● कस्तूरी मृग
ख. चकवा-चकई	● स्वर्णिम कमल
ग. बर्फानी धाटी	● प्रणय-कलह
घ. किन्नर-किन्नरी	● वंशी

1. सप्रसंग व्याख्या करें :-

निम्नलिखित पंक्तियों का अर्थ स्पष्ट करते हुए उनके प्रकृति-चित्रण और भाव को समझाइए :

“छोटे-छोटे मोती जैसे, उसके शीतल तुहिन कणों को, मानसरोवर के उन स्वर्णिम कमलों पर गिरते देखा है।”

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 5-10 वाक्यों में उत्तर दे :-

क. “तुंग हिमालय के कंधों पर, छोटी-बड़ी कई झीलें हैं” पंक्ति में कवि ने हिमालय की क्या विशेषता दर्शाई है?

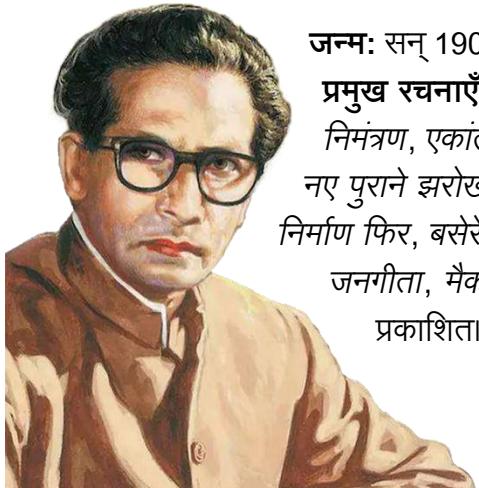
ख. “प्रणय-कलह छिड़ते देखा है” में चकवा-चकई के संदर्भ से कवि ने क्या भाव व्यक्त किया है?

ग. “तरल तनक कस्तूरी मृग को, अपने पर चिढ़ते देखा है” में कस्तूरी मृग की चंचलता कैसे चित्रित की गई है?

घ. “मेघदूत का पता कहीं पर?” पंक्ति में कालिदास के मेघदूत का उल्लेख क्यों किया गया है?

17

हरिवंश राय बच्चन : आत्मपरिचय



जन्म: सन् 1907, इलाहाबाद

प्रमुख रचनाएँ : काव्य संग्रह; मधुशाला, मधुबाला, मधुकलश, आत्म परिचय, निशा निमंत्रण, एकांत संगीत, आवृत्त अंतर, मिलनयामिनी, सतरंगिणी, आरती और अंगारे, नए पुराने झरोखे, टूटी-फूटी कड़ियाँ; आत्मकथा : क्या भूलूँ क्या याद करूँ, नीङ़ का निर्माण फिर, बसेरे से दूर, दशद्वार से सोपान तक, प्रवासी की डायर ; अनुवाद: हैमलेट, जनगीता, मैकबेथ। उनका पूरा वाङ्मय 'बच्चन ग्रंथावली' के नाम से दस खंडों में प्रकाशित।

निधन : सन् 2003, मुंबई में 1942-1952 तक इलाहाबाद

विश्वविद्यालय में प्राध्यापक, आकाशवाणी के साहित्यिक कार्यक्रमों से संबद्ध, फिर विदेश मंत्रालय में हिंदी विशेषज्ञ रहे दोनों महायुद्धों के बीच मध्यवर्ग के विक्षुब्ध, विकल मन को बच्चन ने वाणी का वरदान दिया। उन्होंने छायावाद की लाक्षणिक वक्रता के बजाय सीधी-सादी, जीवंत भाषा और संवेदन-सिक्त गेय शैली में अपनी बात कही। व्यक्तिगत जीवन में घटी घटनाओं की सहज अनुभूति की ईमानदार अभिव्यक्ति बच्चन की कविता बनकर प्रकट हुई। यही विशेषता हिंदी काव्य संसार में उनकी विलक्षण लोकप्रियता का मूल आधार है।

आत्मपरिचय :-

मैं जग-जीवन का भार लिए फिरता हूँ
फिर भी जीवन में प्यार लिए फिरता हूँ
कर दिया किसी ने झंझावत जिनको छूकर
मैं साँसों के दो तार लिए फिरता हूँ!

व्याख्या – कवि कहता है कि वह सांसारिक कठिनाइयों से जूझ रहा है, फिर भी वह इस जीवन से प्यार करता है। वह अपनी आशाओं और निराशाओं से संतुष्ट है। कवि बताता है कि मैं सांसों के तार लगे हृदय रूपी वाद्य यंत्र को लिए हुए हूँ, जिसे किसी ने छूकर झंकृत कर दिया है, कम्पित कर दिया है। यहाँ किसी ने कवि के प्रिय का प्रतीक है, यह प्रिय प्रेमिका हो सकती है, कोई मित्र हो सकता है। कवि चाहता है कि वह अपने प्रिय के प्रति प्रेम व्यक्त करे, उसे अपना स्नेह दे प्यार दे, वह अपने जी में प्रेम की ललक के लिए धूम रहा है।

मैं स्नेह-सुरा का पान किया करता हूँ,
मैं कभी न जग का ध्यान किया करता हूँ,
जग पूछ रहा उनको, जो जग की गाते,
मैं अपने मन का गान किया करता हूँ!

व्याख्या - हरिवंश राय बच्चन आगे कहते हैं कि मेरा मन प्रेम की मदिरा पीकर मस्त है, कवि के हृदय में प्रेम की भावना है इसलिए वह कहता है कि ये दुनिया वाले मेरे बारे में चाहे कुछ भी कहें, मैं प्रेम का प्याला पीकर अपने में मन रहता हूँ तथा प्रेम की मस्ती में झूमता हूँ लोग सामाजिक सरोकारों वाले कवियों को पसंद करते हैं लेकिन मैं तो अपने गीतों में अपने मन के भावों को व्यक्त करता हूँ और अपनी कविताओं का विषय भी मैं खुद ही हूँ।

मैं निज उर के उद्घार लिए फिरता हूँ,
मैं निज उर के उपहार लिए फिरता हूँ
है यह अपूर्ण संसार, न मुझको भाता,
मैं स्वप्नों का संसार लिए फिरता हूँ!

व्याख्या - कवि कहता है कि मैं इस दुनिया के बारे में नए-नए मनोभाव रखता हूँ। कवि कहना चाहता है कि वह अपने हृदय की स्नेहमयी वाणी को अभिव्यक्त करना चाहता है। मैं इस संसार को अपने हृदय के कोमल भाव प्रदान करना चाहता हूँ। मनुष्य अपनी असीम इच्छाओं एवं आकांक्षाओं के कारण इस भौतिक संसार में उलझा हुआ है जिस वजह से उनके बीच प्रेम भाव निरंतर समाप्त होता जा रहा है। इस अमूल्य प्रेम भावना से शून्य होने के कारण ही यह संसार कवि को अपूर्ण एवं अप्रिय लगता है और कवि चाहता है इस दुनिया में प्रेम हो।

मैं जला हृदय में अग्नि, दहा करता हूँ
सुख-दुःख दोनों में मन रहा करता हूँ।
जग भव-सागर तरने को नाव बनाए,
मैं भव-मौजों पर मस्त बहा करता हूँ।

व्याख्या - कवि अपने प्रेम की मदहोशी में मस्त है वह किसी भी सूरत में अपने प्रिय से दूर नहीं होना चाहता, इसलिए वह उसकी मधुर स्मृति की ज्वाला मन में सुलगाए हुए है। कवि को अपने प्रिय से बहुत गहरा प्रेम है और कवि को प्रिय की यादों में ही आनंद मिलता है। यह संसार सागर के समान भयंकर है और इसे तैरने के लिए कोई न कोई नाव ज़रूर चाहिए, कवि अपने प्रिय के प्रेम को नाव बनाकर उसी के सहारे यह भाव सागर को पार करना चाहता है। कवि को संसार के विषय-वासनाओं से गहरा लगाव नहीं है वह तो अपने प्रिय की मधुर यादों में मस्त होकर सुख दुःख में मस्त रहता है।

मैं यौवन का उन्माद लिए फिरता हूँ,
उन्मादों में अवसाद लिए फिरता हूँ,
जो मुझको बाहर हँसा, रुलाती भीतर,
मैं, हाय, किसी की याद लिए फिरता हूँ!

व्याख्या - इस काव्यांश में कवि ने अपने यौवन का वर्णन करते हुए अपने मनोभावों को प्रकट किया है। कवि कहता है मेरे मन में जवानी का पागलपन सवार रहता है। मैं अपनी प्रेमिका से मिलने के लिए बेचैन रहता हूँ। मैं दीवानों की तरह जीता हूँ मेरी दीवानगी मुझे कदम-कदम पर निराशा से भर देती है वियोग के कारण सदा कसमसाता रहता हूँ। मेरे मन में अपनी प्रिय की ऐसी कुछ यादें समाई हुई हैं जिसे याद करके मैं मन ही मन रोता हूँ परंतु दुनिया के सामने दिखाने को हँसता हूँ।

अभ्यास प्रश्न

1. सही उत्तर चुनें :-

क. कवि अपने हृदय में क्या लिए फिरता है?

- i. क्रोध
- ii. प्रेम
- iii. घृणा
- iv. डर

ख. कवि को यह संसार क्यों अपूर्ण लगता है?

- i. धन की कमी के कारण
- ii. प्रेम की कमी के कारण
- iii. यश की कमी के कारण
- iv. स्वास्थ्य की कमी के कारण

ग. कवि अपने गीतों में क्या व्यक्त करता है?

- i. सामाजिक समस्याएँ
- ii. अपने मन के भाव
- iii. प्रकृति का सौंदर्य
- iv. युद्ध के दृश्य

2. रिक्त स्थान भरें

क. कवि अपने हृदय में _____ की ज्वाला सुलगाए हुए हैं।

ख. कवि संसार को पार करने के लिए _____ को नाव बनाता है।

ग. कवि के मन में _____ का उन्माद रहता है।

घ. कवि बाहर _____ करता है, लेकिन भीतर _____ करता है।

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 3-5 वाक्यों में दें:

क. कवि ने “स्नेह-सुरा का पान किया करता हूँ” से क्या भाव व्यक्त किया है?

ख. कवि को यह संसार अपूर्ण क्यों लगता है?

ग. कवि अपने प्रिय की यादों में क्यों मस्त रहता है?

घ. “मैं स्वप्नों का संसार लिए फिरता हूँ” से कवि का क्या तात्पर्य है?

4. सही या गलत बताएँ

क. कवि सामाजिक सरोकारों के गीत गाता है।

ख. कवि अपने प्रिय की यादों में सुख-दुख दोनों में मरन रहता है।

ग. कवि को संसार की विषय-वासनाओं से गहरा लगाव है।

घ. कवि अपने यौवन के उन्माद में निराशा भी महसूस करता है।

शब्दावली

अमल-धवल	निर्मल और सफेद, शुद्ध और उज्ज्वल
गिरि	पर्वत, पहाड़
शिखर	चोटी, पर्वत का ऊपरी भाग
घिरते	इकट्ठा होना, चारों ओर से आना (बादलों का)
शीतल	ठंडा, सुहावना
तुहिन	ओस, बर्फ की छोटी बूँदें
कणों	छोटे-छोटे टुकड़े, बूँदें
मानसरोवर	पवित्र झील, हिमालय में स्थित
स्वर्णिम	सुनहरा, सोने के रंग का
कमलों	कमल के फूल
तुंग	ऊँचा, विशाल
हिमालय	हिमालय पर्वत
कंधों	कंधे, यहाँ पर्वत की चोटियों का प्रतीक
झीलें	छोटे जलाशय, ताल
श्यामल	काला, गहरा रंग
नील सलिल	नीला जल
समतल	सपाट, मैदानी
पावस	वर्षा, बरसात
उमस	गर्मी और नमी, घुटन
आकुल	व्याकुल, बेचैन
तिक्त-मधुर	कड़वा-मीठा
रसवंतु	रस युक्त, तंतु
हंसों	हंस, पक्षी
वसंत	वसंत ऋतु, बसंत

18

कर चले हम फ़िदा

- कैफ़ी आज़मी
(1919–2002)

अतहर हुसैन रिजवी का जन्म 19 जनवरी 1919 को उत्तर प्रदेश के आज़मगढ़ ज़िले में मजमां गाँव में हुआ। अदब की दुनिया में आगे चलकर वे कैफ़ी आज़मी नाम से मशहूर हुए। कैफ़ी आज़मी की गणना प्रगतिशील उर्दू कवियों की पहली पंक्ति में की जाती है। कैफ़ी की कविताओं में एक ओर सामाजिक और राजनैतिक जागरूकता का समावेश है तो दूसरी ओर हृदय की कोमलता भी है। अपनी युवावस्था में मुशायरों में वाह-वाही पाने वाले कैफ़ी आज़मी ने फ़िल्मों के लिए सैकड़ों बेहतरीन गीत भी लिखे हैं।

10 मई 2002 को इस दुनिया से रुखसत हुए कैफ़ी के पाँच कविता संग्रह झंकार, आखिर-ए-शब, आवारा सर्दी, सरमाया और फ़िल्मी गीतों का संग्रह मेरी आवाज़ सुनो प्रकाशित हुए। अपने रचनाकर्म के लिए कैफ़ी को साहित्य अकादमी पुरस्कार सहित कई पुरस्कारों से नवाज़ा गया। कैफ़ी कलाकारों के परिवार से थे। उनके तीनों बड़े भाई भी शायर थे। पत्नी शौकत अशमी, बेटी शबाना आज़मी मशहूर अभिनेत्रियाँ हैं।

कर चले हम फ़िदा

कर चले हम फ़िदा जान-ओ-तन साथियो
अब तुम्हारे हवाले वतन साथियो
साँस थमती गई, नब्ज जमती गई
फिर भी बढ़ते क़दम को न रुकने दिया
कट गए सर हमारे तो कुछ ग़म नहीं
सर हिमालय का हमने न झुकने दिया
मरते-मरते रहा बाँकपन साथियो
अब तुम्हारे हवाले वतन साथियो

व्याख्या –

प्रस्तुत गीत कैफ़ी आज़मी द्वारा भारत-चीन युद्ध की पृष्ठभूमि पर बनी फ़िल्म 'हकीकत' से लिया गया है। इस गीत में कवि ने खुद को भारत माता के सैनिक के रूप में अंकित किया है। कवि कहते हैं कि युद्धभूमि में सैनिक शहीद होते हुए अपने दूसरे साथियों से कहते हैं कि हमने अपने जान और तन को देश सेवा में समर्पित कर दिया, हम जा रहे हैं, अब देश की रक्षा करने का भार तुम्हारे हाथों में है। हमारी साँस थम रही थीं, ठंड से नसें जम रही थीं, हम मृत्यु की गोद में जा रहे थे फिर भी हमने पीछे हटकर उन्हें आगे बढ़ने का मौका नहीं दिया। हमारे कटे सिरों यानी शहीद हुए जवानों का हमें ग़म नहीं है, हमारे लिये ये प्रसन्नता की बात है कि हमने अपने जीते जी हिमालय का सिर झुकने नहीं

दिया यानी दुश्मनों को देश में प्रवेश नहीं करने दिया। मरते दम तक हमारे अंदर बलिदान और संघर्ष का जोश बना रहा। हम बलिदानी देकर जाकर रहे हैं, अब देश की रक्षा करने का भार तुम्हारे हाथों में है।

जिंदा रहने के मौसम बहुत हैं मगर
जान देने की रुत रोङ्ग आती नहीं
हुस्न और इश्क दोनों को रस्वा करे
वो जवानी जो खूँ में नहाती नहीं
आज धरती बनी है दुल्हन साथियो
अब तुम्हारे हवाले वतन साथियो

व्याख्या –

कवि एक सैनिक के रूप में कहता है कि व्यक्ति को जिन्दा रहने के लिए बहुत समय मिलते हैं परन्तु देश के लिए जान देने के मौके कभी-कभी ही मिलते हैं। जो जवानी खून में सराबोर नहीं होती वही प्यार और सौंदर्य को बदनाम करती है। सैनिक अपने साथियों की सम्बोधित करते हुए कहते हैं कि आज धरती दुल्हन बनी हुई है यानी हमारी आन, बान और शान का प्रतीक है, इसलिए इसकी रक्षा करना हमारा कर्तव्य है। हमारे जाने के बाद इसकी रक्षा की जिम्मेवारी अब आपके हाथों में है।

राह कुर्बानियों की न वीरान हो
तुम सजाते ही रहना नए क़ाफ़िले
फ़तह का जश्न इस जश्न के बाद है
जिंदगी मौत से मिल रही है गले
बाँध लो अपने सर से क़फ़न साथियो
अब तुम्हारे हवाले वतन साथियो

व्याख्या –

शहीद होते हुए सैनिक कहते हैं कि बलिदानों का जो सिलसिला चल पड़ा है वो कभी रुक ना पाये यानी अपने देश की दुश्मनों से रक्षा के लिए सैनिक हमेशा आगे बढ़ते रहे। इन कुर्बानियों के बाद ही हमें जश्न मनाने के अवसर मिलेंगे। आज हम मृत्यु को प्राप्त होने वाले हैं इसलिए हमें अपने सिर पर कफ़न बाँध लेना चाहिए यानी मृत्यु का चिंता ना करते हुए शत्रु से लोहा लेने के लिए तैयार रहना चाहिए। अब हमारे जाने के बाद देश की रक्षा की जिम्मेवारी तुम्हारी है।

खींच दो अपने खूँ से ज़र्मीं पर लकीर
इस तरफ़ आने पाए न रावण कोई
तोड़ दो हाथ अगर हाथ उठने लगे
छू न पाए सीता का दामन कोई
राम भी तुम, तुम्हीं लक्ष्मण साथियो
अब तुम्हारे हवाले वतन साथियो!

व्याख्या –

सैनिक अपनी बलिदानी से पहले अपने साथियों से कहता है कि आओ हम अपने खून से धरती पर लकीर खीच दें जिसके पार जाने की कोई भी रावण रूपी शत्रु हिम्मत न कर पाए। भारत माता को सीता समान बताते हुए कहता है अगर कोई भी हाथ भारत माता की आँचल छूने का दुर्साहस करे उसे तोड़ दो। भारत माता के सम्मान को किसी भी तरह ठेस ना पहुँचो। जिस तरह राम और लक्ष्मण ने सीता की रक्षा के लिए पापी रावण का नाश किया उसी तरह तुम भी शत्रु को पराजित कर भारत माता को सुरक्षित करो। अब ये वतन की जिम्मेवारी तुम्हारे हाथों में है।

अभ्यास प्रश्न

1. सही विकल्प चुनें

क. यह कविता किस युद्ध की पृष्ठभूमि पर आधारित है?

- i. भारत-पाक युद्ध
- ii. भारत-चीन युद्ध
- iii. प्रथम विश्व युद्ध
- iv. द्वितीय विश्व युद्ध

ख. कवि ने भारत माता की तुलना किससे की है?

- i. रानी लक्ष्मीबाई
- ii. सीता
- iii. दुर्गा
- iv. सरस्वती

ग. सैनिक अपने साथियों से क्या करने को कहते हैं?

- i. युद्ध छोड़कर भागने को
- ii. देश की रक्षा करने को
- iii. गीत गाने को
- iv. शांति बनाने को

2. रिक्त स्थान भरें

क. सैनिक कहते हैं कि हमने _____ का सिर झुकने नहीं दिया।

ख. कवि के अनुसार, जान देने की _____ रोज़ नहीं आती।

ग. सैनिक अपने _____ से धरती पर लकीर खींचने को कहते हैं।

घ. सैनिक अपने सिर पर _____ बाँधने को कहते हैं।

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 3-5 वाक्यों में दें :

क. “कर चले हम फिदा जान-ओ-तन साथियो” पंक्ति में सैनिक क्या संदेश दे रहे हैं?

ख. कवि ने “हिमालय का सिर झुकने नहीं दिया” से क्या तात्पर्य बताया है?

ग. “जान देने की रुत रोज़ आती नहीं” से कवि का क्या अभिप्राय है?

घ. सैनिक भारत माता को सीता के समान क्यों मानते हैं?

4. सही या गलत बताएँ

क. यह कविता फिल्म हकीकत से ली गई है।

ख. सैनिक अपने साथियों से युद्ध छोड़ने को कहते हैं।

ग. कवि के अनुसार, धरती आज दुल्हन बनी है।

घ. सैनिक चाहते हैं कि रावण जैसे शत्रु देश में प्रवेश करें।

5. मिलान करें:

क	ख
अ. कर चले हम फ़िदा	● देश की रक्षा
ब. हिमालय का सिर	● जान-ओ-तन का बलिदान
स. धरती बनी दुल्हन	● झुकने नहीं देना
द. राम और लक्ष्मण	● आन, बान और शान

19

अलंकार

परिभाषा :-

‘अलंकार’ का शाब्दिक अर्थ है— अलंकार शब्द संस्कृत के अलम् (अर्थात् शोभा या सजावट) और कार (अर्थात् करनेवाला) उपसर्गों से मिलकर बना है। अर्थात्, जो किसी वस्तु की शोभा को बढ़ाए, उसे अलंकार कहते हैं। जैसे गहने शरीर की सुंदरता को बढ़ाते हैं, वैसे ही अलंकार काव्य (या भाषा) की शोभा, सौंदर्य, और प्रभाव को बढ़ाते हैं।

काव्यशास्त्र में अलंकार को काव्य का चमत्कार और हृदय को आनंद देने वाला तत्व माना गया है। जब किसी रचना में विचारों की प्रस्तुति को सौंदर्यपूर्ण, आकर्षक और भावनात्मक रूप से गहन बनाया जाता है, तब वहाँ अलंकार उपस्थित होता है। यह सौंदर्य कभी शब्दों के माध्यम से (शब्दालंकार) होता है, तो कभी भावों के माध्यम से (अर्थालंकार)। जब किसी काव्य या रचना में शब्दों या अर्थों के विशेष विन्यास द्वारा विशेष सौंदर्य उत्पन्न होता है, जो पाठक या श्रोता को आनंद प्रदान करता है, उसे अलंकार कहते हैं। जिस प्रकार बिना आभूषण के शरीर अधूरा लगता है, उसी प्रकार बिना अलंकार के कविता भी प्रभावहीन प्रतीत होती है। अलंकार ही कविता को मनोरम, प्रभावशाली, और स्मरणीय बनाता है।

उदाहरण :

चाँद सा मुखड़ा, सूरज सी आंखें; यहाँ चाँद और सूरज का प्रयोग उपमेय रूप में किया गया है। यह उपमा अलंकार का उदाहरण है। शब्दों के इस प्रयोग से चेहरे और आंखों की सुंदरता में चमत्कारिक वृद्धि हो गई है।

अलंकार के प्रकार

(1) शब्दालंकार

जब काव्य में शब्दों की रचना, ध्वनि, अनुप्रास या पुनरुक्ति आदि के माध्यम से सौंदर्य उत्पन्न किया जाए, तो वहाँ शब्दालंकार होता है।

प्रमुख शब्दालंकार :

1. अनुप्रास अलंकार

जब किसी वर्ण की आवृत्ति एकाधिक बार होती है, तो अनुप्रास अलंकार कहलाता है।

उदाहरण: चंचल चित चकोर चंद्र के प्रति चकित है। रघुपति राघव राजा राम। यहाँ ‘च’ वर्ण की बार-बार आवृत्ति हो रही है।

2. यमक अलंकार

जब कोई शब्द एक से अधिक बार प्रयोग हो और प्रत्येक बार उसका अर्थ भिन्न हो, तो यमक अलंकार होता है।

उदाहरण:

तीन बेर खाती थी वे तीन बेर खाती है। (यहाँ पहले बेर का एक अर्थ है- फल, दूसरे का अर्थ है- बार/समय)

काली घटा का घमंड घटा (पहली घटा का अर्थ है- बादल, दूसरी घटा- कम होना)

3. श्लेष अलंकार

जब एक ही शब्द के अनेक अर्थ निकलते हों, तब श्लेष अलंकार होता है।

उदाहरण:

रहिमन पानी राखिए, बिन पानी सब सूना (यहाँ पानी के विभिन्न अर्थ हैं- जल, मान, महत्व)
मेरी भव बाधा हरो राधा नागरि सोया ('हरो' = दूर करो, 'हरित' = हर्षित या हरा रंग)

(2) अर्थालंकार

जब काव्य में शब्दों की अपेक्षा अर्थ में चमत्कार होता है, तब उसे अर्थालंकार कहा जाता है। इसमें भाव, कल्पना और अर्थ की गहराई होती है।

प्रमुख अर्थालंकार:

1. उपमा अलंकार

जब किसी वस्तु की तुलना किसी प्रसिद्ध वस्तु से समान धर्म के आधार पर की जाए, तो उपमा अलंकार होता है।

उदाहरण:

मन डोला पीपल पात सरिस।

यहाँ मन उपमेय है और पीपल का पत्ता उपमान है।

2. रूपक अलंकार

जब उपमेय पर उपमान का पूरा आरोप हो जाए और उनमें कोई भेद न रह जाए, तब रूपक अलंकार होता है।

उदाहरण:

चरण कमल बंदौ हरि राझ। यहाँ चरणों को कमल कहा गया है।

3. उत्प्रेक्षा अलंकार

जब किसी वस्तु में किसी दूसरी वस्तु की संभावना प्रकट की जाए, तब उत्प्रेक्षा अलंकार होता है। जैसे- मानो, मानु, ज्यों इत्यादि।

उदाहरण:

मानो हिम कणों से पूर्ण कमल बन गए नेत्र। यहाँ 'मानो' शब्द से संभावना प्रकट की जाए।

4. अतिशयोक्ति अलंकार

जब किसी बात का वर्णन अत्यधिक बढ़ा-चढ़ाकर किया जाए जिससे वह असंभव प्रतीत हो, तब अतिशयोक्ति अलंकार होता है।

उदाहरण:

एक दिन राम पतंग उड़ाई, देवलोक में पहुँच जाई। यहाँ देवलोक में पतंग का पहुँचना असंभव घटना है।

5. मानवीकरण अलंकार

जब निर्जीव वस्तुओं में मानवीय गुणों की कल्पना की जाए, तो मानवीकरण अलंकार होता है।

उदाहरणः

तालाब ने परात भर पानी लाया। यहाँ 'तालाब' ने मनुष्य का गुण लिया है।

अभ्यास प्रश्न

अलंकार लिखिए :

1. "चारू चंद्र की चंचल किरणों।"
3. "राम की आँखें कमल सी हैं।"
4. "पर्वत हँसने लगा।"
5. "राम पतंग उड़ाए, देवलोक पहुँच जाए।"

उदाहरण दीजिए:

1. क्षेष अलंकार का एक उदाहरण लिखिए।
2. यमक और अनुप्रास में अंतर स्पष्ट कीजिए।
3. रूपक अलंकार को परिभाषा और उदाहरण सहित समझाइए।
4. निम्न पंक्ति में कौन-सा अलंकार है? मानु जलधि में मीन उछलो।

20

छंद- मात्रिक और वर्णिक छंद

छंद की परिभाषा

'छंद' शब्द संस्कृत की 'चद्' धातु से बना है, जिसका अर्थ होता है- आनंद देना, प्रसन्न करना या आकर्षित करना। अतः जो काव्य पाठक या श्रोता को आनंदित करे, वह छंद कहलाता है। छंद काव्य की वह विधा है, जिसमें अक्षरों की संख्या, मात्राओं की गणना और गति (लय) को एक नियत नियम और क्रम में बाँधकर कविता की रचना की जाती है। यह एक लयबद्ध रचना पद्धति है, जो कविता में संगीतात्मकता, श्रव्य सौंदर्य और अनुशासन लाती है। छंद केवल कविता के सौंदर्य और माधुर्य को ही नहीं बढ़ाता, बल्कि वह भावों की गहराई को भी व्यवस्थित ढंग से प्रस्तुत करता है। छंद का प्रयोग प्राचीन काल से ही संस्कृत, अपभ्रंश, हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं में काव्य रचना के लिए होता आया है। छंद में रचना करते समय तीन मुख्य बातों का ध्यान रखा जाता है :

1. मात्रा :

- हिंदी छंदशास्त्र में स्वर और व्यंजन से बनी प्रत्येक ध्वनि की गणना होती है।
- हस्त स्वर (जैसे- अ, इ, उ) = 1 मात्रा
- दीर्घ स्वर (जैसे- आ, ई, ऊ) = 2 मात्राएँ

2. गण :

- तीन वर्णों के समूह को गण कहते हैं, जैसे : यगण, रगण, तगण आदि।
- प्रत्येक छंद में विशेष गणों का प्रयोग होता है।

3. लय या गति :

- कविता का प्रवाह या उसकी ध्वनि-संगति, जिससे वह संगीतात्मक लगती है।

छंद के प्रकार :-

छंद को दो मुख्य श्रेणियों में विभाजित किया जाता है :

1. वर्णवृत्त छंद

जब छंद की रचना में अक्षरों की संख्या और उनके गणों का निश्चित नियम होता है, तो वह वर्णवृत्त कहलाता है।
प्रसिद्ध वर्णवृत्त छंद:

- शार्दूलविक्रीडित – प्रत्येक चरण में 19 वर्ण
- मालिनी – प्रत्येक चरण में 15 वर्ण
- वसंततिलका – प्रत्येक चरण में 14 वर्ण

2. मात्रिक छंद

जब छंद की रचना मात्राओं की गणना के आधार पर की जाती है, तो उसे मात्रिक छंद कहा जाता है।

प्रसिद्ध मात्रिक छंदः

दोहा -

मात्रा व्यवस्था: पहली पंक्ति में 13 मात्राएँ

दूसरी पंक्ति: 11 मात्राएँ, कुल दो पंक्तियाँ (एक दोहा)

उदाहरण :

जे हि पर कृपा कर हिं जनु जान हिं ते हि जान।
कबिरा यहु संसार है, भेद बिना भय नान॥

2. चौपाईः

मात्रा व्यवस्था: प्रत्येक पंक्ति में 16 मात्राएँ, कुल 4 पंक्तियाँ

उदाहरण :

रामचंद्र के चरित सुहाए।
कलप-कलप मुनि बरनत आए॥

3. सोरठा

मात्रा व्यवस्था: दो पंक्तियाँ, पहली में 11, दूसरी में 13 मात्राएँ, इसकी मात्रा दोहे के ठीक उल्टी होती हैं।

उदाहरण :

साधु कहै सुभाय से, तजि कुटिलता अपन।
मुख से निकसे वचन, अमृत के सम जान॥

4. रोला

मात्रा व्यवस्था : प्रत्येक पंक्ति में 24 मात्राएँ ($12 + 12$), 2 पंक्तियों में समाप्त, सहज और सरल गति

उदाहरण :

करो कृपा हे रामजी, जीवन सफल बनाय।
तुमसे बढ़कर जगत में, कोई नहीं सहाय॥

5. हरिगीतिका

मात्रा व्यवस्था : प्रत्येक पंक्ति में 28 मात्राएँ ($14+14$), अधिकतर 4 चरणों में

उदाहरण :

जग में जनम लिया है जिसने, कुछ तो उसका कर्तव्य बने।
प्रेम, दया, सेवा-सच्चाई, मानवता का व्यक्तिव बने॥

6. आर्या छंद :

यह छंद गणना मात्राओं के आधार पर करता है, पर इसमें गणों की विशेष व्यवस्था नहीं होती। यह प्राचीन छंद है, जिसे कालिदास ने भी अपनाया। आर्या छंद में दो पाद होते हैं, प्रत्येक पाद में विशेष मात्रा नियम होते हैं। पहले पाद में 12 मात्राएँ, दूसरे में 18 मात्राएँ होती हैं।

मात्रिक छंद में मात्रा को कैसे गिने, इसे निम्नलिखित उदाहरण से समझें-

I- लघु (एक मात्रा), S- गुरु अथवा दीर्घ (दो मात्रा)

= 24

करो	कृपा	हे	रामजी,	जीवन	सफल	बनाया।
I S	I S	S	S I S,	S I I	I I I	I S I
1 2	1 2	2	2 1 2,	2 1 1	1 1 1	1 2 1
1+2	+1+2	+2	+2+1+2	+2+1+1	+1+1+1	+1+2+1
कुल = 24						

तुमसे	बढ़कर	जगत	में	कोई	नहीं	सहाय॥
I I S	I I I I	I I I	S	S S	I S	I S I
1 1 2	1 1 1 1	1 1 1	2	2 2	1 2	1 2 1
1 + 1 + 2	1 + 1 + 1 + 1	1 + 1 + 1	2 +	2 + 2 +	1 + 2	1 + 2 + 1
कुल = 24						

अन्य छंद

- गीतिका : मुक्त शैली में गीत रचना, अक्सर लयात्मक होता है।
- कविता : ब्रजभाषा में लिखा गया विशेष मात्रा-युक्त छंद है।
- सवैया : 22, 26, 30 आदि मात्राओं वाले चरणों में विविध रूप होते हैं।
- छप्पय : यह छंद 6 पंक्तियों का होता है।

छंद हिंदी कविता का मेरुदंड है। इसके बिना पारंपरिक काव्य अधूरा है। छंद का ज्ञान न केवल एक कवि के लिए आवश्यक है, बल्कि एक साहित्यप्रेमी के लिए भी अत्यंत उपयोगी है। मात्राओं, वर्णों और लयों की समझ से ही छंदबद्ध रचना का सही आनंद लिया जा सकता है। छंद काव्य का वह अद्भुत उपकरण है, जो कविता को लय, सौंदर्य, और संगीतात्मकता से भर देता है। अलंकार जहाँ काव्य का आभूषण है, वहीं छंद उसका कलेवर है। दोनों मिलकर कविता को पूर्ण बनाते हैं। काव्य-रचना में छंद का ज्ञान आवश्यक है, विशेषकर यदि रचनाकार पारंपरिक शैली में कार्य कर रहा हो।

21

रस की परिभाषा

'रस' शब्द की उत्पत्ति 'सृ' धातु से मानी जाती है, जिसका अर्थ होता है- बहना, प्रवाहित होना। अर्थात् जो हृदय में भाव रूप में प्रवाहित हो, वही रस कहलाता है। 'रस' शब्द का शाब्दिक अर्थ है— 'आनन्द' या 'सुख की अनुभूति'। काव्य, नाटक, कविता, या किसी भी साहित्यिक रचना को पढ़ने या सुनने पर जो भावनात्मक आनंद प्राप्त होता है, उसे ही 'रस' कहा जाता है। भरतमुनि ने रस को "काव्य का प्राण" कहा है। रस की उत्पत्ति को लेकर सबसे पहली और सर्वमान्य व्याख्या भरत मुनि ने अपनी महान रचना 'नाट्यशास्त्र' में की थी।

रस के चार मुख्य अवयव :-

1. स्थायी भाव :-

स्थायी भाव वह होता है, जो मनुष्य के मन में हमेशा विद्यमान रहता है और किसी कारणवश जागृत हो जाता है। रस की आधारशिला यही स्थायी भाव होते हैं। काव्य में रस की उत्पत्ति तभी मानी जाती है जब स्थायी भाव, विभाव, अनुभाव और संचारी भावों के साथ जुड़कर पाठक या दर्शक में आनंद की अनुभूति उत्पन्न करे।

स्थायी भावों की मूल संख्या 9 मानी गई है, परंतु बाद के आचार्यों ने 2 और स्थायी भाव जोड़े –

इस प्रकार कुल स्थायी भावों की संख्या – 11 हो जाती है।

1. शृंगार रस- राधा-कृष्ण का प्रेम
2. हास्य रस- वीर रस में हँसी-मजाक
3. करुण रस- यमराज, द्रौपदी का चीरहरण
4. रौद्र रस- परशुराम का क्रोध
5. वीर रस- अर्जुन का युद्ध
6. भयानक रस- राक्षस का भय
7. बीभत्स रस- कौरवों का मांस खाना
8. अद्भुत रस- ब्रह्मा, कृष्ण का विराट रूप
9. शांत रस- तपस्ची का ध्यान
10. वात्सल्य रस- यशोदा-कन्हैया का प्रेम
11. भक्ति रस- मीरा के भजन

रस निष्पत्ति का उदाहरण :-

वाक्य : राम वनवास सुनकर कौशल्या रोने लगीं।

स्थायी भाव : शोक (करुण रस)

विभाव : राम का वनवास (आलंबन), राम के वन में जाने की स्थिति (उद्दीपन)

अनुभाव : रोना, अश्रु बहाना

संचारी भाव : विस्मय, ग्लानि, स्मृति

इन सभी में करुण रस की अनुभूति होती है।

विभाव :

विभाव वह कारण या माध्यम है, जिसके द्वारा किसी स्थायी भाव की जाग्रति या प्रकटता होती है। भारतीय काव्यशास्त्र के अनुसार जब कोई विशेष परिस्थिति या पात्र किसी स्थायी भाव को उत्तेजित करता है, तो वही कारण विभाव कहलाता है।

विभाव दो प्रकार के होते हैं :

1. आलंबन विभाव :-

यह वह व्यक्ति या वस्तु है, जिससे स्थायी भाव जुड़ा होता है, जिसे देखकर भाव प्रकट होता है। जैसे- राम की स्मृति से सीता का शोक जागृत होना। यहाँ 'राम' आलंबन विभाव है।

2. उद्घीपन विभाव :-

वह वस्तु, स्थान, या परिस्थिति जो भाव को उत्तेजित करती है। शृंगार रस में उद्घीपन विभाव है।

उदाहरण :

वाक्य : सीता ने राम की स्मृति में आंसू बहाए।

स्थायी भाव : शोक

आलंबन विभाव : राम

उद्घीपन विभाव : राम का चित्र, स्मृति, विरह की रात

अनुभाव : आंसू बहाना

रस : करुण रस

विभाव के बिना रस की अनुभूति असंभव है। विभाव ही वह केंद्रीय कारक है जो स्थायी भाव को उत्तेजित करता है और पाठक या दर्शक के मन में रस उत्पन्न करता है। यह काव्य की संवेदनात्मक शक्ति को बढ़ाता है।

अनुभाव :

अनुभाव वे बाह्य क्रियाएँ (भाव-भंगिमा) हैं, जिनके द्वारा स्थायी भावों की बाहरी अभिव्यक्ति होती है। ये दर्शकों को यह अनुभव कराते हैं कि किसी पात्र के अंदर कोई भाव जागृत हुआ है। अनुभावों के माध्यम से दर्शक या पाठक भाव को समझ पाता है। ये किसी भाव के उत्पन्न होने के स्वाभाविक परिणाम होते हैं, इन्हें जबरन पैदा नहीं किया जा सकता।

उदाहरण :

- प्रेम से भरी नज़रें झुकाना, मुर्स्कराना।
- शोक आंसू बहाना, सिर झुकाना, निःशब्द होना।

अनुभाव के प्रकार (शारीरिक और वाचिक)

1. शारीरिक अनुभाव :

शरीर की गतिविधियाँ — जैसे हाथ-पैरों की गति, चेहरा, आँखें, मुद्रा आदि।

उदाहरण: थरथराना, आँसू बहाना, हँसना।

2. वाचिक अनुभाव :

आवाज, बोलने की शैली या ध्वनि।

उदाहरण : हँसी की आवाज, चीखना, धीमा बोलना।

नाटक, फिल्म, अभिनय या मंच प्रस्तुति में यह अनुभाव अत्यधिक महत्वपूर्ण होते हैं।

संचारी भाव

संचारी भाव वे सहायक भाव हैं, जो स्थायी भाव के साथ जुड़कर उसे बल, गहराई और विस्तार प्रदान करते हैं, किंतु स्वयं रस में परिणत नहीं होते। इनका कार्य स्थायी भाव को कुछ समय के लिए उत्तेजित या विस्तृत करना होता है, और जब इनका कार्य पूर्ण हो जाता है, तब ये अप्रकट हो जाते हैं।

विशेषताएँ :

1. संचारी भाव क्षणिक होते हैं।
2. ये कभी भी स्वतंत्र रूप से रस उत्पन्न नहीं करते।
3. इनका कार्य केवल स्थायी भाव को सशक्त और स्पष्ट बनाना है।
4. इनकी संख्या 33 मानी गई है।
5. ये अंतरमन की प्रतिक्रियाएँ होती हैं, जो दृश्य में स्थायी भाव को परिपक्व बनाती हैं।

संचारी भावों की सूची :

- | | | |
|-----------|-------------|-------------|
| 1. निराशा | 12. उत्साह | 23. उद्बेग |
| 2. आलस्य | 13. भय | 24. उग्रता |
| 3. ग्लानि | 14. जड़ता | 25. विषाद |
| 4. शंका | 15. विस्मय | 26. स्मृति |
| 5. मरण | 16. दैन्यता | 27. स्वप्न |
| 6. असूया | 17. लज्जा | 28. संताप |
| 7. चिंता | 18. विषाद | 29. आभास |
| 8. मद | 19. तृष्णा | 30. व्रीड़ा |
| 9. गर्व | 20. हर्ष | 31. धृति |
| 10. क्षमा | 21. मोह | 32. वेदना |
| 11. क्रोध | 22. श्रम | 33. हताशा |

उदाहरण 1 :

वाक्य : सीता राम के वनगमन की बात सुनकर व्याकुल हो गई, आँखों से आँसू बह निकले, देह कांप उठी और वह मूर्छित हो गई।

स्थायी भाव : शोक

विभाव : राम का वन गमन

अनुभाव: आँसू बहाना, कांपना

संचारी भाव: चिंता, उद्बेग, व्याकुलता, स्मृति, मोह, वेदना

रसः: करुण रस

यहाँ संचारी भावों ने शोक (स्थायी भाव) को गहरा और प्रभावी बना दिया।

22

अन्विति

अन्वय का अर्थ है ‘पीछे जाना’, ‘अनुरूप होना’ अथवा ‘समानता’। व्याकरण में इसका अर्थ है ‘व्याकरणिक एकरूपता’। अन्विति का अर्थ है, वाक्य के विभिन्न घटकों का आपस में लिंग, वचन और पुरुष के अनुसार अन्वय। कर्ता के लिंग, वचन और पुरुष के अनुसार क्रिया की रूपावली में परिवर्तित होना अन्विति कहलाता है।

अन्विति के प्रकार

- संज्ञा-क्रिया अन्विति
- विशेषण-विशेष्य अन्विति
- संज्ञा-सर्वनाम अन्विति

संज्ञा-क्रिया अन्विति

इसके तीन मुख्य नियम हैं—

कर्ता-क्रिया अन्विति

यदि कर्ता के साथ परसर्ग न लगा हो तो क्रिया की अन्विति कर्ता के लिंग, वचन और पुरुष के अनुसार होती है।
यथा—

- लता रोज़ देर से सोती है।
- लड़की खाना खा रही है।
- रीता घर जाती है।
- ये लड़कियाँ रोज़ देर से सोती हैं।
- लड़का रोटी खा रहा है।
- करीम किताब पढ़ता है।
- रोहन मिठाई खाता है।
- रमेश खूब काम करता है।

यदि वाक्य में एक ही (समान) लिंग, वचन और पुरुष के अनेक परसर्ग रहित कर्ता हों और अंतिम कर्ता के पहले ‘और’ या ‘तथा’ या ‘एवं’ संयोजक आया हो, तो इन कर्ताओं की क्रिया उसी लिंग के बहुवचन में होगी; जैसे—

- ऋषभ और रमेश सोते हैं।
- आशा, उषा और शिखा स्कूल जाती हैं।

- गणेश और सुरेश खूब काम करते हैं।
- दिनेश और रमेश बहुत काम करते हैं।
- राम, दिनेश और सुशील विदेश जा रहे हैं।
- शीला, अलका तथा करुणा कल आएँगी।

जब कई शब्द मिलकर एक ही वस्तु का बोध करा रहे हों तो क्रिया एकवचन में होगी; जैसे—

- यह घोड़ा-गाड़ी उसकी है।

यदि वाक्य में दो भिन्न लिंगों के कर्ता हों और दोनों द्वन्द्व-समास के अनुसार प्रयुक्त हों, तो उनकी क्रिया पुलिंग बहुवचन में होगी; जैसे—

- नर-नारी गए।
- राजा-रानी आए।
- स्त्री-पुरुष मिले।
- माता-पिता बैठे हैं।

यदि वाक्य में दो भिन्न-भिन्न परस्र्ग रहित एकवचन कर्ता हों और दोनों के बीच ‘और’ संयोजक आए, तो उनकी क्रिया पुलिंग और बहुवचन में होगी; जैसे—

- राधा और कृष्ण रास रचाते हैं।
- बाघ और बकरी एक घाट पानी पीते हैं।
- वर और वधू गए।
- माताजी और पिताजी आएँगे।

यदि वाक्य में अनेक कर्ता हों जिनके लिंग भिन्न (पुलिंग व स्त्रीलिंग) हों और वचन भी अलग (एकवचन व बहुवचन) हों। तो ऐसे वाक्य में क्रिया बहुवचन में होगी और उनका लिंग अंतिम कर्ता के अनुसार होगा; जैसे—

- एक बालक, दो वृद्ध और अनेक लड़कियाँ आती हैं।
- एक लड़की और कई लड़के जा रहे हैं।
- एक लड़का और कई लड़कियाँ जा रही हैं।
- एक बकरी, दो गायें और बहुत-से वृषभ मैदान में चरते हैं।

यदि वाक्य में अनेक कर्ताओं के बीच विभाजक समुच्चयबोधक अव्यय ‘या’ अथवा ‘वा’ रहे, तो क्रिया अंतिम कर्ता के लिंग और वचन के अनुसार होगी; जैसे—

- घनश्याम की पाँच दरियाँ वा एक कम्बल बिकेगा।
- हरि का एक कम्बल या पाँच दरियाँ बिकेंगी।
- पार्थ का बैल या अनिल की गायें बिकेंगी।

कर्ता के प्रति यदि आदर सूचित करना है, तो ‘एकवचन’ कर्ता के साथ ‘बहुवचन’ की क्रिया आती है; जैसे—

- भगवान् बुद्ध महान् व्यक्ति थे।
- गोस्वामी तुलसीदास सच्चे अर्थों में लोकमंगल के कवि थे।

जनता, वर्षा, वायु, पानी आदि शब्द के कर्ता रूप में आने पर क्रिया एकवचन में होती है; जैसे—

- देश की जनता महँगाई से परेशान है।
- कितनी अच्छी वर्षा हो रही है !

यदि कर्ता के लिंग का पता न हो तो क्रिया पुलिलंग होती है; जैसे—

- अभी-अभी कौन बाहर गया है?

कर्म-क्रिया अन्विति

यदि कर्ता परसर्ग सहित हो और कर्म या पूरक परसर्ग रहित हो तो क्रिया की अन्विति कर्म या पूरक के लिंग, वचन और पुरुष के अनुसार होगी। जैसे—

- आशा ने पुस्तक पढ़ी।
- हमने लड़ाई जीती।
- उसने गाली दी।
- मैंने रूपये दिए।
- तुमने क्षमा माँगी।
- सोहन ने जलेबी खायी।
- रोहन ने चार केले खाये।
- शिखा ने आम खाया।

शून्य अन्विति

यदि कर्ता और कर्म दोनों परसर्ग सहित हों तो क्रिया की अन्विति इनमें से किसी के साथ नहीं होगी। इस स्थिति में क्रिया सदैव एकवचन और पुलिलंग में होती है; यथा—

- राम ने रावण को मारा।
- माँ ने नौकरानी को डाँटा।
- लड़कियों ने कुत्ते को भगाया।
- पिताजी ने सभी भाइयों को बुलाया।
- मैंने श्याम को बुलाया।
- तुमने उसे देखा।
- लड़कियों ने लड़कों को ध्यान से देखा।
- लड़कों ने लड़कियों को ध्यान से देखा।

- छात्र ने छात्रा को देखा।
- छात्रा ने छात्र को देखा।
- छात्रों ने छात्रा को देखा।
- छात्राओं ने छात्रों को देखा।
- मैंने (पुरुष) उसे (स्त्री) देखा।
- उसने (स्त्री) मुझे (पुरुष) देखा।

यदि एक ही लिंग-वचन के अनेक प्राणिवाचक-अप्राणिवाचक अप्रत्यय कर्म एक साथ एकवचन में आये, तो क्रिया भी एकवचन में होगी; जैसे—

- मैंने एक गाय और एक भैंस खरीदी।
- सोहन ने एक पुस्तक और एक कलम खरीदी।
- मोहन ने एक घोड़ा और एक हाथी बेचा।

विशेषण-विशेष्य अन्विति

विशेषण के अन्वय का प्रश्न केवल उन्हीं विशेषणों के साथ उठता है जो आकारांत होते हैं। शेष सभी विशेषण हमेशा एकरूप रहते हैं; यथा- सुंदर फूल, सुंदर पत्ती, सुंदर फूलों को, सुंदर पत्तियाँ।

आकारांत विशेषणों के रूप विशेष्य (संज्ञा) के अनुसार बदलते हैं; यथा-

- बड़ा लड़का, छोटी लड़की, ऊँचा पहाड़।
- बड़े लड़के, छोटी लड़कियाँ, ऊँचे पहाड़।

आकारांत विशेषण चाहे विशेष्य के पहले आए अथवा बाद में विधेय-विशेषण के रूप में, वह लिंग-वचन में विशेष्य के अनुसार ही रहता है; जैसे—

- वह पेड़ बहुत लंबा है।
- वह लंबा पेड़ हरा-भरा है।
- वह लंबी डाली फूलों से लदी है।
- वह डाली लंबी है।

अकारांत विशेषणों में कोई परिवर्तन नहीं होता; यथा—

- सुंदर लड़का, सुंदर लड़के, सुंदर लड़की।
- सफेद घोड़ा, सफेद घोड़े, सफेद घोड़ी।

यदि विशेषण के एक से अधिक विशेष्य हों और उनके लिंग अलग-अलग हों तो सामान्यतः अपने सबसे निकट वाले विशेष्य के लिंग, वचन के अनुसार विशेषण की अन्विति होती है; जैसे—

- अच्छे लड़के और लड़कियाँ।

- अच्छी लड़कियाँ और लड़के।
- टूटी खिड़की और दरवाजा।
- टूटा दरवाजा और खिड़की।

संज्ञा-सर्वनाम अन्विति

वाक्य में लिंग, वचन और पुरुष के अनुसार सर्वनाम उस संज्ञा का अनुसरण करता है, जिसके स्थान पर आता है। जैसे—

- वह (सीता) गई।
- वह (राम) गया।
- वे (लड़के) गए।
- मेरे पिताजी और बड़े भाई आए हैं।
- वे (लोग) कल जाएँगे।
- लड़के वे ही हैं।
- लड़कियाँ भी ये ही हैं।

23

पक्ष

हिंदी व्याकरण में 'पक्ष' क्रिया के उस आयाम को दर्शाता है, जो क्रिया के कार्य व्यापार की आंतरिक कालावधि से संबंधित होता है। परंपरागत व्याकरण में पक्ष को काल के अंतर्गत ही विश्लेषित किया जाता रहा है। किंतु, आधुनिक दृष्टिकोण में पक्ष को एक स्वतंत्र व्याकरणिक श्रेणी के रूप में मान्यता दी गई है।

पक्ष के प्रकार

क्रिया के दो मूल रूप हैं: पूर्ण और अपूर्ण। इसके आधार पर पक्ष के निम्नलिखित प्रकार हैं:

1. पूर्णता बोधक पक्ष

यह क्रिया की पूर्णता को दर्शाता है। इसका चिह्न 'शून्य' है और यह भूतकालिक क्रिया में पाया जाता है।

उदाहरण:

राम दौड़ा।

सीता दौड़ी।

लड़के दौड़े।

इनमें 'आ', 'ई', 'ए' प्रत्यय पूर्णता पक्ष को व्यक्त करते हैं।

2. अपूर्णता बोधक पक्ष

यह क्रिया की अपूर्णता को दर्शाता है, अर्थात् कार्य शुरू हो चुका है, पर पूर्ण नहीं हुआ। इसके कई उप-प्रकार हैं-

-**निरंतरता बोधक पक्ष:** यह प्रतिदिन के कार्य या निरंतरता को दर्शाता है। इसका चिह्न 'ता' प्रत्यय है।

उदाहरण:

राम पढ़ता है।

सूरज पूरब से निकलता है।

- **प्रगति बोधक पक्ष:** यह कार्य की निरंतरता को दर्शाता है। इसका चिह्न 'रहा' है।

उदाहरण: राम जा रहा है। मोहन खा रहा है।

- **आरंभ बोधक पक्ष:** यह कार्य के शुरू होने की स्थिति को दर्शाता है। इसका चिह्न 'नै' है।

उदाहरण: मुझे नींद आने लगी। मैं लिखने ही वाला था।

- **अभ्यास बोधक पक्ष:** यह बार-बार होने वाले कार्य को दर्शाता है।

उदाहरण: वह मेरे घर आया करता है। गोपाल पान खाता रहता है।

24

वृत्ति

वृत्ति सहायक क्रिया के उस अंश को कहते हैं जिस अंश से वक्ता (बोलने वाले) की मानसिक अभिवृत्ति का पता चलता है। वृत्ति के चार मुख्य भेद हैं :

1. आज्ञार्थक
2. संभावनार्थक
3. सामर्थ्यसूचक
4. बाध्यतासूचक

आज्ञार्थक वृत्ति -

आज्ञार्थक वृत्ति से आज्ञा, अनुरोध, चेतावनी, निषेध, प्रार्थना आदि का बोध होता है। आज्ञार्थक वृत्ति को सूचित करने के लिए 'शून्य (0), -ओ, -ए, -ना और -इएगा' प्रत्ययों का मूल धातु के साथ प्रयोग किया जाता है। आज्ञार्थक वृत्ति का प्रयोग वर्तमान काल और भविष्यत् काल में ही हो सकता है। भूतकाल में इसका प्रयोग नहीं होता। आज्ञार्थक वृत्ति का प्रयोग केवल मध्यम पुरुष में यानी "तू, तुम और आप" के साथ ही होता है। मध्यम पुरुष का मतलब है वक्ता जिसके साथ बात कर रहा हो।

उदाहरण :

गोपाल, तू घर जा।

(शून्य (0) प्रत्यय अर्थात् "जा" धातु के साथ कोई प्रत्यय नहीं है)

आप जल्दी घर जाइए।

तुम कॉलेज जाओ।

यहाँ क्रमशः आज्ञा, अनुरोध और प्रार्थना आदि के तत्काल पालन का भाव व्यक्त होता है। लेकिन "-ना" और "-इएगा" का धातु के साथ प्रयोग अप्रत्यक्ष रूप से आज्ञा या अनुरोध का भाव व्यक्त करने के लिए किया जाता है। जैसे-जरा वह किताब देना।

तुम मेरे घर आना।

क्या आप मेरे घर आइएगा?

तुम ठड़े पानी से मत नहाओ।

आप मेरे लिए बाज़ार से कुछ न लाइए।

संभावनार्थक वृत्ति

संभावनार्थक वृत्ति उस वृत्ति को कहते हैं जिससे किसी कार्य व्यापार के भविष्य में होने के बारे में वक्ता के दृष्टिकोण का बोध होता है। संभावनार्थक वृत्ति में एकवचन में "ए" प्रत्यय और 'बहुवचन में "एँ" प्रत्यय का तथा मैं के साथ "हूँ" और तुम के साथ "हो" प्रत्ययों का प्रयोग होता है। क्रिया की अन्विति पुरुष और वचन के अनुसार होती है।

उदाहरण

शायद वह कल यहाँ आए।
उसे कहो कि कल वह दफ्तर ज़रूर आए।

सामर्थ्यसूचक वृत्ति - सामर्थ्यसूचक वृत्ति उसे कहते हैं जिससे सामर्थ्य का बोध होता है। इस वृत्ति के लिए "सक" और "पा" जैसे वृत्ति सूचक का प्रयोग किया जाता है।

उदाहरण :-

वह हिंदी पढ़ सकता है।
वह पेड़ पर नहीं चढ़ सकता।

बाध्यतासूचक वृत्ति- बाध्यतासूचक वृत्ति के प्रयोग से कर्ता के कार्य को पूरा करने में बाध्यता का बोध होता है। बाध्यतासूचक वृत्ति के प्रत्यय निम्नलिखित हैं:

-ना है, ना पड़
-ना चाहिए

क्रिया के साथ "-ना" है, "-ना पड़", "-ना चाहिए" प्रत्ययों का प्रयोग करते समय कर्ता के साथ "को" परसर्ग का प्रयोग ज़रूरी होता है। इसमें कर्ता के व्यापार को पूरा करने में बाध्यता दिखाई देती है, जैसे :-

उसे आज बिजली का बिल जमा कराना है।
कल मुझे दफ्तर जाना है।

वाच्य हिंदी व्याकरण का एक महत्वपूर्ण अंग है, जो क्रिया के उस रूप को दर्शाता है, जिससे यह पता चलता है कि वाक्य में क्रिया का मुख्य विषय कर्ता, कर्म या भाव है। वाच्य के आधार पर यह समझा जा सकता है कि वाक्य में कर्ता की सक्रियता, कर्म की प्रधानता या भाव की अभिव्यक्ति पर जोर दिया गया है।

वाच्य के प्रकार

वाच्य के तीन प्रमुख भेद हैं: कर्तृवाच्य, कर्मवाच्य और भाववाच्य।

1. कर्तृवाच्य

कर्तृवाच्य में क्रिया का रूप कर्ता के लिंग और वचन के अनुसार होता है। यहाँ कर्ता की प्रधानता होती है, अर्थात् कर्ता ही कार्य को संपन्न करता है। कर्तृवाच्य में क्रिया सकर्मक और अकर्मक दोनों हो सकती है।

उदाहरण :

1. सोहन पुस्तक पढ़ता है। (पुलिंग, एकवचन)
2. सीता गाना गाती है। (स्त्रीलिंग, एकवचन)
3. बच्चे फुटबॉल खेल रहे हैं। (पुलिंग, बहुवचन)
4. औरतें खाना बना रही हैं। (स्त्रीलिंग, बहुवचन)

इन वाक्यों में क्रिया (पढ़ता है, गाती है, खेल रहे हैं, बना रही हैं) कर्ता के लिंग और वचन के अनुरूप है।

2. कर्मवाच्य

कर्मवाच्य में क्रिया का रूप कर्म के लिंग और वचन के अनुसार होता है। यहाँ कर्म की प्रधानता होती है, और कर्ता की भूमिका गौण हो जाती है। कर्ता के साथ सामान्यतः 'से' या 'के द्वारा' विभक्ति का प्रयोग होता है। कर्मवाच्य में केवल सकर्मक क्रियाएँ प्रयुक्त होती हैं, और क्रिया को संयुक्त रूप में 'जाना' धातु के साथ जोड़ा जाता है।

उदाहरण :

1. ये पुस्तकें खूब पढ़ी जाती हैं। (स्त्रीलिंग, बहुवचन)
2. कहानी अशोक के द्वारा लिखी गई। (स्त्रीलिंग, एकवचन)
3. साइकिल रवि के द्वारा चलाई जाती है। (स्त्रीलिंग, एकवचन)

इन वाक्यों में क्रिया पढ़ी जाती हैं, लिखी गई, चलाई जाती है कर्म के लिंग और वचन के अनुसार है।

3. भाववाच्य

भाववाच्य में क्रिया न तो कर्ता के अनुसार होती है और न ही कर्म के अनुसार, बल्कि यह भाव या क्रिया की स्थिति को व्यक्त करती है। इसमें भाव की प्रधानता होती है, और क्रिया सामान्यतः मध्यम पुरुष, एकवचन में होती है। भाववाच्य में अकर्मक क्रियाएँ प्रयोग होती हैं, और कर्ता के साथ 'से' या 'के द्वारा' विभक्ति का उपयोग होता है। यह वाच्य प्रायः निषेधात्मक या अक्षमता दर्शने वाले वाक्यों में देखा जाता है।

उदाहरणः

1. सोहन से चला नहीं जाता। (पुलिंग, एकवचन)
2. सीता से गाना नहीं गाया जाता। (स्त्रीलिंग, एकवचन)
3. मुझसे बैठा नहीं जाता। (पुलिंग, एकवचन)

कर्तृवाच्य को कर्मवाच्य में बदलने के लिए निम्नलिखित नियमों का पालन किया जाता है :

कर्ता के साथ 'ने' परसर्ग को हटाकर 'से' या 'के द्वारा' जोड़ा जाता है। कर्म के साथ 'को' परसर्ग हटाया जाता है। मुख्य क्रिया को सामान्य धातु रूप में बदला जाता है, और 'जाना' धातु को कर्म के लिंग और वचन के अनुसार जोड़ा जाता है।

उदाहरण :

1. कर्तृवाच्य

माता ने बच्चों को खाना खिलाया।

कर्मवाच्य

माता द्वारा बच्चों से खाना खिलाया गया।

2. कर्तृवाच्य

बच्चे फुटबॉल खेल रहे हैं।

कर्मवाच्य

बच्चों द्वारा फुटबॉल खेला जा रहा है।

26

अनुच्छेद लेखन

अनुच्छेद लेखन एक केंद्रित, सारणीभूत और क्रमबद्ध रचना है जो किसी एक विचार, भावना या विषय पर सीमित शब्दों में लिखा जाता है। यह रचना लेखक की भाषा पर पकड़, विचारों की स्पष्टता और संगठन क्षमता को दर्शाती है।

अनुच्छेद लेखन की प्रमुख विशेषताएँ

- केवल एक ही विचार या विषय पर चर्चा
- सीमित शब्दों में पूर्ण जानकारी
- विचारों का तार्किक क्रम
- सरल, शुद्ध, प्रभावी भाषा
- आरंभ, मध्य, निष्कर्ष

अनुच्छेद लेखन के प्रमुख अंग

भाग	उद्देश्य
आरंभ	विषय का संक्षिप्त परिचय
मध्य	मुख्य तथ्य, उदाहरण, तर्क
निष्कर्ष	सारांश, निष्कर्ष, समाधान या प्रेरणा

अनुच्छेद लेखन की विधि

1. विषय को ध्यान से पढ़ें
2. मुख्य बिंदुओं की सूची बनाएँ
3. विचारों को तार्किक क्रम दें
4. भाषा शुद्ध, संक्षिप्त और बोधगम्य रखें
5. एक अनुच्छेद में केवल एक विचार विकसित करें

उदाहरण

1) विषय : पुस्तकें- सच्ची मित्र

पुस्तकें मनुष्य की सबसे अच्छी मित्र होती हैं। जब कोई हमारा साथ छोड़ देता है, तब पुस्तकें हमें सहारा देती हैं। ये न केवल ज्ञान देती हैं, बल्कि हमारे व्यक्तित्व को भी सँवारती हैं। अच्छी पुस्तकें पढ़ने से सोचने की शक्ति, भाषा पर

पकड़ और निर्णय लेने की क्षमता बढ़ती है। साहित्यिक पुस्तकों के माध्यम से हम भावनात्मक रूप से भी समृद्ध होते हैं। अतः जीवन में पुस्तकों को स्थान देना अत्यंत आवश्यक है।

2) विषय : शिक्षा का उद्देश्य

शिक्षा केवल डिग्री या नौकरी का माध्यम नहीं है। इसका वास्तविक उद्देश्य व्यक्ति के मानसिक, नैतिक और सामाजिक विकास को सुनिश्चित करना है। एक शिक्षित व्यक्ति अपने कर्तव्यों और अधिकारों को समझता है तथा समाज और राष्ट्र के प्रति सजग रहता है। शिक्षा के माध्यम से ही हम रुद्धियों और अंधविश्वासों से मुक्त होकर प्रगतिशील विचारधारा की ओर अग्रसर होते हैं। अतः शिक्षा का उद्देश्य जीवन निर्माण होना चाहिए, केवल जीविकोपार्जन नहीं।

3) विषय : पर्यावरण संरक्षण की आवश्यकता

पर्यावरण हमारे जीवन का आधार है। वनों की कटाई, जल-वायु प्रदूषण, प्लास्टिक का अत्यधिक उपयोग आदि के कारण पर्यावरण असंतुलन की स्थिति बन रही है। यदि समय रहते हमने ध्यान नहीं दिया, तो इसका दुष्परिणाम संपूर्ण मानवता को भुगतना होगा। हमें वृक्षारोपण, जल-संरक्षण, प्रदूषण नियंत्रण आदि उपायों को अपनाकर पर्यावरण की रक्षा करनी चाहिए। “स्वस्थ पर्यावरण, स्वस्थ जीवन” की सोच के साथ हमें कार्य करना चाहिए।

4) विषय : भारत की युवा शक्ति

भारत विश्व का सबसे युवा देश है। यहाँ की लगभग 65% जनसंख्या युवाओं की है। यदि इन युवाओं को उचित शिक्षा, प्रशिक्षण एवं अवसर मिले, तो वे देश को नई ऊँचाइयों तक ले जा सकते हैं। युवा जोश, विचारों की नवीनता और तकनीकी समझ का मेल देश की उन्नति में सहायक हो सकता है। परंतु यदि यह शक्ति दिशाहीन हो जाए, तो यही युवा भीषण समस्याओं का कारण बन सकते हैं। अतः राष्ट्र निर्माण में युवाओं की भूमिका को पहचाना जाना चाहिए।

अभ्यास प्रश्न

इनमें से प्रत्येक पर एक-एक अनुच्छेद 150–200 शब्दों में लिखिए :

1. मोबाइल आवश्यकता या व्यसन
2. सोशल मीडिया का प्रभाव
3. परीक्षा का तनाव
4. बेरोजगारी की समस्या
5. महिला सशक्तिकरण
6. आत्मनिर्भर भारत
7. समय का सदृप्योग
8. जलवायु परिवर्तन
9. महापुरुषों का जीवन प्रेरणा स्रोत
10. राष्ट्रीय एकता का महत्व
11. चंद्रयान-3 की सफलता
12. 2025 का महाकुंभ – आस्था का संगम
13. ऑनलाइन शिक्षा का भविष्य
14. डिजिटल इंडिया का प्रभाव
15. लोकसभा चुनाव 2024 के परिणाम का विश्लेषण

नीचे दिए गए अनुच्छेद में 5 त्रुटियाँ हैं, उन्हें पहचानें और सुधारें :

"वर्तमान समय में पर्यावरण को बहुत क्षति हो चूका है। वृक्षों की कटाई और प्रदूषण के कारण वातावरण गंदा हो गया है। हमें मिलकर सफाई रखनी चाहिए और पेड़ लगाना चाहिए। जल और हवा दोनों को बचाना बहुत जरूरी है।"

1. भूमिका :-

'निबंध' का शाब्दिक अर्थ है 'बांधना' अर्थात् विचारों को एक सूत्र में बांधना। निबंध लेखन वह विधा है जिसके माध्यम से लेखक किसी विषय पर अपने विचार, अनुभव, भावनाएँ, जानकारी और दृष्टिकोण को तार्किक और सौंदर्यपूर्ण शैली में प्रस्तुत करता है। निबंध लेखन एक कला है, जिसमें लेखक का व्यक्तित्व, सोचने की क्षमता, भाषाई पकड़ और विषय पर अधिकार झलकता है। यह विद्यार्थियों की चिंतनशक्ति, विश्लेषण क्षमता और प्रस्तुतीकरण शैली को विकसित करने में सहायक है।

2. निबंध का स्वरूप :-

एक उत्तम निबंध में सामान्यतः निम्नलिखित चार भाग होते हैं :

1. प्रस्तावना :

- विषय का संक्षिप्त और रोचक परिचय।
- पाठक की रुचि जगाने वाला आरंभ।
- उक्तियों, श्लोकों या प्रसिद्ध उद्घरणों का उपयोग किया जा सकता है।

उदाहरण :

"साहित्य समाज का दर्पण होता है।" — इस कथन की सच्चाई को सिद्ध करने का सबसे सशक्त माध्यम निबंध है।

2. मुख्य विषयवस्तु :

- विषय का विस्तार।
- ऐतिहासिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, वैज्ञानिक या भावनात्मक पक्ष।
- तर्कों, उदाहरणों, आँकड़ों, साक्ष्यों और दृष्टिकोणों द्वारा विषय की गहराई से विवेचना।

3. विश्लेषण और विवेचन :

- विषय के पक्ष-विपक्ष, लाभ-हानि या प्रभावों की विवेचना।
- लेखक का व्यक्तिगत दृष्टिकोण।
- दूसरों की मान्यताओं का तार्किक परीक्षण।

4. उपसंहार :

- पूरे निबंध का सार-संग्रह।
- समाधान, सुझाव या प्रेरणादायक संदेश।
- प्रभावशाली समापन पंक्तियाँ।

3. निबंध लेखन की विशेषताएँ

1. भाषा सरल, स्पष्ट और बोधगम्य हो। कठिन शब्दों से बचें।
2. विचारों का प्रस्तुतिकरण एक निश्चित क्रम में हो – प्रस्तावना से उपसंहार तक।
3. विषय को केवल भावुक दृष्टिकोण से नहीं, बल्कि तथ्यों और तर्कों के आधार पर प्रस्तुत करें।
4. निबंध विषय से न भटके; विषय के अनुरूप उदाहरण और विचार ही रखें।
5. भाषा में भावात्मकता, साहित्यिकता और सजीवता होनी चाहिए। मुहावरे, लोकोक्तियाँ, सूक्तियाँ, श्लोक आदि का प्रयोग उचित हो।
6. निबंध का शीर्षक प्रभावी हो और अनुच्छेदों में उचित विभाजन होना चाहिए।

5. निबंध के प्रकार

निबंधों को उनकी प्रवृत्ति के आधार पर निम्न वर्गों में विभाजित किया जा सकता है :

1. वर्णनात्मक निबंध :

- किसी वस्तु, स्थान, व्यक्ति या घटना का सजीव और विस्तारपूर्वक वर्णन।
उदाहरण : "बस यात्रा का अनुभव", "मेरी प्रिय पुस्तक" आदि।

2. विचारात्मक निबंध :

- किसी सामाजिक, राजनीतिक या नैतिक विषय पर विचारों की अभिव्यक्ति।
उदाहरण: "पर्यावरण संरक्षण", "नारी सशक्तिकरण", "समानता की भावना"

3. आख्यायिक निबंध

- किसी घटना या अनुभव को रोचक शैली में कथा रूप में प्रस्तुत करना।
उदाहरण: "भूकंप के दिन की याद", "विद्यालय का पहला दिन" आदि।

4. आलोचनात्मक निबंध

- किसी कृति, विचार या घटना की समीक्षा और विश्लेषण।
उदाहरण: "विज्ञान : वरदान या अभिशाप", "विज्ञापन और उपभोक्ता" आदि।

5. व्यक्तिगत निबंध

- लेखक के अनुभवों, भावनाओं और जीवन की घटनाओं पर आधारित।
उदाहरण: "मेरा प्रिय त्योहार", "परीक्षा का दिन" आदि।

6. निबंध लेखन हेतु कुछ उद्धरण

विषय	उद्धरण
शिक्षा	“शिक्षा सबसे शक्तिशाली हथियार है जिससे दुनिया को बदला जा सकता है।” - नेल्सन मंडेला
नारी	“नारी कोई अबला नहीं, वह सबला है, शक्ति का प्रतीक है।”
मित्रता	“विपत्ति कसौटी जे कसे, ते ही सांचे मीत।” - रहीम
पर्यावरण	“पृथ्वी हमारी धरोहर है, इसका संरक्षण हमारा कर्तव्य।”
समय	“जो समय का सदुपयोग करता है, वह जीवन में सदैव सफल होता है।”

7. निष्कर्ष

निबंध लेखन विद्यार्थियों के समग्र व्यक्तित्व विकास का एक महत्वपूर्ण माध्यम है। यह न केवल भाषा और शैली को निखारता है, बल्कि उनके चिंतन, विश्लेषण और सृजनात्मकता को भी विकसित करता है। यदि विद्यार्थी निबंध के स्वरूप और विशेषताओं को ध्यान में रखते हुए अभ्यास करें, तो वे बोधगम्य, रोचक और प्रभावी निबंध लिखने में सक्षम हो सकते हैं।

निबंध लेखन के उदाहरण

1 लड़का-लड़की एक समान

प्रस्तावना

स्त्री और पुरुष जीवन रूपी रथ के दो पहिए हैं। यदि एक भी पहिया कमज़ोर या छोटा-बड़ा हो, तो रथ का चलना असंभव हो जाता है। समाज और राष्ट्र की प्रगति भी तभी संभव है जब स्त्री और पुरुष को समान अवसर और सम्मान प्राप्त हो। इसलिए यह आवश्यक है कि लड़का और लड़की में कोई भेदभाव न किया जाए।

नारी में मानवीय गुण

नारी स्नेह, ममता, त्याग, सहनशीलता और करुणा की प्रतिमूर्ति होती है। उसके बिना परिवार, समाज और संस्कृति की कल्पना अधूरी है।

“एक नहीं दो-दो मात्राएँ, नर से भारी नारी।”

प्राचीन काल में नारी की स्थिति

वैदिक युग में नारी को उच्च स्थान प्राप्त था। गार्गी, मैत्रेयी, लोपामुद्रा जैसी विदुषी स्त्रियाँ वेदों पर शास्त्रार्थ करती थीं। उस समय नारी को सहधर्मिणी, अर्धांगिनी और गृहलक्ष्मी कहा जाता था।

मध्यकाल में नारी की स्थिति

मध्यकाल में विदेशी आक्रमणों और सामाजिक बंधनों ने नारी की स्वतंत्रता को समाप्त कर दिया। उसे शिक्षा से वंचित कर दिया गया और वह केवल घर की चारदीवारी में सिमट गई।

आधुनिक युग में नारी

सावित्रीबाई फुले, पंडिता रमाबाई, राजा राममोहन राय, महात्मा गांधी जैसे समाज सुधारकों ने नारी को शिक्षा और अधिकार दिलाने के प्रयास किए। स्वतंत्रता के बाद अनेक कानून बनाए गए, जिससे नारी की स्थिति में सुधार आया। आज की नारी डॉक्टर, वैज्ञानिक, शिक्षक, नेता, पायलट जैसे विभिन्न क्षेत्रों में कार्य कर रही है।

नारी और पुरुष की सोच

कभी जिसे बोझ समझा जाता था, वही कन्या आज घर और समाज की शोभा बन रही है। लिंगानुपात सुधारने हेतु सरकार द्वारा 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' जैसे अभियान चलाए गए हैं। अब सोच बदल रही है, लड़की को भी लड़के की तरह सम्मान और अवसर मिल रहा है।

उपसंहार

समाज की उन्नति नारी की उन्नति से जुड़ी हुई है। इसलिए 'लड़का-लड़की एक समाज' के विचार को केवल कथन नहीं, व्यवहार में लाना ज़रूरी है। समानता की नींव पर ही एक सशक्त और संवेदनशील समाज का निर्माण संभव है।

2. समय का सदुपयोग

प्रस्तावना – मनुष्य अपने जीवन में बहुत कुछ कमाता है और बहुत गँवाता है। उसे प्रत्येक वस्तु परिश्रम के उपरांत प्राप्त होती है, परंतु प्रकृति ने उसे समय का अमूल्य उपहार मुफ्त दिया है। इस उपहार की अवहेलना करके उसकी महत्ता न समझने वालों को एक दिन पछताना पड़ता है क्योंकि गया समय लौटकर वापस नहीं आता है। जो समय बीत गया उसे किसी हाल में लौटाया नहीं जा सकता है।

समय नियोजन का महत्त्व – समय ऐसी शक्ति है जिसका वितरण सभी के लिए समान रूप से किया गया है, परंतु उसका लाभ वही उठा पाते हैं जो समय का उचित नियोजन करते हैं। प्रकृति ने किसी के लिए भी छोटे दिन नहीं बनाया है परंतु नियोजनबद्ध तरीके से काम करने वाले हर काम के लिए पूरा समय बचा लेते हैं और अनियोजित तरीके से काम करने वालों का काम समय पर पूरा न होने से समय की कमी का रोना रोते हैं। समय का नियोजन न करने वालों को समय पीछे ढकेल देता है और समय का सदुपयोग करने वाले सफलता की सीढ़ियाँ चढ़ते हैं।

महापुरुषों की सफलता का रहस्य उनके द्वारा समय का नियोजन ही है जिससे वे समय पर अपने काम निपटा लेते हैं। गांधी जी समय के एक-एक क्षण का सदुपयोग करते थे। वे अपनी दिनचर्या के अनुरूप रोज़ का काम रोज़ निपटाने के लिए तालमेल बिठा लेते थे। विद्यार्थी जीवन में समय का सदुपयोग और उसके नियोजन का महत्त्व और भी बढ़ जाता है क्योंकि इसी काल में उसे विद्यार्जन के अलावा शारीरिक और चारित्रिक विकास पर भी ध्यान देना होता है। इसके लिए उसे हर विषय के अध्ययन के लिए समय निकालना पड़ता है ताकि कोई विषय छूट न जाए। इसके अलावा उसे खेलने और अन्यकार्यों के लिए भी समय विभाजन करना पड़ता है। जो विद्यार्थी समय का उचित विभाजन नहीं करते वे सफलता नहीं प्राप्त कर पाते। आज का काम कल पर छोड़ने वाले विद्यार्थी भी सफलता से कोसों दूर रह जाते हैं। फिर किस्मत का रोना रोने के अलावा उनके पास कोई रास्ता नहीं बचता है। ऐसे विद्यार्थियों के लिए ही कहा गया है कि –

अब पछताए होत का, जब चिड़िया चुग गई खेत ।

समय का अधिकाधिक उपयोग- समय का महत्व और मूल्य समझकर हमें इसका अधिकाधिक उपयोग करना चाहिए। हमें एक बात यह सदैव ध्यान रखना चाहिए कि समय और ज्वार किसी की प्रतीक्षा नहीं करते हैं। वे अपने समयानुसार आते-जाते रहते हैं। यह तो व्यक्ति के विवेक पर निर्भर करता है कि वे उनका उपयोग करते हैं या सदुपयोग। समय के बारे में एक बात सत्य है कि समय किसी की भी परवाह नहीं करता। यह किसी शासक, राजा या तानाशाह के रोके नहीं रुका है। जिन लोगों ने समय को नष्ट किया है, समय उनसे बदला लेकर एक दिन उन्हें अवश्य नष्ट कर देता है। इस क्षणभंगुर मानव जीवन में काम अधिक और समय बहुत कम है। नेपोलियन और सिकंदर महान ने समय के पल-पल का उपयोग किया। समय पर बिना चूके अपने शत्रुओं-पर हमला किया और विजयश्री का वरण किया। समय पर हमले का जवाब न देने वाले, शत्रुओं को समय देने वाले शासक के हाथ पराजय ही लगती है। आतंकियों द्वारा लगाए बम को समय पर नष्ट न करने का कितना भीषण परिणाम होगा यह बताने की आवश्यकता नहीं है। समय के एक-एक पल की कीमत समझते हुए संत कबीर दास ने ठीक ही लिखा है –

**काल करै सो आज कर, आज करै सो अब ।
पल में परलै होयगी, बहुरि करेगा कबा॥**

आलस्य समय के सदुपयोग में बाधक – कुछ लोग समय का उपयोग तो करना चाहते हैं, परंतु आलस्य उनके मार्ग में बाधक बन जाता है। यह मनुष्य को समय पर काम करने से रोकता है। आलस्य मनुष्य का सबसे बड़ा शत्रु है। कहा भी गया है, “आलस्यो हि मनुष्याणां शरीरस्थो महारिपुः”। जो लोग बुद्धिमान होते हैं वे खाली समय का उपयोग अच्छी पुस्तकें पढ़ने में करते हैं। इसके विपरीत मूर्ख अपने समय का उपयोग सोने और झगड़ने में करते हैं।

उपसंहार- प्रकृति ने समय का बँटवारा सभी के लिए बराबर किया है। हमें चाहिए कि हम इसी समय का उचित नियोजन करें और प्रत्येक कार्य को समय पर निपटाने का प्रयास करें। आज का कार्य कल पर छोड़ने की आदत आलस्य को बढ़ावा देती है। हमें समय का उपयोग करते हुए सफलता अर्जित करने का प्रयास करना चाहिए।

3 पत्र-पत्रिकाओं के नियमित पठन के लाभ

प्रस्तावना- मनुष्य जिज्ञासु एवं ज्ञान-पिपासु जीव है। वह विभिन्न साधनों एवं माध्यमों से अपनी जिज्ञासा एवं ज्ञान-पिपासा शांत करता आया है। अन्य प्राणियों की तुलना में उसका मस्तिष्क विकसित होने के कारण वह अनेकानेक साधनों का प्रयोग करता है। ऐसे ही साधनों में एक है- पत्र-पत्रिकाएँ, जिनके द्वारा मनुष्य अपना ज्ञानवर्धन एवं मनोरंजन करता है।

ज्ञान एवं मनोरंजन का भंडार- पत्र-पत्रिकाएँ अपने अंदर तरह-तरह का ज्ञान समेटे होती हैं। इनके पठन से ज्ञानवर्धन के साथ-साथ हमारा स्वरूप मनोरंजन भी होता है। वैसे भी पत्र-पत्रिकाएँ और पुस्तकें मनुष्य की सबसे अच्छी मित्र होती हैं। पुस्तकें और पत्र-पत्रिकाएँ पढ़ते समय यदि व्यक्ति इनमें एक बार खो गया तो उसे अपने आस-पास की दुनिया का ध्यान नहीं रह जाता है। पाठक को ऐसा लगने लगता है कि उसे कोई खजाना मिल गया है। इनमें छपी कहानियों से हमारा मनोरंजन होता है तो वहीं हमें नैतिक ज्ञान भी मिलता है तथा मानवीय मूल्यों की समझ पैदा होती है। इनमें

विभिन्न राज्यों पर छपे लेख, वर्ग-पहेलियाँ, शब्दों का वर्गजाल, बताओ तो जानें आदि स्तंभ ज्ञानवृद्धि में सहायक होते हैं। रंगभरो, बिंदुजोड़ो, कविता। कहानी पूरी कीजिए जैसे स्तंभ ज्ञान में वृद्धि करते हैं।

पढ़ने की स्वस्थ आदत का विकास – पत्र-पत्रिकाओं के नियमित पठन से पढ़ने की स्वस्थ आदत का विकास होता है। यह देखा गया है कि जो बालक पढ़ने से जी चुराते हैं या पाठ्यक्रम की पुस्तकें पढ़ने से आना-कानी करते हैं उनमें पढ़ने की आदत विकसित करने का सबसे अच्छा साधन पत्र-पत्रिकाएँ हैं। इनमें छपी कहानियाँ, चुटकुले, आकर्षक चित्र पढ़ने को विवश करते हैं। यह आदत धीरे-धीरे बढ़ती जाती है जिसे समयानुसार पाठ्य पुस्तकों के पठन की ओर मोड़ा जा सकता है। इससे बच्चे में पढ़ने की आदत का विकास हो जाता है तथा पढ़ाई के प्रति रुचि उत्पन्न हो जाती है। ये पत्र-पत्रिकाएँ बच्चों के लिए पुनरावृत्ति का काम करती हैं। कई बच्चे कहानियाँ पढ़ने की लालच में गृहकार्य करने बैठ जाते हैं।

रंग-बिरंगी पत्रिकाएँ – बच्चों तथा पाठकों की आयु-रुचि तथा पत्र-पत्रिकाओं के प्रकाशन अवधि के आधार पर इन्हें कई वर्गों में बाटा जा सकता है। जो पत्र-पत्रिकाएँ सप्ताह में एक-बार प्रकाशित की जाती हैं, उन्हें साप्ताहिक पत्रिकाएँ कहा जाता है। इन पत्रिकाओं में राजस्थान पत्रिका, सरस सलिल, इंडिया टुडे आदि मुख्य हैं। कुछ पत्रिकाएँ पंद्रह दिनों में एक बार छापी जाती हैं। इन्हें पाक्षिक पत्रिका कहते हैं। पराग, नंदन, नन्हे सप्ताह, चंपक, लोट-पोट, चंदा मामा, सरिता, माया आदि ऐसी ही पत्रिकाएँ हैं। महीने में एक बार छपने वाली पत्र-पत्रिका को मासिक पत्रिकाएँ कहा जाता है। इन पत्रिकाओं में गृहशोभा, सुमन, सौरभ, मुक्ता कादंबिनी, रीडर्स डाइजेस्ट, प्रतियोगिता दर्पण, मनोरमा तथा फ़िल्मी दुनिया से संबंधित बहुत-सी पत्रिकाएँ हैं। इनके अलावा और भी विषयों तथा साहित्यिक पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन महीने में एक बार किया जाता है। कुछ पत्रिकाओं का वार्षिकांक और अर्ध-वार्षिकांक भी प्रकाशित होता है।

पत्र-पत्रिकाएँ कितनी लाभदायी – पत्र-पत्रिकाएँ मनुष्य के दिमाग को शैतान का घर होने से बचाती हैं। ये हमारे बौद्धिक विकास का सर्वोत्तम साधन हैं। इन्हें ज्ञान एवं मनोरंजन का खजाना कहने में कोई अतिशयोक्ति नहीं है। शरीर और मस्तिष्क की थकान और तनाव दूर करना हो या अनिद्रा भगाना हो तो पत्र-पत्रिकाएँ काम आती हैं। सफर में इनसे अच्छा साथी और कौन हो सकता है। एकांत हो या किसी का इंतज़ार करते हुए समय बिताना हो पत्रिकाओं का सहारा लेना सर्वोत्तम रहता है। इनसे खाली समय आराम से कट जाता है। इन पत्र-पत्रिकाओं में छपी जानकारियों का संचयन करके जब चाहे काम में लाया जा सकता है।

पत्रिकाओं से दोहरा लाभ – पत्र-पत्रिकाएँ एक ओर हमारा बौद्धिक विकास करती हैं, मनोरंजन करती हैं तो दूसरी ओर रोज़गार का साधन भी हैं। इनके प्रकाशन में हज़ारों-लाखों को रोज़गार मिला है तो बहुत से लोग इन्हें बाँटकर और बेचकर रोटी-रोज़ी का इंतजाम कर रहे हैं। इसके अलावा इन पत्रिकाओं को पढ़कर रद्दी में बेचने के बजाय बहुत से लोग लिफ़ाफ़े बनाकर अपनी आजीविका चला रहे हैं। इस प्रकार पत्रिकाएँ आम के आम और गुरुलियों के दाम की कहावत को चरितार्थ कर रही हैं।

उपसंहार- पत्र-पत्रिकाएँ हमारी सच्ची मित्र हैं। ये हमारे सामने ज्ञान का मोती बिखराती हैं। इनमें से कितनी मोतियाँ हम एकत्र कर सकते हैं, यह हमारी क्षमता पर निर्भर करता है। हमें पत्र-पत्रिकाओं के पठन की आदत डालनी चाहिए तथा जन्मदिन आदि के अवसर पर उपहारस्वरूप पत्रिकाएँ देकर नई शुरुआत करनी चाहिए।

4. परोपकार

प्रस्तावना- परोपकार शब्द ‘पर’ और ‘उपकार’ के मेल से बना है, जिसका अर्थ है-दूसरों की भलाई अर्थात् दूसरों की भलाई के लिए तन-मन और धन से किए गए सभी कार्य परोपकार कहलाते हैं। कवि गोस्वामी तुलसीदास ने इस संबंध में कहा है- ‘परहित सरिस धर्म नहिं भाई/ पर पीड़ा सम नहिं अधमाई’ अर्थात् परोपकार के समान न कोई धर्म है और न दूसरों को सताने जैसा कोई पाप। मनुष्य का सारा जीवन प्रेम और सहयोग पर आधारित है। इसी सहयोग के मूल में है- परोपकार, जिससे उपकारी और उपकृत दोनों को खुशी होती है।

परोपकार-मानवधर्म – परोपकार को मानवजीवन का सबसे बड़ा धर्म कहा जाए तो कोई अतिशयोक्ति न होगी। मनुष्य का धर्म है कि वह जैसे भी हो दूसरे की मदद करे। यहीं से परोपकार की शुरुआत हो जाती है। यदि मनुष्य परोपकार नहीं करता है तो उसमें और पशु में क्या अंतर रह जाता है। कवि मैथिलीशरण गुप्त ने ठीक ही कहा है –

अहा! वही उदार है, परोपकार जो करे ।
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे ॥

परोपकारी प्रकृति- हम ध्यान से देखें तो प्रकृति का कण-कण परोपकार में लीन दिखता है। सूर्य अपना प्रकाश धरती का अँधेरा भगाने के लिए करता है तथा गरमी से शीत हर लेता है ताकि जीव आनंदपूर्वक रह सके। चाँद अपनी शीतलता से मन को शांति देता है। बादल दूसरों की भलाई के लिए बरसकर अपना अस्तित्व नष्ट कर लेते हैं। इसी प्रकार नदी तालाब अपना पानी दूसरों के लिए त्याग देते हैं। पेड़ दूसरों की क्षुधा शांति के लिए ही फल धारण करते हैं। प्रकृति के अभिन्न अंग फूल अपनी सुगंध दूसरों को बाँटते रहते हैं। प्रकृति के इस कार्य से प्रेरित होने में संत और सज्जन कहाँ पीछे रहने वाले। वे भी दूसरों की भलाई के लिए धन एकत्र करते हैं। कवि रहीम ने ठीक ही कहा है –

तरुवर फल नहिं खात हैं, सरवर करत न पान ।
कह रहीम परकाज हित, संपति सँचहि सुजान॥

परोपकार के विविध रूप – परोपकार के नाना रूप साधन एवं तरीके हैं। मनुष्य वाणी, मन और कर्म से परोपकार कर सकता है, पर सबसे अच्छा तरीका कर्म द्वारा दूसरों की भलाई करना है, क्योंकि इसका प्रत्यक्ष लाभ व्यक्ति को मिलता है। वाणी द्वारा दूसरों की भलाई दूसरों का मनोबल बढ़ाने में सहायक सिद्ध होती है। परोपकार के अंतर्गत हम असहाय की धन से मदद करके रोगी की सेवा करके, अपाहिज को उसके गंतव्य तक पहुँचाने जैसे छोटे-छोटे कार्यों द्वारा कर सकते हैं।

परोपकार के विविध उदाहरण – भारत का इतिहास परोपकारी व्यक्तियों के कार्यों से भरा पड़ा है। यहाँ लोगों ने मानवता की भलाई के लिए न अपने धन को धन समझा और न तन को तन। आवश्यकता पड़ने तन, मन और धन से दूसरों की भलाई की। भामाशाह ने अपनी जीवनभर की संचित कमाई राणा प्रताप के चरणों में रख दिया। महर्षि दधीचि ने देवताओं को संभावित पराजय से बचाने के लिए और मानवता के कल्याण हेतु अपनी हड्डियों तक का

दान दे दिया। कर्ण ने अपने जीवन की परवाह न करते हुए कवच, कुंडल और सोने के दाँत तक का दान दे दिया। राम, कृष्ण, ईसा मसीह, मदर टेरेसा, सुकरात, महात्मा गांधी आदि ने अपना जीवन ही परोपकार में लगा दिया। परोपकार के लिए सुकरात ने ज़हर का प्याला पिया, तो गौतम बुद्ध राज्य का सुख छोड़कर संन्यासी बन गए।

वर्तमान स्थिति – मनुष्य अपनी बढ़ी हुई आवश्यकताएँ, लोभ एवं स्वार्थ की प्रवृत्ति के कारण इतना उलझा हुआ है कि परोपकार जैसे कार्य पीछे छूट गए हैं। लोगों में परोपकारी भावना का अभाव दिखता है। आज मनुष्य को अधिकाधिक धन संचय करने की पड़ी है इस कारण वह पशुवत अपने लिए ही जी रहा है और मर रहा है। दूसरों की भलाई करना किताबों तक सीमित रह गया है।

उपसंहार – मानव जीवन को तभी सार्थक कहा जा सकता है जब वह परोपकार करे। इसके लिए छोटे-से-छोटे कार्य से शुरुआत की जा सकती है। परोपकार करने से खुद को आत्मिक शांति तो मिलती है वहीं दूसरे को मदद एवं खुशी भी मिलती है। मनुष्य को परोपकारी वृत्ति का कभी भी त्याग नहीं करना चाहिए।

अभ्यास प्रश्न

1. रिक्त स्थान भरिए –

- (क) मनुष्य _____ प्राणी है।
(ख) विपत्ति में साथ देने वाला मित्र _____ कहलाता है।

2. सत्य/असत्य लिखिए –

- (क) छात्रावस्था में किए गए सभी मित्र सच्चे होते हैं।
(ख) कृष्ण-सुदामा की मित्रता में आर्थिक समानता नहीं थी।

3. लघु उत्तरीय प्रश्न –

- (क) सच्चे मित्र के दो गुण लिखिए।
(ख) राम-सुग्रीव की मित्रता से हमें क्या सीख मिलती है?

4. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न –

'सच्चा मित्र वही है जो विपत्ति में साथ दे'— इस कथन की पुष्टि करते हुए एक निबंध लिखिए।

28

संवाद लेखन

संवाद दो शब्दों ‘सम्’ और ‘वाद’ के मेल से बना है, जिसका अर्थ है-बातचीत करना। इसे हम वार्तालाप भी कहते हैं। दो व्यक्तियों के मध्य होने वाली बातचीत को संवाद कहा जाता है।

संवाद व्यक्ति के मन के भाव-विचार जानने-समझने और बताने का उत्तम साधन है। संवाद मौखिक और लिखित दोनों रूपों में किया जाता है। संवाद में स्वाभाविकता होती है। इसमें व्यक्ति की मनोदशा, संस्कार, बातचीत करने का ढंग आदि शामिल होता है। व्यक्ति की शिक्षा-दीक्षा उसकी संवाद शैली और भाषा को प्रभावित करती है। हमें सामने वाले की शिक्षा और मानसिक स्तर को ध्यान में रखकर संवाद करना चाहिए। इसी बातचीत का लेखन संवाद लेखन कहलाता है।

प्रभावपूर्ण संवाद बोलना और लिखना एक कला है। इसके लिए निम्नलिखित बातों को ध्यान में रखना चाहिए –

- संवाद की भाषा सरल, स्पष्ट और समझ में आने वाली होनी चाहिए।
- संवाद बोलते समय सुननेवाले की मानसिक क्षमता का ध्यान रखना चाहिए।
- वाक्य छोटे और सरल होने चाहिए।
- संवादों को रोचक एवं सरस बनाने के लिए सूक्षियों एवं मुहावरों का प्रयोग करना चाहिए।
- संवाद लिखते समय विराम चिह्नों का प्रयोग उचित स्थान पर करना चाहिए।
- बोलते समय बलाधात और अनुतान को ध्यान में रखना चाहिए।
- एक बार में एक या दो वाक्य बोलकर सुनने वाले की प्रतिक्रिया की प्रतीक्षा करनी चाहिए।

संवाद लेखन वह लेखन शैली है जिसमें दो या दो से अधिक पात्रों के बीच बातचीत को रोचक, स्वाभाविक और उद्देश्यपूर्ण तरीके से प्रस्तुत किया जाता है।

संवाद लेखन की रूपरेखा

1. पात्रों के नाम साफ-साफ लिखे जाते हैं।
2. प्रत्येक पात्र का संवाद नया पैराग्राफ बनाकर लिखा जाता है।
3. औपचारिकता नहीं होती, केवल बोलचाल की शैली होती है।

संवाद लेखन में ध्यान रखने योग्य बातें

- पात्रों के नाम स्पष्ट रखें
- संवाद को लंबा न रखें
- भाषा सरल और रोचक हो

- हास्य, तर्क या भावनाओं का समावेश करें
- विषय से न भटकें

उदाहरण 1

विषय: “छात्र और शिक्षक के बीच परीक्षा की तैयारी पर संवाद”

छात्र: नमस्ते सर! मुझे बोर्ड परीक्षा को लेकर कुछ चिंता हो रही है।

शिक्षक: चिंता मत करो, मेहनत और सही समय प्रबंधन से तुम अवश्य सफल होओगे।

छात्र: क्या मैं रोज़ एक विषय की योजना बनाकर तैयारी करूँ?

शिक्षक: हाँ, हर विषय को बराबर समय दो और पुराने प्रश्नपत्र भी हल करो।

छात्र: धन्यवाद सर, आपने मेरा आत्मविश्वास बढ़ा दिया।

उदाहरण 2

विषय: “माता और पुत्र के बीच सफाई पर संवाद”

माँ: बेटा, तुमने अपने कमरे की सफाई क्यों नहीं की?

बेटा: माँ, आज स्कूल का काम बहुत ज्यादा था।

माँ: फिर भी साफ-सफाई बहुत ज़रूरी है, इससे स्वास्थ्य अच्छा रहता है।

बेटा: आप ठीक कह रही हैं माँ, मैं अभी सफाई कर देता हूँ।

उदाहरण 3

विषय: ‘प्लास्टिक की थैलियों का प्रयोग प्रतिबंधित होना चाहिए’

प्रभात – अरे पल्लव! यह सामान कैसे बिखरा हुआ है?

पल्लव – दुकानदार ने घटिया थैलियों में सामान दे दिया था। उसके टूटते ही सारा सामान बिखर गया।

प्रभात – इसमें दुकानदार की क्या गलती है?

पल्लव – फिर किसकी गलती है?

प्रभात – गलती तुम्हारी है। तुम घर से थैला लेकर क्यों नहीं आए?

पल्लव – इन प्लास्टिक की थैलियों में सामान लाने में क्या नुकसान है?

प्रभात – नुकसान है। ये प्लास्टिक की थैलियाँ पर्यावरण के अनुकूल नहीं हैं।

पल्लव – वो कैसे?

प्रभात – देखो, प्लास्टिक आसानी से सड़-गलकर मिट्टी में नहीं मिलता है। वह सालों-साल मिट्टी में बना रहता है।

इससे

ज़हरीली गैसें निकलती हैं।

पल्लव – पर ये पानी में तो गल जाती होंगी?

प्रभात – नहीं पल्लव, ये पानी में भी नहीं गलती हैं। ये नालियों और नालों में फँसकर उन्हें जाम कर देती हैं।

पल्लव – इससे बचने के लिए क्या करना चाहिए?

प्रभात- इससे बचने के लिए हमें प्लास्टिक का कम-से-कम प्रयोग करना चाहिए। हमें कपड़े के थैलों में सामान खरीदना

चाहिए।

पल्लव – सरकार को इन प्लास्टिक की थैलियों पर रोक लगा देनी चाहिए।

प्रभात – वह तो ठीक है, पर हमें भी जागरूक बनना चाहिए। लोगों के सहयोग के बिना कोई काम सफल नहीं होता है।

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1 : निम्नलिखित विषयों पर संवाद लेखिए —

1. दो मित्रों के बीच मोबाइल की लत पर संवाद
2. छात्र और पुस्तकालयाध्यक्ष के बीच पुस्तक जारी करने पर संवाद
3. ग्राहक और दुकानदार के बीच कपड़े की गुणवत्ता पर संवाद
4. दो विद्यार्थियों के बीच परीक्षा की तैयारी पर संवाद
5. यात्री और बस कंडक्टर के बीच टिकट को लेकर बातचीत

आज के प्रतिस्पर्धी युग में किसी उत्पाद, सेवा या सूचना को आम जन तक पहुँचाने का सबसे प्रभावी साधन है — विज्ञापन। विज्ञापन एक संक्षिप्त, आकर्षक और प्रभावशाली माध्यम होता है, जिसका उद्देश्य किसी वस्तु या सेवा की जानकारी देकर उपभोक्ता को आकर्षित करना होता है। वर्तमान काल में वस्तुओं की बिक्री बढ़ाने एवं उनके उपभोग पर भरपूर जोर दिया जा रहा है। उत्पादक अपनी वस्तुओं की बिक्री द्वारा अधिकाधिक लाभ कमाना चाहते हैं तो उपभोक्ता उनका प्रयोग कर सुख एवं संतुष्टि पाना चाहता है। उपभोक्ताओं की इसी प्रवृत्ति का फायदा उठाने के लिए उत्पादक तरह-तरह के साधनों का सहारा लेते हैं। आज वस्तुओं की बिक्री बढ़ाने का प्रमुख हथियार विज्ञापन है। विज्ञापन शब्द ‘ज्ञापन’ में ‘वि’ उपसर्ग लगाने से बना है, जिसका अर्थ है-विशेष जानकारी देना। यह जानकारी उत्पादित वस्तुओं सेवाओं आदि से जुड़ी होती है। विज्ञापन में वस्तु के गुणों को बढ़ा-चढ़ाकर प्रस्तुत किया जाता है, जिससे उपभोक्ता लालायित हों और इन्हें खरीदने के लिए विवश हो जाएँ। विज्ञापन के कारण उत्पादकों को अपनी वस्तुओं के अच्छे दाम मिल जाते हैं तो उपभोक्ता को वस्तुओं की जानकारी, तुलनात्मक दाम एवं चयन का विकल्प मिल जाता है। आजकल टी.वी., रेडियो के कार्यक्रम, समाचार पत्र, पत्रिकाएँ, भवनों की दीवारें विज्ञापनों से रंगी दिखाई पड़ती हैं।

परिभाषा

विज्ञापन वह सूचना होती है, जो किसी वस्तु, सेवा, आयोजन या आवश्यकता की ओर लोगों का ध्यान आकर्षित करने के लिए दी जाती है। यह जनसंचार का प्रभावशाली साधन है।

विज्ञापन का उद्देश्य

- वस्तुओं/सेवाओं का प्रचार करना
- किसी आयोजन की जानकारी देना
- नौकरी, मकान, संपत्ति या सेवाओं की आवश्यकता बताना
- खरीदार या विक्रेता को ढूँढ़ना
- खोई हुई वस्तु या व्यक्ति की सूचना देना

विज्ञापन लेखन की विशेषताएँ

- विज्ञापन बहुत छोटे व बिंदुवार होते हैं।
- जानकारी सीधी व भ्रम रहित होती है।
- शब्दों और टैगलाइन का चयन ध्यान खींचने वाला होता है।
- मोबाइल नंबर, ईमेल या पता अवश्य दिया जाता है।
- क्रिएटिव और अनोखा अंदाज अपनाया जाता है।

विज्ञापन के प्रकार

(क) वाणिज्यिक विज्ञापन : इनका उद्देश्य किसी उत्पाद या सेवा की बिक्री को बढ़ावा देना होता है।

उदाहरण: टूथपेस्ट, साबुन, मोबाइल, कोचिंग संस्थान आदि का प्रचार।

मुख्य बिंदु :

आकर्षक नाम व टैगलाइन

मूल्य, ऑफर

पता व संपर्क नंबर

(ख) गैर-वाणिज्यिक विज्ञापन

इनका उद्देश्य कोई सूचना देना या सामाजिक जागरूकता फैलाना होता है।

उदाहरण :

खोया-पाया विज्ञापन

नौकरी की आवश्यकता

मकान किराए पर देना/चाहिए

समाज सेवा से जुड़े विज्ञापन

मुख्य बिंदु :

आवश्यक जानकारी

संपर्क सूत्र

तारीख (जहाँ जरूरी हो)

विज्ञापन लेखन का प्रारूप

क) वाणिज्यिक विज्ञापन का उदाहरण

नया उत्पाद बेचने के लिए विज्ञापन

शुद्ध मसाले – घर का स्वाद

अब घर बैठे पाइए 100% शुद्ध हल्दी, धनिया, मिर्च पाउडर

विशेष ऑफर : पहले 100 ग्राहकों को 20% छूट!

संपर्क करें :

सुरभि मसाला उद्योग, इंदौर

9876543210 |

(ख) गैर-वाणिज्यिक विज्ञापन का उदाहरण

नौकरी चाहिए का विज्ञापन

नौकरी चाहिए

स्नातक युवक

2 वर्षों का कंप्यूटर ऑपरेटर अनुभव

स्थान – भोपाल

संपर्क: मो. अर्जुन सिंह – 903XXXX321

खोया-पाया विज्ञापन का उदाहरण

खोया – पालतू कुत्ता

दिनांक 12 जून को 10 बजे

क्षेत्र – अरेरा कॉलोनी, भोपाल

कुत्ते का नाम : रॉकी | नस्ल : लैब्राडोर | रंग : सफेद

कृपया सूचना दें : 9898XXXX88

दूँढ़ने वाले को इनाम दिया जाएगा।

विज्ञापन लेखन कैसे करें –

विज्ञापन लेखन करते समय –

एक बाक्स-सा बनाकर ऊपर मध्य में विज्ञापित वस्तु का नाम मोटे अक्षरों में लिखना चाहिए। दाँईं एवं बाँईं किनारों पर सेल धमाका, खुशखबरी, खुल गया जैसे लुभावने शब्दों को लिखना चाहिए। बाईं ओर मध्य में विज्ञापित वस्तु के गुणों का उल्लेख करना चाहिए। दाहिनी ओर या मध्य में वस्तु का बड़ा-सा चित्र देना चाहिए। स्टॉक सीमित या जल्दी करें जैसे प्रेरक शब्दों का प्रयोग किसी डिजाइन में होना चाहिए। मुफ्त मिलने वाले सामानों या छूट का उल्लेख अवश्य किया जाना चाहिए। ऊपर ही जगह देखकर कोई छोटी-सी तुकबंदी, जिससे पढ़ने वाला आकर्षित हो जाए।

संपर्क करें/फोन नं. का उल्लेख करें, जैसे- 011-23456789 आदि। अपना या सही फोन नं. देने से बचना चाहिए।

एक्सेल मोबाइल फोन बनाने वाली कंपनी के लिए एक विज्ञापन तैयार कीजिए।

मोबाइल फोन की दुनिया में धमाका

एक्सेल 5.5

- 5" डिस्प्ले
- 4000 Amh बैटरी
- स्लिम बॉडी
- 13 megapixel कैमरा
- गोल्डन, ब्राउन, ब्लैक रंग
- टच स्क्रीन, रैम 2 जी.बी.

स्क्रीन गार्ड और
कवर फ्री

रु. 5000 से शुरू



आप एक योग प्रशिक्षण केंद्र खोलना चाहते हैं। इस संबंध में युवाओं को आकर्षित करने वाला एक विज्ञापन तैयार कीजिए।

खुल गया



योग
भगाए रोग

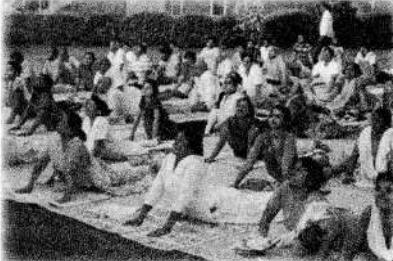


योग करें
स्वस्थ रहें

आनंद योग केंद्र

क्या आप अपच, अनिद्रा, मोटापा, उच्च रक्तचाप आदि से परेशान हैं?
 तो आइए आनंद योग केंद्र प्रशिक्षित लोगों द्वारा प्रशिक्षण प्राकृतिक वातावरण में प्रवेश लेने पर योगकिट मुफ्त

खुल गया



अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1 : निम्नलिखित विषयों पर विज्ञापन तैयार कीजिए –

- (1) एक कोचिंग सेंटर का प्रचार करें जो 12वीं बोर्ड के छात्रों के लिए विशेष बैच चला रहा है।
- (2) आपने एक मोबाइल खो दिया है – अखबार के लिए विज्ञापन लिखिए।
- (3) किराए पर मकान देना है – विज्ञापन तैयार कीजिए।
- (4) एक पुरानी स्कूटी बेचने हेतु विज्ञापन तैयार करें।
- (5) एक सामाजिक संगठन द्वारा रक्तदान शिविर का आयोजन हो रहा है – विज्ञापन लिखें।

30

चित्र-आधारित लेखन

हिंदी साहित्य में दो प्रमुख विधाएँ होती हैं –

1. पद्य विधा
2. गद्य विधा

गद्य की अनेक रचनात्मक विधाओं में एक महत्वपूर्ण विधा है- चित्र वर्णन। यह लेखन-शैली व्यक्ति की अभिव्यक्ति क्षमता, कल्पनाशीलता और भाषा कौशल को प्रकट करने का सशक्त माध्यम है। चित्र-वर्णन कोई नई कला नहीं है। आदिमानव भी गुफाओं की दीवारों पर चित्र बनाकर अपने मन के भावों को व्यक्त करता था। वह चित्र आज भी हमारे लिए उसकी जीवन-शैली का प्रमाण हैं। चित्र को देखकर जब हम लिखित रूप में अपने भाव, विचार और कल्पनाओं को प्रकट करते हैं, तब वह चित्र-वर्णन कहलाता है। चित्र-वर्णन विद्यार्थियों की कल्पना शक्ति, पर्यवेक्षण क्षमता, तर्कशक्ति और भाषा-प्रयोग के स्तर को परखने का एक प्रभावी साधन है। यह कार्य उन्हें मौलिक और अभिव्यक्तिपूर्ण लेखन की दिशा में अग्रसर करता है। एक ही चित्र को देखने पर हर छात्र के मन में भिन्न-भिन्न विचार और भावनाएँ उत्पन्न हो सकती हैं, परंतु उनका मूलभाव सामान्य होता है।

चित्र-वर्णन करते समय ध्यान रखने योग्य बातें :-

1. चित्र को ध्यान से 2-3 बार देखें।
2. चित्र से जुड़ी भावनाओं और घटना की कल्पना करें।
3. चित्र के कथ्य को समझकर विचारों को क्रमबद्ध करें।
4. सरल, प्रभावशाली और वर्तमान काल में वाक्य बनाएँ।
5. भाषा रोचक, स्पष्ट और व्याकरणिक दृष्टि से शुद्ध हो।
6. अनुच्छेद संक्षिप्त, सारगर्भित और मूल भाव पर केंद्रित हो।

विद्यालयी शिक्षा में चित्र-वर्णन को शामिल करने के मुख्य उद्देश्य हैं—

- छात्रों की कल्पना शक्ति का विकास करना
- अवलोकन एवं विश्लेषण की क्षमता बढ़ाना
- भावनाओं की अभिव्यक्ति में प्रवीण बनाना
- भाषा-प्रयोग, व्याकरण और शब्द संपदा को समृद्ध करना
- लेखन में प्रवाह, सटीकता और रचनात्मकता लाना

चित्र-वर्णन की विशेषताएँ :-

1. चित्र ही लेखन का आधार होता है।
2. केवल दिखने वाले दृश्य नहीं, उसके पीछे छिपी भावना भी व्यक्त की जाती है।
3. सीमित शब्दों में गहरी बात कही जाती है।
4. सजावटी नहीं, भावनात्मक प्रभावी लेखन किया जाता है।
5. सामान्यतः चित्र-वर्णन वर्तमान काल में लिखा जाता है।

चित्र-वर्णन के प्रकार

1. वर्णनात्मक चित्र-वर्णन – चित्र में जो दिखाई देता है, उसका सीधा विवरण।
2. भावात्मक चित्र-वर्णन – दृश्य के साथ उसमें छिपे भावों का चित्रण।
3. काल्पनिक चित्र-वर्णन – चित्र को आधार बनाकर एक पूरी कहानी की रचना।
4. सूचनात्मक चित्र-वर्णन – सामाजिक जागरूकता जैसे विषयों पर आधारित चित्र, जैसे- स्वच्छता अभियान, टीकाकरण शिविर आदि।

चित्र-वर्णन के उदाहरण

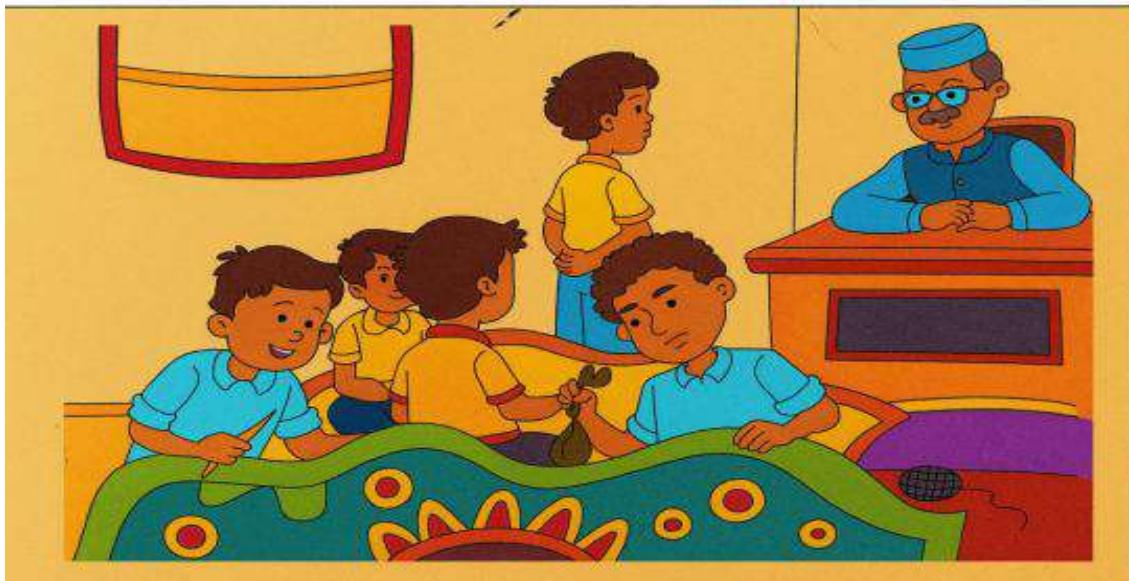
चित्र 1: महान कवि तुलसीदास



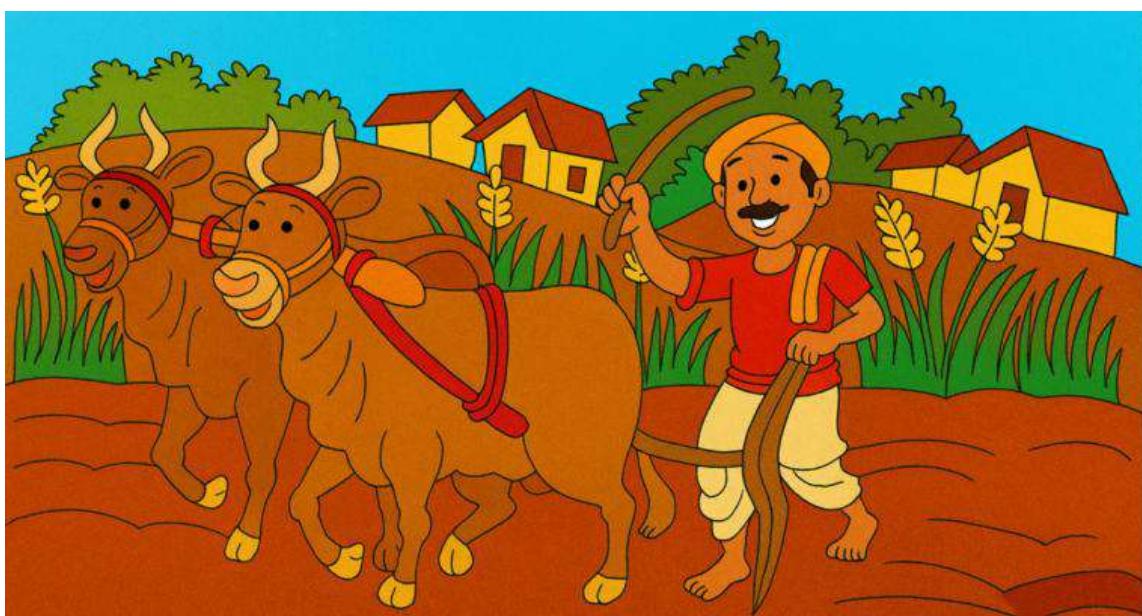
वर्णन :

यह चित्र भक्तिकाल के महान कवि तुलसीदास जी का है। इन्होंने 'रामचरितमानस' जैसी अद्भुत और अमर रचना की, जिसमें भगवान श्रीराम के जीवन की लीला को अत्यंत भावपूर्ण शैली में प्रस्तुत किया गया है। यह ग्रंथ अवधी भाषा में लिखा गया है और इसमें दोहा, चौपाई, सोरठा जैसे छंदों का सुंदर प्रयोग हुआ है। तुलसीदास जी की काव्य-शैली इतनी सरल और मधुर कि उनके दोहे और चौपाईयाँ जनमानस की जुबान पर सहजता से चढ़ जाती हैं। उनकी रचनाएँ आज भी हमारे जीवन को धर्म, नीति और मर्यादा की दिशा में मार्गदर्शन देती हैं।

चित्र देखकर वर्णन करें :-



चित्र देखकर वर्णन करे :-



चित्र देखकर वर्णन करे :-

अभ्यास प्रश्न

(अ) दिए गए चित्रों के आधार पर 80–100 शब्दों में चित्र-वर्णन करें –

1. एक गाँव का दृश्य (बच्चे खेलते हुए, किसान हल चलाते हुए)
2. स्वच्छता अभियान पर आधारित चित्र
3. विद्यालय में पुस्तक मेला
4. एक व्यस्त सड़क – ट्रैफिक व्यवस्था
5. किसी महापुरुष का चित्र (जैसे - महात्मा गांधी, रबींद्रनाथ टैगोर)
6. एक विज्ञान प्रदर्शनी का चित्र
7. रेलवे स्टेशन या बस अड्डा
8. प्राकृतिक आपदा (बाढ़, भूकंप) से संबंधित चित्र

(ब) रचनात्मक चित्र-वर्णन प्रश्न

1. यदि चित्र में केवल एक बूढ़ा व्यक्ति बैठा है – आप क्या कल्पना करेंगे?
2. चित्र में बारिश हो रही है और कुछ लोग भीग रहे हैं - इस चित्र का वर्णन करें
3. चित्र में एक लड़की पक्षियों को दाना खिला रही है – आप इसका क्या भाव समझते हैं?

31

सूचना लेखन

परिचय :

मनुष्य एक जिज्ञासु प्राणी है। वह हर समय जानकारियों से अवगत रहना चाहता है। समाज में जब कोई संस्था, संगठन या व्यक्ति सार्वजनिक रूप से कोई जानकारी देना चाहता है, तो वह इसे लिखित रूप में ‘सूचना’ के रूप में प्रस्तुत करता है।

सूचना का उद्देश्य कम शब्दों में ज्यादा जानकारी देना होता है।

सूचना-लेखन एक **औपचारिक लेखन शैली** है जिसके माध्यम से संस्था या व्यक्ति किसी आयोजन, परिवर्तन, नियम, कार्यक्रम, वस्तु-विलुप्ति आदि के बारे में सार्वजनिक जानकारी देता है।

सूचना लेखन की परिभाषा

जब किसी विशेष जानकारी को संक्षेप में, सरल भाषा में तथा औपचारिक शैली में इस प्रकार लिखा जाए कि वह अधिक से अधिक लोगों तक शीघ्र पहुँच सके, तो उसे **सूचना लेखन** कहते हैं।

सूचना लेखन का उद्देश्य

- आवश्यक जानकारी को सीमित शब्दों में सटीक रूप से प्रस्तुत करना
- जनसामान्य या लक्षित समूह को सूचित करना
- कम समय व कम शब्दों में प्रभावी संवाद स्थापित करना

सूचना लेखन की विशेषताएँ

1. सूचना तीन से पाँच पंक्तियों में होनी चाहिए।
2. भाषा स्पष्ट और सरल हो ताकि हर व्यक्ति आसानी से समझ सके।
3. भाषा में औपचारिकता हो परन्तु भावनात्मक अपील भी हो।
4. सूचना में आवश्यक तत्वों की पूर्ति हो — क्या, कब, कहाँ, कौन, क्यों, कैसे आदि।
5. सूचना देने वाले का नाम, पद, हस्ताक्षर तथा दिनांक आवश्यक है।
6. सूचना को ऐसे स्थान पर लगाया जाए जहाँ वह आसानी से पढ़ी जा सके — विद्यालय के नोटिस बोर्ड, कॉलोनी का सूचना पट्ट आदि।

सूचना लेखन की संरचना

सूचना लेखन करते समय निम्नलिखित संरचना अपनाई जाती है :

1. संस्था/विद्यालय का नाम

उदाहरणः नवभारत पब्लिक स्कूल, भोपाल

2. शीर्षक : सूचना

(मोटे अक्षरों में केन्द्र में)

3. मुख्य सूचना :

संक्षिप्त, परन्तु पूर्ण जानकारी देने वाला अनुच्छेद जिसमें विषय, तिथि, समय, स्थान आदि का उल्लेख हो।

4. सूचना लेखक का नाम/पद/हस्ताक्षर/दिनांक

प्रमुख शीर्षकों के उदाहरण

- स्वच्छता अभियान का आयोजन
- रक्तदान शिविर
- चित्रकला प्रतियोगिता
- गुम हुई वस्तु की सूचना
- खादी वस्त्रों पर छूट
- शैक्षिक भ्रमण की योजना

सूचना लेखन का स्वरूप :

संस्था/विद्यालय का नाम

सूचना

[तिथि]

शीर्षक : _____

मुख्य सूचना :

[सूचना का उद्देश्य, तिथि, समय, स्थान, प्रतिभागियों के लिए निर्देश आदि स्पष्ट रूप से लिखें।]

[हस्ताक्षर]

[नाम]

[पदनाम]

उदाहरण 1 :

सूचना लेखन का उदाहरण

विद्या भारती पब्लिक स्कूल, उज्जैन

सूचना

विद्यालय की सांस्कृतिक परिषद द्वारा 14 अगस्त की शाम 4 बजे विद्यालय प्रांगण में स्वतंत्रता दिवस की पूर्व संध्या पर देशभक्ति काव्य संध्या का आयोजन किया जा रहा है। इस कार्यक्रम में शहर के प्रसिद्ध कवि भाग लेंगे। सभी छात्र-छात्राओं एवं उनके अभिभावक सादर आमंत्रित हैं।

प्रत्यूषा शर्मा

(सचिव, सांस्कृतिक परिषद)

दिनांक : 12 अगस्त 2025

उदाहरण 2 :

राजकीय बालिका उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, उज्जैन

सूचना

तिथि : 17 जून 2025

विषय : खोई हुई वस्तु की सूचना

कक्षा 10वीं की छात्रा भावना रोय का नीले रंग का पर्स विद्यालय के पुस्तकालय के पास गिर गया है। उसमें पहचान पत्र, कुछ पैसे और एक पेन ड्राइव है। जिसने यह पर्स पाया हो, वह कृपया कार्यालय कक्ष में जमा कर दें।

अंजलि कश्यप

(प्रधानाचार्य)

उदाहरण 3 :

नवोदय विद्यालय, ग्वालियर

सूचना

तिथि : 15 जुलाई 2025

विषय : शैक्षिक भ्रमण

विद्यालय द्वारा कक्षा 10 के विद्यार्थियों के लिए 21 जुलाई से 25 जुलाई तक राजस्थान शैक्षिक भ्रमण का आयोजन किया जा रहा है। इच्छुक छात्र 18 जुलाई तक 2500 रुपये शुल्क के साथ नामांकन कर सकते हैं।

पुष्पा मिश्रा

उदाहरण 4 :

लायंस क्लब, भोपाल

सूचना

तिथि : 20 जून 2025

विषय : स्वास्थ्य शिविर

हमारी कॉलोनी में 23 जून को सुबह 9 बजे से 1 बजे तक 'हेपेटाइटिस बी' के निःशुल्क टीकाकरण हेतु स्वास्थ्य शिविर का आयोजन किया जा रहा है। यह शिविर सामुदायिक भवन के पास आयोजित होगा। इच्छुक लोग समय पर पहुँचें।

नीलिमा जोशी

(सचिव, कॉलोनी विकास समिति)

अभ्यास प्रश्न :

प्रश्न 1 :

आप विद्यालय के हेड ब्वाय/हेड गर्ल हैं। आपके विद्यालय में खेल सप्ताह का आयोजन किया जा रहा है। इसमें शामिल होने हेतु इच्छुक छात्र/छात्राओं से तीन दिनों के भीतर पंजीकरण करने को कहा गया है। एक सूचना लिखिए।

प्रश्न 2 :

आपकी कॉलोनी में वृक्षारोपण अभियान चलाया जा रहा है। कॉलोनी वासियों को इस अभियान में भाग लेने हेतु प्रेरित करने वाली एक सूचना लिखिए। आप कॉलोनी के सचिव हैं।

प्रश्न 3:

आपके विद्यालय में होली की छुट्टियाँ घोषित की गई हैं। छात्रों को सुरक्षित एवं मर्यादित होली मनाने हेतु प्रेरित करने वाली सूचना तैयार कीजिए।

प्रश्न 4 :

आप एक पुस्तक प्रदर्शनी का आयोजन कर रहे हैं जिसमें विभिन्न विषयों की पुस्तकें 30% छूट पर मिलेंगी। इच्छुक छात्र-छात्राओं को इसकी जानकारी देने के लिए एक सूचना लिखिए।

प्रश्न 5 :

आपका पर्स विद्यालय में खो गया है जिसमें पहचान पत्र और कुछ पैसे थे। इसपर एक सूचना तैयार कीजिए ताकि जिसे पर्स मिले वह उसे कार्यालय में जमा कर दे।

32

लेखन कौशल – पत्र लेखन

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। वह अपने भावों, विचारों तथा जानकारी को दूसरों तक पहुँचाने की स्वाभाविक इच्छा रखता है। जब कोई व्यक्ति अपने मित्र, रिश्तेदार, शिक्षक, अधिकारी, संस्था प्रमुख अथवा अन्य किसी व्यक्ति से संपर्क स्थापित करना चाहता है, तो वह एक माध्यम अपनाता है- पत्र लेखन।

पत्र-लेखन केवल जानकारी भेजना ही नहीं, बल्कि भावों की अभिव्यक्ति का सशक्त साधन भी है। आधुनिक युग में भले ही ई-मेल, मैसेज, व्हाट्सएप जैसे माध्यमों का प्रचलन हो गया हो, लेकिन औपचारिक और शिष्ट संवाद के लिए पत्र लेखन की उपयोगिता आज भी बनी हुई है।

पत्र लेखन की विशेषताएँ

पत्र की भाषा स्पष्ट, सरल और प्रभावी होनी चाहिए ताकि पाठक बिना किसी भ्रम के उसे समझ सके।

पत्र छोटा, उद्देश्यपूर्ण और केंद्रित होना चाहिए। अनावश्यक विस्तार से बचना चाहिए।

पत्र की भाषा में विनम्रता होनी चाहिए, विशेषतः जब पत्र अधिकारी या वरिष्ठ को लिखा जा रहा हो।

अपनी बात आत्मविश्वास के साथ रखें। संदेह अथवा असमंजस के भाव नहीं आने चाहिए।

एक ही बात को बार-बार न दोहराएँ। इससे पत्र बोझिल और उबाऊ बनता है।

पत्र के आवश्यक अंग

क्र	अंग	विवरण
1	प्रेषक का पता	पत्र भेजने वाले का नाम व पता ऊपर बाईं ओर लिखा जाता है।
2	तिथि	पता के नीचे पत्र लिखने की तिथि होती है। जैसे – 17 जून, 2025
3	संबोधन	पत्र पाने वाले की आयु/पद के अनुसार – मान्यवर, प्रिय मित्र, आदरणीय महोदय आदि।
4	विषय	पत्र किस विषय में है, यह एक पंक्ति में लिखा जाता है। जैसे – “जुर्माना माफ करने हेतु निवेदन”
5	मुख्य भाग	यही पत्र का मूल भाग है, जिसमें विस्तार से बात लिखी जाती है।
6	समापन व हस्ताक्षर	पत्र के अंत में – सधन्यवाद, आपका आज्ञाकारी शिष्य, आदि शब्दों के साथ नाम।

पत्रों के प्रकार

1. औपचारिक पत्र

विवरण : ऐसे पत्र जहाँ लेखक और पाठक के बीच व्यक्तिगत संबंध न हो, बल्कि एक आधिकारिक स्थिति हो।

उदाहरण :

- प्रधानाचार्य को पत्र
- संपादक को पत्र
- कार्यालय/नगर निगम/रेलवे विभाग आदि को पत्र

उपश्रेणियाँ :

- प्रार्थना पत्र – छुट्टी के लिए, सहायता हेतु
- शिकायती पत्र – सार्वजनिक असुविधा, बिजली-पानी की समस्या
- आवेदन पत्र – नौकरी के लिए
- संपादकीय पत्र – अखबारों के संपादक को जनहित में
- व्यावसायिक पत्र – व्यापारिक संप्रेषण, आर्डर देना आदि

2. अनौपचारिक पत्र

विवरण : दोस्तों, माता-पिता, चाचा-ताऊ, भाई-बहन आदि को लिखे गए पत्र। इनमें आत्मीयता होती है।

उदाहरण :

- गर्भी की छुट्टियों के अनुभव का वर्णन करते हुए मित्र को पत्र
- परीक्षा में सफलता की सूचना देते हुए माता को पत्र

संबोधन व समापन के उदाहरण

रिश्ते / पद	संबोधन	समापन व नाम
प्रधानाचार्य	मान्यवर / महोदय	आपका आज्ञाकारी शिष्य – [नाम]
मित्र	प्रिय मित्र	तुम्हारा मित्र – [नाम]
पिता	पूज्य पिताजी	आपका पुत्र – [नाम]
संपादक	महोदय	भवदीय – [नाम]

उदाहरण : औपचारिक पत्र

अपने विद्यालय के प्रधानाचार्य को पत्र लिखिए, जिसमें आर्थिक सहायता का निवेदन हो।

सेवा में

प्रधानाचार्य महोदय

नव सृजन पब्लिक स्कूल

सोहना रोड, गुडगाँव

दिनांक: 17 जून, 2025

विषय: आर्थिक सहायता प्राप्त करने हेतु प्रार्थना-पत्र

महोदय,

सविनय निवेदन है कि मैं कक्षा दसवीं 'ए' का नियमित छात्र हूँ। मेरे पिता जिस कारखाने में कार्यरत थे, वह हाल ही में बंद हो गया है। इसके चलते मेरी पढ़ाई जारी रखना कठिन हो गया है।

मैं पढ़ाई में सदैव अग्रणी रहा हूँ और विद्यालय की क्रिकेट टीम का कप्तान भी हूँ। मेरी यह विनम्र प्रार्थना है कि कृपया मेरी आर्थिक स्थिति पर सहानुभूतिपूर्वक विचार करते हुए मुझे छात्रवृत्ति या शुल्क माफ़ी प्रदान की जाए। आपकी कृपा के लिए सदा आभारी रहूँगा।

सधन्यवाद,

आपका आज्ञाकारी शिष्य

विकास कुमार

कक्षा 10 'ए'

अनुक्रमांक – 12

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1 : विद्यालय के प्रधानाचार्य को पत्र लिखिए, जिसमें आप जुर्माना माफ करने की प्रार्थना कर रहे हैं।

प्रश्न 2 : विद्यालय में पुनः प्रवेश के लिए प्रार्थना पत्र लिखिए।

प्रश्न 3 : विद्यालय में पुस्तकालय की व्यवस्था सुधारने हेतु पत्र लिखिए।

प्रश्न 4 : नगर निगम को गंदगी की समस्या से अवगत कराते हुए पत्र लिखिए।

प्रश्न 5: अपने मित्र को पत्र लिखिए जिसमें गर्मी की छुट्टियों में आपके अनुभव का वर्णन हो।



CHHATTISGARH | MADHYA PRADESH | JHARKHAND | BIHAR



ई-7/22 एस.बी.आई., अरेरा कॉलोनी,
भोपाल 462016 (म.प्र.), भारत
टेलीफोन: 0755-4851056
ईमेल: aisectpublications@aisect.org

